बिहार शिक्षा परियोजना,

पश्चिम चम्पारण, बेतिया

कार्य योजना

(वर्ष 1994-95)

बिहार शिक्षा परियोजना
पश्चिम चम्पारण
बेतिया

कार्य— योजना
वर्ष- 1994-95

NIEPA DC
D08265

LIBRARY & DOCUMENTATION UNIT
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-8265
Date 05-10-94

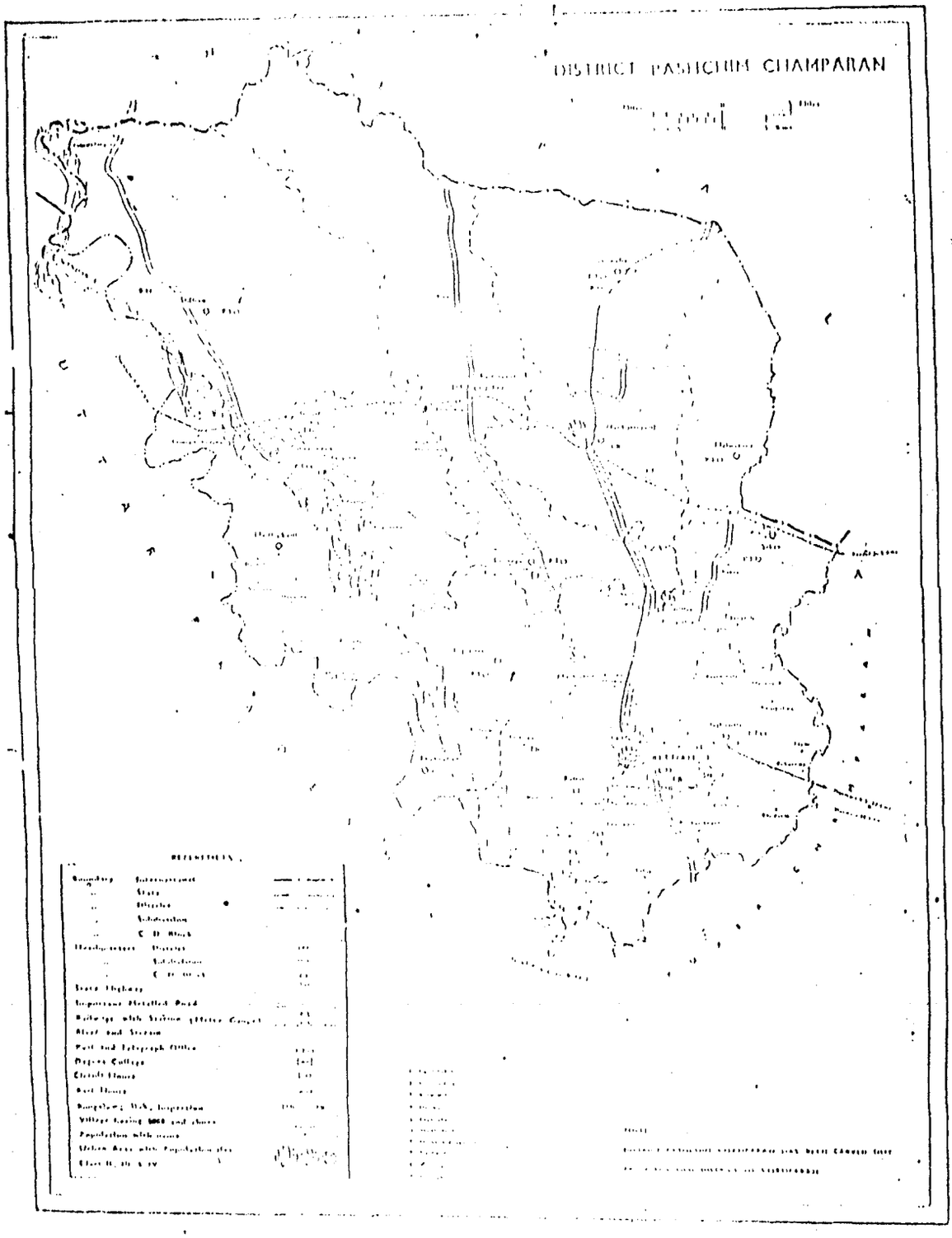
DISTRICT PASHCHIM CHAMPARAN

अनुक्रमणिका

क्रमांक		विषय	पृष्ठ संख्या
1.		पश्चिम चम्पारण – एक परिचय-	1- 4
2.		बिहार शिक्षा परियोजना, प0 चम्पारण के प्रयास, सफलताएँ एवं असफलताएँ	5-13
3.		सन् 1994-95 ई0 की कार्य योजना-	
	3.1-	प्राथमिक औपचारिक शिक्षा	14-58
	3.2-	प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा	59-80
	3.3-	प्रशिक्षण-	81-101
	3.4-	महिला समाख्या-	102-118
	3.5-	शिक्षा, संस्कृति और संचार	119-121
4.		परियोजना परिव्यय तथा निर्माण-	122-124
5.		TENTATIVE BUDGET ESTIMATE FOR THE YEAR - 1994-95	125-136
6.		भविष्य की योजना-	137-140

1. पश्चिम चम्पारण

-- एक परिचय

कार्य- योजना

बिहार शिक्षा परियोजना , पo चम्पारण , बेतिया

वर्ष-1994-95

पश्चिम चम्पारण -- एक परिचय

1•1 बिहार के उत्तर पश्चिम में बसा हुआ एक जिला पश्चिम चम्पारण है । इसके उत्तर में हिमालय की पहाड़ी श्रृंखलाएँ तथा नेपाल राज्य है । दक्षिण में गंडक नदी बहती है और उसके सटे हुए उत्तर प्रदेश के गोरखपुर , बलिया आदि जिले हैं । पूरब में पूर्वी चम्पारण तथा पश्चिम और दक्षिण के हिस्से में सारण एवं गोपाल गंज जिला स्थित हैं । सन् 1972 में पूर्व के चम्पारण जिले से पश्चिम चम्पारण नया जिला बना है । पश्चिम चम्पारण जिले में तीन अनुमण्डल हैं -1• बेतिया 2•बगहा 3• नरकटियागंज अनुमण्डल । इस जिले में कुल 16 प्रखण्ड हैं ।

1•2• पश्चिम चम्पारण की प्राकृतिक बनावट विशिष्ट है । इसका उत्तरी हिस्सा हिमालय की पहाड़ी श्रृंखला से निर्मित है । शेष भाग अनेक पहाड़ी नदी से लायी गई मिट्टी से बना है । इस प्रकार चम्पारण की भूमि विविधताओं से युक्त है । जंगल से कीमती लकड़ियाँ मिलती हैं और शस्य -श्यामला भूमि में धान , गेहूँ , रब्बी , गन्ना आदि की खेती होती है ।

1•3• पश्चिम चम्पारण एक ऐतिहासिक जिला भी है । इसका संबंध बुद्ध कालीन राजाओं और भिक्षुओं से रहा है चन्द्रगुप्त मौर्य की जन्मभूमि पिप्पली कानन इसी क्षेत्र में है । साक्ष्य के लिए नन्दन गढ़ से वानकी गढ़ तक के सैकड़ों टीले मौजूद हैं । लौरिया रढ़िया , रामपुरवा , में भव्य अशोक स्तंभ हैं ।

1•4• चम्पारण का विवरण वैदिक साहित्य एवं अन्य प्राचीन ग्रंथों में आया है जिसमें वाराह पुरान , वामन पुरान , विष्णु पुरान , महाभारत , देवी भागवत शक्ति संगम तंत्र , मिथिला महात्म , बौद्ध तथा जैन साहित्य आदि प्रमुख हैं ।

बगहा-2 प्रखण्ड में वाल्मीकिनगर के समीप वालमीकि आश्रम है जहाँ सीता ने वनवास का दिन बिताया था तथा लव-कुश का पालन -पोषण हुआ था ।

1•5• पश्चिम चम्पारण की प्राकृतिक बनावट सब तरह से अनुकूल है । परन्तु शिक्षा

के प्रचार , प्रसार एवं विकास के सतत प्रयासों के बावजूद आकड़े निराशा करने वाले हैं । आर्थिक पिछड़ापन व्याप्त है । चन्द लोगों के हाथों में जमीनसिमट गयी है और बहुसंख्यक मजदूरी और चाकरी के लिए विवश हैं । बेरोजगारी , शोषण , उत्पीड़न , अंधविश्वास , कुरीतियाँ एवं रिवाजों , भूखमरी , रोग , धोखाधड़ी, ठगी आदि नाना प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों के बीच जीने के बाध्य हैं । लोग इतने भोले हैं कि आसानी से इन्हें स्वार्थ साधना के लिए स्वार्थी तत्व इनका इस्तेमाल कर रहा है ।

1.6. वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार प0 चम्पारण जिले के आकड़े नीचे प्रस्तुत है । ये आँकड़े वस्तुस्थिति का एक साफ चित्र प्रस्तुत करते हैं -

1. जनसंख्या :-

(क) जाति:-

अनुसूचित जाति -	3,23,859	14 प्रतिशत
अनुसूचित जन जाति-	30,374	1.3प्रतिशत
अन्य -	19,76,377	84.7 प्रतिशत
कुल -	23,30,610	

(ख) साक्षरता-निरक्षरता

	पुरुष	महिला	योग
साक्षर-	4,03,190 (32%)	1,30,846, (12%)	5,34,036 (23%)
निरक्षर-	8,37,326 (68%)	9,59,290, (88%)	17,96,574 (77%)
कुल —	12,40,516 (53%)	10,90,094 (47%)	23,30,610

(ग) 15-35 वय वर्ग में साक्षरता -निरक्षरता

साक्षर-	1,24,989 (32.5%)	40,562 (12%)	1,65,551 (23%)
निरक्षरता -	2,59,571 (67.5%)	297,367 (88%)	5,56,936 (77%)
कुल-	3,84,560	337929	7,22,489

{च} 6-14 वय वर्ग के बच्चों की स्थिति :-

{1} कुल-	{क} शैक्षिक सर्वेक्षण के अनुसार -	5,35,274
	{ख} प्रतिशत वितरण एवं जनसंख्या वृद्धि दर के अनुसार प्रोजेक्टेड आँकड़ा-	4,75,201
{2}	दिसम्बर, 93 तक विद्यालयों में नामांकित-	3,09,644
{3}	93 में नामांकित -	71,852
{4}	शेष जो विद्यालय में नामांकित नहीं है-	1,65,557

परिषद पटना द्वारा निर्गत आँकड़ों तथा प्रतिशत वितरण के अनुसार वर्ष 94 में 6-14 वय के बालक/बालिकाओं का प्रोजेक्टेड आँकड़ा 4,75,201 {2,53,114 + 2,22,087} होगा । वर्तमान में नामांकित छात्र/छात्राएँ 309644 हैं । शैक्षिक सर्वेक्षण का प्रोजेक्ट आँकड़ा 5,35,974 को उत्प्रसारित समक्ष जाँच के अधीन है, इसे नई बाल पंजी से जाँच कर ही सही समझा जाएगा।

94 में 6-14 वय के बालक/ बालिकाओं की संख्या 475201 को ही प्रामाणिक माना जाए तो यह जिले की कुल जनसंख्या का करीब 19% होता है। 3,09,644 नामांकित छात्र/छात्राएँ कुल बालक/बालिकाओं का 65.16 प्रतिशत होता है जो पूर्व की जनसंख्या {6-14 वय} की तुलना में 8.16 प्रतिशत हैं अधिक हैं । यह आकस्मिक वृद्धि अकल्पनीय होगी । साथ ही अनौपचारिक केन्द्रों का वितरण नामांकित छात्रों तथा कुल जनसंख्या के 6-14 वय के प्रतिशत को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करना होगा ।

2. विद्यालयों की संख्या:-

1. प्राथमिक विद्यालय -	1,339
2. मध्य विद्यालय-	231
3. सहायता प्राप्त मध्य विद्यालय-	9
4. बुनियादी विद्यालय -	43
5. उच्च विद्यालय -	69
कुल -	1691

3. शिक्षकों की संख्या :-

		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
प्राथमिक विद्यालय एवं मध्य विद्यालय	-	4,701	201	4902
उच्च विद्यालय	---------	740	60	808
	कुल -	5,441	263	5704

पुरुष- 4963 (87%)

महिला - 741 (13%)

-----IIII-----

2. बिहार शिक्षा परियोजना ,पश्चिम चम्पारण

के

प्रयास,सफलतायें एवं असफलतायें

2.1. लक्ष्य ।

2.2. सन् 1993-94 की गतिविधियाँ

(प्रभाग के अनुसार)

2- बिहार शिक्षा परियोजना, पश्चिम चम्पारण के प्रयास, सफलताएँ और विफलताएँ

2.1. लक्ष्य

बिहार शिक्षा परियोजनान्तर्गत पश्चिम चम्पारण जिले में लक्ष्य है-

2.1.1 (क) 6-14 आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा सुलभ कराना ।

(ख) 15-35 आयु वर्ग के लोगों में निरक्षरता का प्रतिशत बहुत ज्यादा है, जिसे इस परियोजना के माध्यम से कम से कम 80 प्रतिशत लोगों को साक्षर बनाने का उद्देश्य सन्निहित किया गया है ।

(ग) ऐसी मानसिकता बनाना जिससे शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं को बराबरी का दर्जा एवं कार्य के समान अवसर प्राप्त हो ।

(घ) समाज के सभी उपेक्षित वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति के लोगों का कार्यात्मक साक्षरता का बोध कराते हुए उनके लिए भी समान एवं बराबरी का दर्जा प्रदान करने के लिए इस परियोजना में उनकी महत्ता स्वीकार की गयी है ।

(च) रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर विशेष प्रबल देना- ताकि पेशागत कुशलता एवं लोगों के रहन -सहन के स्तर में भी मूलभूत परिवर्तन हो सके ।

(छ) प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले या अनौपचारिक केन्द्रों पर ज्ञानार्जन करने वाले बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी बातों की परिचर्चा संगोष्ठियों के माध्यम से कराकर पर्याप्त दवा की व्यवस्था सुलभ कराना ।

(ज) समाज के छोटे किसानों की खेती संबंधी वैज्ञानिक बातों एवं तकनीक की जानकारी ग्राम स्तर पर संगोष्ठियों के माध्यम से कराना भी परियोजना में सन्निहित है ।

(झ) विज्ञान तथा पर्यावरण विषयों से जुड़ी शैक्षिक गतिविधियों पर संगोष्ठियों का आयोजन एवं सामाजिक न्याय की भावना को सबके मन में बैठाना ।

(ट) प्राथमिक शिक्षा तथा वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा को नवीन भारतीय संस्कृति का आवश्यक केन्द्र बनाना ।

2.1.2. लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जिले में परियोजना के कार्यारंभ काल में ही निम्नलिखित रणनीतियाँ निर्धारित की गयी -

(क) प्राथमिक शिक्षा के लिए विद्यालय से बेहतर साधन और कोई नहीं हैं । शिक्षक को धुरी माना गया है । अतः शिक्षकों को इस गुरूतर भार-सहन के योग्य बनाने हेतु स्तरीय प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए ।

(ख) शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु नवाचार तथा न्यूनतम अधिगम स्तर की संप्राप्ति सुनिश्चित करनीहोगी ।

(ग) शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन लाने का औजार, असमानता दूर करने का साधन, और राष्ट्रीय विकास की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रभावी कार्यक्रम अपनाये जायेंगे ।

(घ) कार्यक्रम की सफलता के लिए शिक्षकों एवं अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशकों की योग्यता, कुशलता एवं महत्ता को स्वीकारते हुए सभी स्तर पर उनकी भागीदारी को सुनिश्चित किया जाएगा ।

(च) महिलाओं को सामाजिक न्याय की संप्राप्ति हेतु ऐसे प्रयास, अवसर एवं स्थितियाँ पैदा की जायेंगी, जिनसे उनमें नयी चेतना आवे और अपनी समस्याओं के प्रति वे जागरूक बने ।

(छ) समाज के वंचित वर्ग की भी समस्याएँ अनेक हैं । उन्हें भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ने तथा उनके स्तरोन्नयन के लिए अवसर प्राप्त कराये जायेंगे ।

(ज) स्वयंसेवी संस्थाएँ जो जिले में शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही हैं, उनसे सहयोग लिए जायेंगे ।

(झ) सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, पर्यावरण संरक्षण एवं बाल विकास पर भी ध्यान दिया जाएगा ।

(ट) सभी का सहयोग लेकर शिक्षा के माध्यम से साम्प्रदायिक सामंजस्य और राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बढ़ाने के प्रयास किये जायेंगे ।

2.1.3. बिहार शिक्षा परियोजना 1991 से जिले में कार्यरत् है । प्रथम दो वर्ष जिले की शैक्षिक समस्याओं और ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों को जानने में मुख्य रूप से व्यतीत हुआ है । उपयुक्त वातावरण तैयार किए गए हैं । लोगों को उन्मुख करने तथा लोक भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु शिक्षक, शिक्षाविद एवं सृजनात्मक विचार वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी, भ्रमण, समाचार-पत्रों आदि की सहायता ली गयी, जिसका नतीजा उत्साह वर्द्धक था और उनके बल पर 1993-94 की कार्य-योजना में परियोजना के लक्ष्यों की संप्राप्ति हेतु अनेक कार्यक्रम लिए गये । जहाँ 91-92 का वर्ष हमारा लाँचिंग वर्ष माना जा सकता है वहीं 93-94 वर्ष टेक-ऑफ वर्ष माना जा सकता है । बहुत से क्षेत्र में हमें आशा से अधिक सफलताएँ मिली हैं जो आगे के लिए सम्बल बनेंगी । कहीं-कहीं हमें वांछित सफलताएँ नहीं मिली हैं जिसकी जिम्मेवारी हम स्वीकारते हैं । 1993-94 के कार्यक्रम और फलाफल की संक्षिप्त झाँकी आगे प्रस्तुत है ।

2.2. सन् 1993-94 की गतिविधियाँ

Details about Targets / Enrollment / Achievement / Access / MLL

2.2.1. **प्राथमिक औपचारिक शिक्षा:-** प्राथमिक औपचारिक शिक्षा पूर्व से ही सुसंगठित क्षेत्र है । सबको शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु अन्ततोगत्वा इसी क्षेत्र को प्रभावी बनाना हमारा सर्वप्रमुख लक्ष्य है । इस निमित्त हम इसकी दुर्बलताओं और सबलताओं के प्रति जागरूक हैं । अभी हम सर्वाधिक संवेदनशील समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर वांछित दिशा प्रदान करने हेतु प्रयत्नशील हैं । इस परिप्रेक्ष्य में भवनहीन विद्यालयों को भवन मुहैया कराये जा रहें हैं, और क्षतिग्रस्त विद्यालय की मरम्मती की व्यवस्था की गयी है । शिक्षकविहीन अथवा आवश्यकता से बहुत कम शिक्षकों से युक्त विद्यालयों को शिक्षक प्रदान किए जा रहे हैं. शिक्षकों को स्तरीय शिक्षण विधियों को अपनाने तथा न्यूनतम अधिगम स्तर [illegible] किया जा रहा है और कार्यक्रम की सफलता तथा असफलताओं की जाँच हेतु न्यूनतम अधिगम स्तर में आयी हुई दक्षताओं पर आधारित मूल्यांकन कार्यक्रम लागू किए गए हैं, विद्यालय के आकर्षण हेतु नवाचार सामग्रियाँ, पाठ्यपुस्तकें, पुस्तकालयहेतु पुस्तकें एवं उपस्कर, क्रीड़ा सामग्रियाँ विद्यालयों को उपलब्ध करायी जा रही है ।

2.2.1.(Contd.)

साथ में पेयजल शौचालय ,सामाजिक वानिकी आदि की सुविधाएँ प्रदान की गयी है ।

गुणवत्ता में अभिवृद्धि हेतु प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षा विभाग के पदाधिकारियो के भी उन्मुखीकरण प्रशिक्षण आयोजित किए गए हैं और दक्षता आधारित मूल्यांकन पत्र तैयार करने की प्रक्रिया के प्रशिक्षण भी शिक्षकों की किए गए हैं । ग्राम शिक्षा समितियाँ गठित की गयी है और उनके सदस्यों का भी उन्मुखीकरण प्रशिक्षण आयोजित हुए हैं । नामांकन अभियान एवं एम. एल. एल. के लिए फिड बैक और फौलो-अप हेतु सम्मेलन और गुरू- गोष्ठियाँ आयोजित की गयी हैं । बालकों के स्वास्थ्य परीक्षण कराये गए हैं । इस प्रकार प्राथमिक शालाओं के स्तरोन्नयन एवं आकर्षण के लिए हम सतत प्रयत्नशील एवं आशान्वित है ।

चालू वर्ष में हम निम्नांकित कार्यों को पूरा करने हेतु कृप संकल्प हैं और मार्च,94 तक निश्चित रूप से पूरा कर लिए जायेंगे। ये उपलब्धियाँ हमारे लिए आगामी वर्ष के लिए दिशा निर्देशक सिद्ध होगी ।

1- शिक्षकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण:- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के 11 दिवसीय प्रशिक्षण एवं शिक्षकों के 10 एवं 11 दिवसीय प्रशिक्षण का हमारा लक्ष्य है । प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय,कुमारबाग,पश्चिम चम्पारण का जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान के लिए अधिग्रहण किया गया है और उसके प्रयोगशाला,पुस्तकालय छात्रावास एवं परिसर को एक शैक्षिक स्वरूप प्रदान किया गया है । यहाँ पर लगभग 200 प्रतिभागियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था संभव हैं । लेकिन संस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए बहुत कुछ करना अत्यावश्यक है ।

2- न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति के प्रयास:- जिले में नौतन ,चनपटिया और बगहा-2 प्रखण्डों का विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में चयनित किया गया है। न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु नौतन के 33 चनपटिया के 33 और बगहा -2 के 34 विद्यालयों पर प्रथम चरण में हमारा ध्यान केन्द्रित है । मार्च,94 तक इन विद्यालयों के सभी शिक्षकों को 10- दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण ,11- दिवसीय विषय आधारित प्रशिक्षण और सतत एवं दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रविधियों का प्रशिक्षण देकर हम शिक्षण कार्य को न्यूनतम अधिगम स्तर पर आधारित बनाने जा रहे हैं ।

3- विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण:- इस जिले में 1622 प्राथमिक एवं मध्य विद्यालय हैं । इन विद्यालयों में बालक/बालिकाओं प्रवेश पाने के लिए प्रोत्साहित करने से लेकर

विधालय में बने रहने तथा जीवन पर रोक लगाने के लिए एक तरफ हम प्रयास कर रहे है तो दूसरी तरफ विधालयों के सौन्दर्यीकरण तथा शैक्षिक और शिक्षकेत्तर सुविधाओं को उपलब्ध कराने हेतु वचन बद्धता के प्रति भी हमारे प्रयत्न सकारात्मक दिशा पर है । 1992-93 में 64 भवनहीन विधालयों का निर्माण हुआ हैऔर 1993-94 में हम 100 भवनहीन विधालयों को भवन उपलब्ध कराने जा रहे है । 320 विधालयों में नवाचार सामाग्रियों, क्रीड़ा सामग्रियों और 53 हजार बालिकाओं एवं 33 हजार अनुसूचित जाति/जनजातियों के बालकों को पठन-पाठन सामग्रियाँ उपलब्ध करायेंगे । 450 विधालयों में विधालय पुस्तकालय स्थापित किए जायेंगे । 192 क्षतिग्रस्त विधालयों की मरम्मती करायी जायेगी । 600 विधालयों में चापाकल और 100 विधालयों में शौचालय और 450 विधालयों में अत्यंत आवश्यक उपस्कर उपलब्ध कराये जोयेंगे । विधालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत विधालयों में प्रथम उपचार पेटिका दी जायेगी और विधार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए शिविर आयोजित करके अबतक 2503 विधार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण कराये गये हैं और 10,000 विधार्थियों के परीक्षण कराने का लक्ष्य है। प्रत्येक विधालय को एक-एक घंटी भी दी जायेगी ।

शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रत्येक प्रखण्ड के एक-एक सक्रिय एवं कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक को समारोह करके पुरस्कृत किया गया है ।

2.2.2 - प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा :-

जिले के 2,44,612 बच्चों में से 25,000 को 1000 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर शिक्षा की व्यवस्था हम मार्च,94 तक करने जा रहे हैं । अबतक 486 अनौप0 शिक्षा केन्द्रों पर 12,150 शिक्षार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की गुणवत्ता में सुधार के लिए हम सचेष्ट है । सतत् कार्यक्रमों के आयोजन के द्वारा अनुदेशकों को 12+10+8 दिवसीय प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं । प्रत्येक 10 केन्द्रों पर एक पर्यवेक्षक को प्रशिक्षणोपरान्त दायित्व सौंपा जायेगा । विभिन्न प्रशिक्षणों के लिए एवं समस्त अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए जिला संसाधन एकक का भरपुर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

2.2.3. प्रशिक्षण

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, कुमारबाग, पश्चिम चम्पारण का अधिग्रहण कर लिया गया है और उसे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के रूप में व्यवस्थित करने हेतु सुदृढ़ीकरण एवं आवश्यक परिवर्त्तन तथा परिवर्द्धन के कार्य कुछ हुए हैं और कुछ शेष हैं । अभी इसके प्रयोगशाला, पुस्तकालय, छात्रावास एवं परिसर को डायट के अनुरूप बनाया गया है । शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के अन्तर्गत 399 शिक्षकों का 10 दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण एवं 913 शिक्षकों को 10 और 11 दिवसीय विषय आधारित प्रशिक्षण , 486 अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशकों का 12 दिवसीय प्रशिक्षण, 100 प्रधानाध्यापकों का 5 दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण, महिला समाख्या से सम्बद्ध सहयोगिनियों एवं सखियों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त प्रत्येक माह में दो दिवसीय रिफ्लेक्शन बैठक और महिला सम्मेलन हेतु एक दिवसीय प्रदर्शनी आदि आयोजित किए जा चुके हैं और आगामी महीनों में निर्धारित लक्ष्य की सम्प्राप्ति हम कर लेंगे । ऐसी आशा है ।

2.2.4. महिला समाख्या

जिले सघन कार्य क्षेत्र हेतु चयनित चनपटिया एवं मैनाटांड प्रखण्डों में महिला समाख्या सराहनीय कार्यों में सक्रिय है । राज्य स्तर पर भी महिला सम्मेलन में इस प्रभाग की उपलब्धियों की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है ।

एक साधन सेवी, दो सहायक साधन सेवी, 16 सहयोगिनियाँ, सखी और 26 सहेलियाँ सम्प्रति और जगजगी केन्द्र संचालन में लगी हुई हैं । उम्मीद नामक मासिक पत्रिका जनवरी '93 माह से छप रही है और वातावरण निर्माण की दिशा में श्रेष्ठ भूमिका निभा रही है । इस प्रभाग की साधन सेविकाएँ और सहयोगिनियाँ राज्य के अन्दर तथा बाहर [illegible] विभिन्न प्रशिक्षण [illegible] तथा भ्रमण के माध्यम से निपुणता प्राप्त कर रही है । दूसरे राज्यों जैसे- राजस्थान की साधन सेविकाओं को अनुभव एवं कार्यशैली का लाभ इस जिले के महिला समाख्या प्रभाग को प्राप्त हुआ है ।

2.2.5 वातावरण निर्माण:-

बिहार शिक्षा परियोजना ,पश्चिम चम्पारण बेतिया के सौजन्य से प्रकाशित "नवजीवन" नामक मासिक पत्रिका अपने क्रिया कलापों से लोगों को एक ओर अवगत कराने का कार्य कर रही है,तो दूसरी ओर विद्वान लेखकों के शैक्षिक एवं सारगर्भित लेख और कविता शिक्षकों का मार्गदर्शन कर रही हैं । समय-समय पर समाचार पत्रों के माध्यम से भी कार्यक्रम की झांकियाँ प्रकाशित करायी जाती है जिससे जनता को इसकी गतिविधि की जानकारी निरंतर दी जा रही है । गतवर्ष की तरह इस वर्ष भी बेतिया दशहरा फैन्सी मेला में स्टॉल लगाकर कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया जिसे लोगों ने सराहा और रुचि दिखायी । ।

---- x-----

3. सन् 1994-95 ई० की कार्य योजना

3. 1- प्राथमिक औपचारिक शिक्षा

3. 2- प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा

3. 3- प्रशिक्षण

3. 4- महिला समाख्या

3. 5- शिक्षा, संस्कृति और संचार ।

3.1 प्राथमिक औपचारिक शिक्षा

3.1.1 भौतिक सर्वेक्षण - किसी कार्य की सफलता के लिए समस्या उसका विस्तार उपलब्ध जन-बल एवं साधनों की जानकारी आवश्यक है और यह तभी संभव है, जब हमारे पास भौतिक सर्वेक्षण का प्रतिवेदन उपलब्ध हो। सर्वे प्रतिवेदन अभी हमारे पास उपलब्ध नहीं हैं। स्पष्ट चित्र के दर्शन हेतु इस वर्ष भौतिक सर्वेक्षण कराया जाएगा। चयनित प्रखण्ड के सीमित क्षेत्र में प्रयोग के लिए इसकी अनिवार्यता से किसी को इन्कार नहीं हो सकता, क्योंकि भविष्य में जब कभी परियोजना की सफलताओं को मूल्यांकन करने बैठेंगें तो यह मील का पत्थर सिद्ध होगा और बीच-बीच में गतिविधियों को सही दिशा देने का औजार बन सकेगा। हमारे सामने हमारा लक्ष्य हमेशा वर्त्तमान रहेगा। भौतिक सर्वेक्षण के तहत ग्राम सर्वेक्षण तथा विद्यालय सर्वेक्षण का द्वितीय चरण का कार्य विद्यालय के शिक्षकों के माध्यम से कराया जाना है तथा पूर्व की भाँति ही स्वयंसेवी संस्थाओं/बेरोजगार युवकों से सैम्पल के आधार पर प्रतियाँ जाँच सुनिश्चित की जाएगी।

ग्राम शिक्षा समितियों का सुदृढ़ीकरण :- चूँकि बिहार शिक्षा परियोजना के कार्यक्रमों का आधार ही लोक भागीदारी माना गया है क्योंकि उसी से "अपनेपन" की भावना का विकास होगा। तथा ग्राम्य भागीदारी की शैक्षिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु सुनिश्चित किया जा सकेगा तथा शिक्षा संस्था तथा विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव जोड़ा जा सकेगा। जिससे नामांकन रिटेंशन, आपूर्ति सामग्रियों का सदुपयोग, भवन मरम्मत आदि सुनिश्चित किया जा सकेगा। इस वर्ष 100 ग्राम शिक्षा समिति के कार्यकारियों का प्रशिक्षण लक्ष्य था 94-95 में यह लक्ष्य 500 रखा जाएगा। समितियों के नये धारण के अनुरूप समितियों का गठन कर उनकी बैठकें सुनिश्चित की जाय।

3.1 (2) विद्यालयों में नामांकन :- विद्यालय के संपोषित क्षेत्र के प्रत्येक परिवार के बच्चों का नामांकन और नामांकन के पश्चात् नियमित उपस्थिति विद्यालय परिवार की ओर से वांछित होगा। इसकी समीक्षा विद्यालय परिवार एवं प्रशासनिक सेवा के द्वारा समय-समय पर अनिवार्य रूप से की जाएगी। भातृ-प्रतिभातृ के नामांकन के लिए प्रत्येक वर्ष के जनवरी माह में छात्र, शिक्षक अभिभावक एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति एवं सहयोग से "अक्षरोत्सव" का आयोजन किया जाएगा। प्रत्येक प्रखण्ड में बाल मेलों तथा स्थगन एवं छीजन पर चर्चा हेतु कार्यशालाएँ आयोजित की जाएगी।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा पाने वाले समाज के वंचित वर्ग जैसे अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के छात्र/छात्राओं को विद्यालय में नियमितता के लिए पठन-पाठन सामग्रियों की आपूर्ति करनी है। समाज में महिलाओं एवं विकलांगों की स्थिति बदतर है। उन्हें शिक्षा की ओर उन्मुख कराने के लिए अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के समान ही अन्य सारी सुविधाएँ प्रदान की जाएगी।

3.1 (3) विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण (निर्माण एवं मरम्मति) :-

3.1§3§ विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण§निर्माण एवं मरम्मति§:- पश्चिम चम्पारण में 214 भवनहीन प्राथमिक विद्यालय थे । जिसमें मार्च"94 तक 161 विद्यालयों का निर्माण होगा और शेष 53 का निर्माण 94-95 में कराया जायेगा । 192 विद्यालयों की मरम्मति मार्च"94 तक करायी जायेगी और 94-95 में 200 विद्यालयों की मरम्मति अधिकतम 25 हजार रुपये प्रति विद्यालय की दर से व्यय करते हुए करायी जायेगी । यदि राशि बचेगी तो उसका उपयोग चयनित प्रखण्डों केऔर विद्यालयों की मरम्मति पर किया जायगा ।

भवन निर्माण तथा मरम्मति के अतिरिक्त विद्यालयों में "इनोवेटिभ" सामग्रियों के प्रयोग के कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 में 500 विद्यालयों को लिया जायेगा । इस प्रकार जिले के लगभग आधे विद्यालयों में ये सामग्रियाँ प्राप्त हो जायेगी ।

3.1§4§ विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं का विस्तार :- विद्यालयों की मूलभूत आवश्यकताएँ मुख्य रूप से शौचालय एवं पेयजल की है । अतः जिले के 600 प्राथमिक विद्यालयों में पेयजल की व्यवस्था की जायेगी । बगहा-2 से 50 शेष सभी प्रखण्डों में बराबर संख्या में पेयजल की एवं 100 मध्य विद्यालयों में शौचालयों की समुचित व्यवस्था होगी । बालिका विद्यालयों को इसमें प्राथमिकता दी जाएगी । इससे खास करके छात्राएँ विद्यालय की ओर आकर्षित होगी ।

3.1§5§ पाठ्य पुस्तकों की आपूर्त्ति :- 93-94 में गत् वर्ष की तरह सभी अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति छात्र-छात्राओं को पाठ्य पुस्तकों के अलावा शैक्षिक किट आपूर्त्ति अन्तिम चरण में है तथा सभी छात्राओं को भी पाठ्य पुस्तक तथा शैक्षिक किट निःशुल्क दी जानी है वर्ष 94-95 में इस जिले में लगभग 65,000 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्र हैं । उपर अवलोकित संख्या के अनुसार सभी को पाठ्य पुस्तकों की आपूर्त्ति की जायेगी । साथ में 1,00,000 कुल छात्राओं को भी यह सुविधा दी जायेगी ।

3.1§6§ खेल-कूद सामग्रियों का विवरण :- जिले के चयनित 500 प्राथमिक विद्यालयों में खेल-कूद की सामग्रियों की आपूर्त्ति की जाएगी । ताकि विद्यालय आकर्षण के केन्द्र बने । पाठ्य पुस्तकों में खेल-कूद की महत्ता सर्वोपरि है । अतः बिहार शिक्षा परियोजना में इस पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

3.1(7) उपस्कर :- जिले के चयनित 450 प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या के अनुसार उपस्करों की आपूर्त्ति की जायेगी । साथ ही जिले के कुल 1000 प्राथमिक विद्यालय को एक-एक ब्लैक बोर्ड की आपूर्त्ति करने की योजना है ।

3.1(8):- पुस्तकालय :- पुस्तकालय जनता का महाविद्यालय है, जहाँ बिना किसी लिंग जाति और वर्ग का भेदभाव किए सर्वसाधारण को निःशुल्क पुस्तकें पढ़ने को उपलब्ध करवायी जाती है । मानव सभ्यता के संचित ज्ञानकोष का सार्वजनिकरण पुस्तककालय का मुख्य उद्देश्य होता है । अतः 450 चयनित विद्यालयों में पुस्तकें रखने के लिए आलमारी एवं पुस्तकों की आपूर्त्ति की जायेगी । पुस्तकों का चयन करते समय चम्पारण से जुड़ी पुस्तकों को प्राथमिकता दी जायेगी ताकि यहाँ के भौगोलिक ,ऐतिहासिक,राजनैतिक,धार्मिक,सामाजिक,साहित्यक एवं आर्थिक बातों की जानकारी छात्रों को मिल सके ।

3.1(9) विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम एवं विद्यालय आधारित क्रियाशीलनों के अन्तर्गत 450 विद्यालयों में प्राथमिक उपचार पेटी आपूर्त्ति करने तथा विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जाँच कराने की योजना है ।

3.1(10) :- बिहार शिक्षा परियोजना के तहत् प्रति प्रखण्ड एक-एक कुल 16 शिक्षकों के प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु विभिन्न आयामों एवं विद्यालय के उन्नयन में प्रभावकारी भूमिका निभाने के लिए पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जायेगा । साथ ही जिले के सर्वोत्तम विद्यालय तथा सर्वोत्तम प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी को भी पुरस्कृत किया जाएगा ।

उपरोक्त कार्यक्रम होने पर निम्नलिखित परिणाम की आशा है ।

1. नामांकन में वृद्धि ।
2. विद्यालयों के भौतिक वातावरण में सुधार ।
3. विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में सुधार ।
4. बच्चों के भौतिक वातावरण में सुधार जिससे ड्रौपआउट रुकेगा एवं रिटेंशन बढ़ेगा ।
5. बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार जिससे दूरगामी लाभ मिलेगा ।
6. शिक्षकों,छात्रों एवं अभिभावकों का केन्द्र-बिन्दु विद्यालय परिसर बनेगा ।
7. शिक्षकों एवं विद्यालयों की गौरवपूर्ण परम्परा पुनः स्थापित होगी ।

3.1§11§ :- प्राथमिक औपचारिक शिक्षा की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए सूक्ष्म स्तरीय योजना तैयार करने विद्यालय मानचित्रण न्यूनतम अधिगम स्तर पर कार्यशालाएँ आयोजित की जायेगी । शिक्षा सम्मेलनों के माध्यम से जन समुदाय एवं शिक्षक संगठनों की सहभागिता अर्जित की जाएगी । विज्ञान एवं गणित शिक्षण विधियों को परिष्कृत करने हेतु शिक्षकों के उन्मुखीकरण चर्चाएँ आयोजित की जायेगी ।

3.1§12§ : बुनियादी विद्यालयों का जीर्णोद्धार :- पश्चिम चम्पारण जिला कभी बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी था । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं महान् शिक्षा विद् डा0 जाकिर हुसैन के द्वारा प्रतिपादित आजाद भारत के लिए " नयी तालीम" को इस जिले में राज्य के महान् स्वतंत्रता सेनानी पं0 प्रजापति मिश्र एवं शिक्षा विद् पं0 रामशरण उपाध्याय के सफल प्रयास से चनपटिया प्रखण्ड में वृन्दावन सघन क्षेत्र के अन्तर्गत एक साथ 29 राजकीय बुनियादी विद्यालयों की स्थापना हुई । देश-विदेश से आये लोगों ने इस अभिनव प्रयोग को सराहा और अपने साथ ले गए । लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि

भारत के आजाद हुए कुछ दिन भी नहीं हुआ कि कार्यान्वयन की खामियों, लोगों की उदासीनता, जन-समुदाय के असहयोग आदि दुर्गुणों के कारण किशोरावस्था में ही इस शिक्षा को मृत घोषित कर दिया गयी और इन विद्यालयों में परम्परागत शिक्षा शिक्षा शुरू हो गयी । फिर शुरू हो गयी इन संस्थाओं की अवनति । बुनियादी विचारधारा वाले कार्यकर्त्ताओं का अभाव हो गया । भवन ढहने लगे । सरकारी व्यवस्था शिथिल हो गयी । आज उसका कंकाल बच रहा है जिसका उपयोग करके हम बढ़ती हुई जनसंख्या को अच्छा विकल्प दे सकते हैं और महात्मा गाँधी और पं० प्रजापति मिश्र की आत्मा को सुखद शान्ति प्रदान कर सकते हैं । इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर बिहार शिक्षा परियोजना जिला कार्यालय एवं जिला साधन एकक के तत्वाधान में आयोजित एक कार्यशाला के माध्यम से वृन्दावन सघन क्षेत्र अन्तर्गत एवं उसके बाहर 43 (तैतालिस) बुनियादी विद्यालयों के भौतिक एवं शैक्षिक जीर्णोद्धार हेतु योजना (परिशिष्ट-6) तैयार की गयी है । अनुमोदनोपरान्त इस वर्ष से ही योजना के कार्यान्वयन हेतु अपेक्षित राशि का प्राक्कलन तैयार करने और प्रस्तावित बजट में प्रावधान करने का भार राज्य स्तरीय संगठन (एस०एल०ओ०) को अनुरोध किया जा रहा है ।

ENVIRONMENT CREATION TORCH.

विद्यालयीय स्तर

जनवरी, 94	फरवरी, 94	मार्च, 94
	बालमेला	प्रभात फेरियाँ
अक्षरोत्सव	नामांकन अभियान	वातावरण निर्माण

यथा- 8मार्च- महिला दिवस
5 जून- पर्यावरण दिवस
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
14 नवम्बर- बाल दिवस
5 सितम्बर,- शिक्षक दिवस
आदि ।

प्रखण्ड स्तरीय

अक्षरोत्सव	बाल मेला	कार्यशालाएँ
जनवरी	फरवरी	मार्च

महत्त्वपूर्ण दिवसों पर आयोजना

अनुमण्डल स्तरीय

बाल मेला	बाल प्रतियोगिताएँ	कार्यशालाएँ
बैठके		

6 जिला स्तरीय

बाल मेला, बाल प्रतियोगिताएँ
बैठके, कार्यशाला, महत्त्वपूर्ण
तिथियों का आयोजन

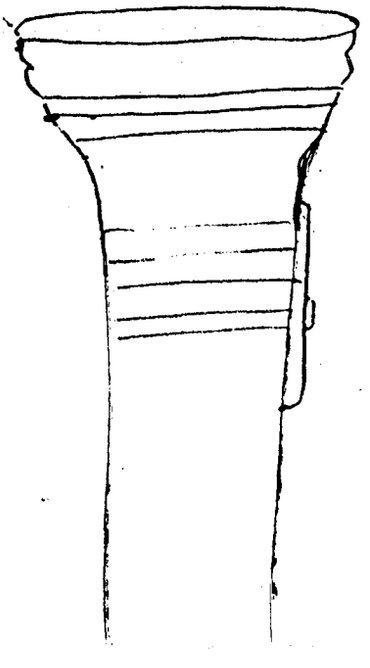

SPREAD UP OF SCHOOL ACCORDING TO NO. OF STUDENTS

STUDENTS	ELEMENTRY SCHOOL
LESS THAN 75	100
75 - 150	528
150 - 300	590
300 - 450	80
450 - 600	12
600 - 750	7
MORRE THAN - 750	5
	1322

SPREAD UP OF SCHOOLS ACCORDING TO STUDENT/ TEACHER RATIO

STUDENT/TEACHER RATIO	ELEMENTRY SCHOOL
LESS THAN 15	
15 - 30	33
30 - 45	165
45 - 60	245
60 - 75	264
75 - 90	165
90 - 105	106
105 - 120	66
MOE THAN - 120	240

PROJECTIONS OF CONSTRUCTION OF SCHOO[redacted]

EXISTING POSITION				PROJEC[redacted]		
BLDG. LESS SCHOOL	ONE ROOM SCHOOL	TWO ROOM SCHOOL	MORE THAN TWO ROOM SCHOOL	JAN'94-M[redacted]	[redacted]4 - 95	95 - 96
				A BUILDIN[redacted] LESS TO[redacted] BE CON-[redacted] STRUCTE[redacted]	[redacted] - B	A - B
					[redacted]00-200	28 - 200
150	593	430	163	25 [redacted]		

VILLAGE EDUCATION COMMI[redacted]

EXISTING POSITION VEC RE ORGANISED	VEC TRAINED	JAN'94 - MA[redacted]	[redacted]4 - 95	95 - 96
(A)	(B)	REORGN. (A) [redacted]	[redacted] - B	A - B
219	49	200 [redacted]	[redacted]43 - 500	- - 762

EXISTING FACILITIES		TOILET & WA[redacted]TIES [redacted]ON				
WATER	TOILET	MARCH'94		[redacted]5	95 - 96	
A	B	A	B [redacted]	[redacted]B	A	B
396	166	100	25 [redacted]	[redacted]500	626	600

23

-:महत्वपूर्ण दिवसों पर आयोजन:-

1.	26 जनवरी	गणतंत्र दिवस	§1§ शैक्षिक झाकियों का प्रदर्शन ।
2.	8 मार्च	महिला दिवस	§1§ बालिकाओं के नामांकन पर जोर । §2§ प्रखण्ड स्तरीय बालिका रैली ।
3.	5 जून	पर्यावरण दिवस	§1§ विद्यालयवार वृक्षारोपण कार्यक्रम । §2§ जिला स्तरीय पर्यावरण संरक्षण पर चित्रांकन/ वाद-विवाद प्रतियोगिता ॥
4.	15 अगस्त	स्वतंत्रता दिवस	3;3 शिक्षा को गुलामी से निजात पाने का आह्वान, विद्यालय स्तरीय प्रभात फेरियाँ ।
5.	5 सितम्बर	शिक्षक दिवस	§1§ विभिन्न प्रखण्डों के उत्कृष्ट शिक्षकों को पुरस्कार । §2§ उत्कृष्ट विद्यालयों के सभी शिक्षकों को पुरस्कार ।
6.	14 नवम्बर	बाल दिवस	§1§ विद्यालयीय चित्रांकन प्रतियोगिताएँ ।

------0------

प्रारम्भिक विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण

क्रमांक	विवरण	1993-94 में विद्यालयों की संख्या	1993-94 में राशि प्रति विद्यालय	1994-95 में विद्यालयों की संख्या	1994-95 में राशि प्रति विद्यालय	1995-96 विद्यालयों की संख्या	1995-96 राशि प्रति विद्यालय
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	पुस्तकालय स्थापना अलमारी के साथ	450	3,000.00	450	4,000.00	670	5,000.00
2.	ब्लैकबोर्ड आदि	450	3,000.00	450	4,000.00	670	5,000.00
3.	फर्नीचर आदि	450	10,000.00	450	12,000.00	670	14,000.00
4.	अध्यापक	450	5,000.00	450	10,000.00	670	12,000.00

शत्-प्रतिशत् नामांकन

1994 में 6-14 वर्ष के बालक-बालिकाओं की संख्या	दिसम्बर"93 तक विद्यालयों में नामांकित	केवल दिसम्बर"93 तक अनौपचारिक केन्द्रों में नामांकन	दिसम्बर"93 तक अनामांकित लड़के-लड़कियाँ	वर्ष 1993 में कुल नामांकन	1994 में दिसम्बर"94 में विद्यालयों में नामांकन लक्ष्य	दिसम्बर"94 तक अनौपचारिक केन्द्र में नामांकन का लक्ष्य 2000 केन्द्र	मार्च"1995 नामांकन
1	2	3	4	5	6	7	8
4,75,281	3,07,000	12,500	1,52,000 over-age/ under-age	64,000	75,000	37,500	शत्-प्रतिशत् नामांकन अपेक्षित।

परिशिष्ट - 1

बिहार शिक्षा परियोजना ,पश्चिम चम्पारण ।

प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु शैक्षिक कार्य योजना-

पश्चिम चम्पारण जिला बिहार शिक्षा परियोजना के प्रथम चरण में लिये गये जिलों में से एक है ।जाहिर है परियोजना के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस जिले का चयन इसकी पृष्ठभूमि - इसकी शैक्षिक ,सामाजिक भौगोलिक स्थितियों का आकलन कर के ही किया गया होगा । बिहार शिक्षा परियोजना के लक्ष्य एवं मूलभूत उद्देश्य-सर्वव्यापी उपलब्धि की प्राप्ति हेतु गुणवत्ता का पुट भी परमावश्यक है । हालांकि हमारे देश में शैक्षिक संसाधनों की संख्यात्मक अभिवृद्धि [Quantative growth] में एक बड़ा उछाल आया है । परन्तु गुणात्मक अभिवृद्धि सीमित ही है । यह भी सच है कि कम उपलब्धि वाले स्कूलों की संख्या अधिक है तथा अधिक उपलब्धि वाले स्कूलों की संख्या कम पर साथ ही इन उपलब्धियों में गुणवता का प्रतिशत कम है । इसी गुणवता या गुणात्मिक सुधार को लाने हेतु न्यूनतम अधिगम स्तर की परिकल्पना की गई है । यहाँ न्यूनतम शब्द क्षमता ,समानता,सार्वजनीकरण तथा सर्वव्यापीकरण का परिचायक है तथा अधिगम गुणवता का । स्कूलों में ऐसे बच्चे भी आते है जो घर से भूखे आते हैं ,अधनंगे आते हैं ,कई ऐसे आते है जो अपनी पीढ़ी के "प्रथम स्कूल जाने वाले व्यक्ति " "First school going man " होते हैं। वहीं ऐसे बच्चे भी आते हैं जो साधन सम्पन्न होते हैं तथा जिनके माता-पिता दोनों पढ़े-लिखे होते हैं । छात्रों के इतने बड़े फर्क के रहते पढ़ाने की तकनीक कैसी हो जो दोनों प्रकार के छात्रों के लिए लाभकारी हो-यही तकनीक हम न्यूनतम अधिगम स्तर से प्राप्त कर सकते है । पर जरूरी है, इसके लिए एक ऐसी व्यूह रचना [strategy] जो समान रूप से सफल तरीके से कार्यान्वित की जा सके ।

जिले की स्थिति , पृष्ठभूमि -

किसी भी कार्यात्मक व्यूह रचना या कार्य योजना के निर्माण से पहले यह जानना जरूरी है कि इसे जिस मैदान में जिस स्थान पर कार्यान्वित किया जाएगा , उसकी स्थिति कैसी है । हालांकि विस्तृत रूप से जिले की भौगोलिक , ऐतिहासिक , सामाजिक शैक्षिक स्थितियों का वर्णन समग्र कार्य योजना में किया जा चुका है । शैक्षिक स्थितियों का पुनर्आकलन यहाँ अपेक्षित है।

शैक्षिक स्थिति (साक्षरता) -

वैसे तो पूरा बिहार ही साक्षरता के मामले में राष्ट्रीय औसत से बहुत नीचे है पर प० चम्पारण , बिहार के औसत से भी अत्यधिक कम के बल 23प्रतिशत पर है । यह 1991 की जनगणना के आधार पर है । यहाँ साक्षरता अभिवृद्धि की गति भी अत्यधिक ही धीमी है । 1971 में जहाँ साक्षरता का प्रतिशत 14 प्रतिशत था , 1981 में 19 प्रतिशत था । गत दस वर्षों की प्रगति 71-81 के दस वर्षों की प्रगति से भी कम रही - इसका कारण क्या था , शायद हमें विश्वास की कमी ।

प्राथमिक शिक्षा की वर्त्तमान स्थिति -

पश्चिम चम्पारण जिले में कुल 16 प्रखंडों के अन्तर्गत 1359 ग्राम हैं । पंचम शिक्षा सर्वेक्षण के अनुसार कुल प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 1326 है, 228 मध्य विद्यालय तथा 58 उच्च विद्यालय हैं । इन विद्यालयों के पास औपचारिक पक्का या पक्का कुल 644 भवन हैं । कच्ची झोपड़ियों वाले विद्यालयों की संख्या 270 है । कुल 214 विद्यालय भवनहीन हैं ।

प्रा० वि० में कुल 3388 प्रशिक्षित शिक्षक कार्यरत हैं । मध्य विद्यालयों में 1322 प्रशिक्षित एवं 103 अप्रशिक्षित शिक्षक कार्यरत हैं । इसी प्रकार उच्च विद्यालयों में 740 प्रशिक्षित तथा 62 अप्रशिक्षित शिक्षकगण शिक्षण कार्य कर रहे हैं । वर्त्तमान में कुल शिक्षकों की संख्या 5296 है ।

क्षेत्र का चयन-

न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम उन तीन प्रखंड़ों का चयन किया गया जहाँ इसे कार्यान्वित किया जा रहा है। ये तीनों प्रखण्ड हैं- बनपटिया, नौतन तथा अगहा-2 (सिधाव)। इनके चयन में एक गुणक यह रखा गयाथा कि उन प्रखण्डों को ही चुना जाए जहाँ साक्षरता का प्रतिशत जिले के प्रतिशत से अधिक अन्तर पर नहींहो इनका साक्षरता प्रतिशत इस प्रकार था।

जिले का साक्षरता प्रतिशत -	23%
बनपटिया प्रखंड का प्रतिशत-	22%
नौतन प्रखंड का प्रतिशत -	19%
अगहा-2 प्रखंड का प्रतिशत -	21%

दूसरे गुणक के रूप में हमने उपलब्धि को ध्यान में रखा तथा बनपटिया और नौतन चयनित किये। परन्तु जिले के दुर्गम भौगोलिक स्थिति को देखते हुए एक ऐसा दूरस्थ प्रखण्ड अगहा-2 भी लिया जहाँ अध्ययन (Exercise) करने सेहमें दुर्गम प्रखंडों में कार्य करने में भी भविष्य में कठिनाई न हो। तीसरा कारण (Factor) महिलाओं की साक्षरता था जो सभी प्रखंडों में 10% से कम है।

तीनों प्रखंडों से 100 विद्यालय (अनुलग्नक-1) न्यूनतम अधिगम स्तर को कार्यान्वित करने के लिए चुने गये हैं। में सभी विद्यालय Cluster approachके अनुसार लिये गये है।

उद्देश्य:-

किसी भी योजना को लागू करने के पहले यह जानना जरूरी है कि इस योजना का उद्देश्य क्या है? न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति का उद्देश्य है- पिछड़े स्कूलों को, पिछड़े छात्रों को अच्छे स्कूलों तथाअच्छे छात्रों की श्रेणी में लाना तथा अच्छे स्कूलों तथा छात्रों को और आगे बढ़ाना।

TORCH OF M.L.L.

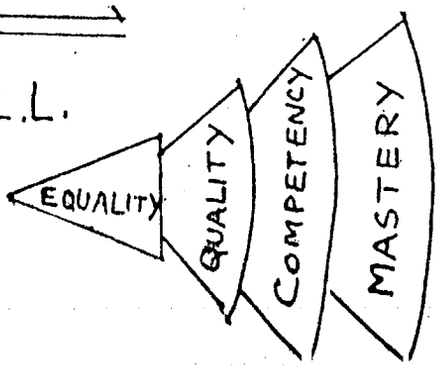

व्यूह रचना -

किसी भी कार्ययोजना के कार्यान्वयन के पूर्व उसकी व्यूहरचना अति आवश्यक है। हम जानते हैं कि हमारी सभी क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु छात्र है । सभी गतिविधियाँ शिक्षक के माध्यम से कार्यान्वित की जाएगी। व्यूहरचना का चरम उद्देश्य गुणवत्ता की प्राप्ति है अत: जो कारक इन गतिविधियों को प्रभावित करेंगे और जो नियंत्रक हैं,उनकी भी भूमिका रखी जाएगी

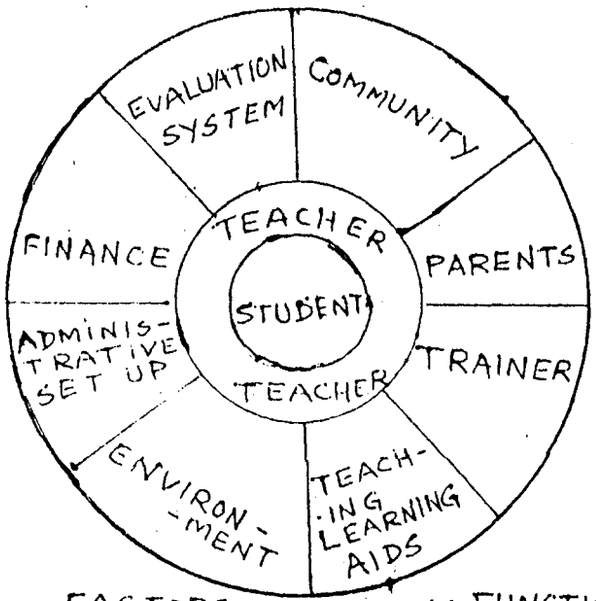

FACTORS AFFECTING FUNCTIONAL STRATEGY

कार्यान्वयन :-

योजना बन गई ,व्यूहरचना बन गई,पर ये कितनी हद तक सफलीभूत होगी ये जानने के लिए आवश्यक है कि हम पहले ही एक Measuring scale का निर्धारण कर लें ,मापन हमेशा अन्तर को ही दर्शाता है ।अत: प्रारंभ की स्थिति जानना अति आवश्यक है। अत: शुरू में ही हम चयनित विद्यालयों का school profile बनाना शुरू कर देते हैं। पश्चिम चम्पारण जिले में हालांकि जिले के सभी विद्यालयों का school profile तथा सभी शिक्षकों का Bio-data, Computer में feed करने हेतु उपलब्ध कर लिया गया है ।तथा कम्प्यूटर में इन डाटा(Datas) को feed करने का काम बिहार शिक्षा परियोजना कार्यालय में शुरू किया जा रहा है । हम यहाँ केवल उन सौ विद्यालयों पर केन्द्रित रहेंगे जिन्हें न्यूनतम अधिगम स्तर हेतु चयनित किया गया है । इन सभी स्कूलों की एक School Profile बना लेंगे तथा उसके प्रोग्रेस रिपोर्ट उसमें एटेच करते रहेंगे जिससे हम उसकी प्रगति का समय-समय पर आकलन कर सकें।

- ~~5~~ -

कार्यान्वयन हम तीन चरणों में करेंगे-

1. Preparatory Phase -तैयारी का चरण ।
2. Introductory Phase -समावेशन का चरण ।
3. Wider Introductory Phase - वृहत् समावेशन चरण ।

विस्तारण (Extension)

1. PREPARATORY PHASE -(तैयारी का चरण)- स्कूल का निर्माण हम इसी चरण के तहत् करते है । हॉलाकि यह चरण दिसम्बर 92 तक ही था । परन्तु न्यूनतम अधिगम स्तर की नवाचार समझने तथा इसका कार्यान्वयन सटीक रूप में प्रत्येक विधालय में पहुँचाने हेतु यह चरण गत वर्ष की कार्ययोजना के पुनर्आकलन के दौरान दिसम्बर, 93 तक रखा गया ।

न्यूनतम अधिगम स्तर की अवधारणा के साथ हम यह भाव साथ लेकर चलें हैं कि छात्रों को या विधालयों को न्यूनतम अधिगम स्तर पर लाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें न्यूनतम मूल जरूरतों (Min. basic needs) को मुहैयया करें । इसी के तहत हमने वातावरण निर्माण किया तथा विधालयों के सौंदर्यीकरण हेतु कार्य किया है । इनमें बृक्षारोपन तथा पेयजल एवं शौचालयों की आपूर्ति (निर्माण) भी की है ।

नामांकन अभियान-

वातावरण निर्माण हमने इस प्रकार भी किया कि वर्ष 92 में हमने Enrolment drive चलाया इसके तहत् सभी विधालयों में बालपंजी बनवायी इसमें उन सभी परिवारों के नाम रखे जो उस विधालय के सम्पोषित ग्राम में है । इसमें 6-14 वर्ष के सभी बच्चों के नाम लिये गये तथा यह दर्ज किया गया था कि स्कूल जाते हैं या नहीं ,जो नहीं जाते उन्हें शिक्षकों ने अपने व्यक्तिगत प्रयास या समुदाय के अन्य सदस्यों की सहायता से स्कूल में दाखिला दिलवाया । शिक्षा पदाधिकारियों ने इसे एक अभियान के रूप में चलाकर इसमें सफलता हासिल की ।

दिसम्बर, 93 तक 309692 छात्र/छात्राओं का नामांकन हो चुका है तथा नामांकन अभिवृद्धि प्रतिशत करीब 30% है तथा 71862 छात्र/छात्राओं का नामांकन वर्ष 93 में हुआ जो 6-14 वय के कुल लड़के/लड़कियों का करीब 13.4% है। नामांकन अभियान के तहत नामांकित छात्र/छात्राओं में गत वर्ष के अनुपात में रिटेंशन बढ़ा है छीजन कम हुआ है। हमारा सफल प्रयास भविष्य के लिए है कि 1994-95 वर्ष में रिटेंशन का दर और बढ़े। चयनित तीन प्रखण्ड भी इसी अनुपात है।

शिक्षक इकाइयों का तार्किक स्थानापन्न ः

ः --- न्यूनतम अधिगम स्तर चयनित विद्यालयों (सूची संलग्न-1) में शिक्षकों के स्थानान्तरण को अगले तीन वर्षों हेतु निलम्बित कर दिया गया है तथा छात्र शिक्षक अनुपात के अनुसार शिक्षक इकाईयों का वितरण सुनिश्चित करने हेतु कारवाई की गई है।

पूर्व जाँच परीक्षा:-

उपलब्धि के अन्तर को जानने के लिए पूर्व जाँच परीक्षा अति आवश्यक है। यह पूर्व जाँच परीक्षा तीनों प्रखण्डों के सभी चयनित 100 विद्यालयों में 22.3.93 एवं 23.3.93 को कराई गई। यह जाँच परीक्षा बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा शिक्षकों के माध्यम से ही कराई गई। इस पूर्व जाँच परीक्षा हेतु प्रश्नावली इत्यादि बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा तैयार कराई गई। परन्तु इन प्रश्नावलियों में एक खामी रह गई थी वो यह कि ये प्रश्नावलियाँ पूर्णतः दक्षता आधारित नहीं थी। इससे दक्षतानुरूप छात्रों में अधिगम स्तर का नामांकन मुश्किल हो गया। हलांकि इन प्रश्नावलियों के मूल्यांकन ने चयनित प्रखण्डों के चयनित विद्यालयों का स्तर चालीस प्रतिशत आँका। पुनः निदेशानुसार कार्यशालाएँ बुलाई गई तथा दक्षता आधारित प्रश्नावलियाँ तथा दक्षता आधारित पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया तथा चयनित विद्यालयों में 15 दिसम्बर, 93 से 18 दिसम्बर, 93 तक परीक्षा संचालित की गई। इसमें विद्यालयवार/छात्रवार दक्षतावार उपलब्धि निर्धारित की गई।

हालांकि इसके पूर्व छः उन्मुखीकरण कार्यशालाएँ आयोजित की गई जिनमें सभी चयनित विद्यालयों के कम से कम दो-दो शिक्षकों को न्यूनतम अधिगम स्तर तथा भावी रणनीति से अवगत कराया गया । इन कार्यशालाओं में प्रत्येक विद्यालय तथा शिक्षक हेतु संधारित किया जाने वाला दैनिक प्रगति विवरण का प्रोफार्मा [अनुलग्नक -4] विकसित किया गया । साथ छात्रानुसार तथा विषयानुसार संप्राप्त स्तर संधारण हेतु भी प्रोफार्मा [अनुलग्नक-5]विकसित किया गया । ग्राफ द्वारा किस तरह किसी छात्र / विद्यालय की उपलब्धि अंकित की जाए इसे भी विकसित किया गया [अनुलग्नक-6] । पूर्व जाँच परीक्षा हेतु असंज्ञानात्मक परीक्षा हेतु भी निदेश तैयार किये गये ।

पूर्व जाँच परीक्षा 100 चयनित विद्यालयों के अतिरिक्त ,चयनित प्रत्येक प्रखण्ड के दस-दस विद्यालयों में और ली गई है। [अनुलग्नक- 3] । परन्तु यहाँ न्यूनतम अधिगम स्तर आधारित अध्ययन नहीं किया जाएगा ये अतिरिक्त विद्यालय चयनित विद्यालयों के गुच्छ के समीप ही हैं इन्हीं विद्यालयों से चयनित विद्यालयों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन कर समग्र उपलब्धि की जाँच की जाएगी।

पूर्व जाँच परीक्षा प्रत्येक वर्ग को हुई तथा इससे हम छात्रों के उपलब्धि स्तर को निकाला गया । जाँच परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का केन्द्रिय मूल्यांकन कराया गया । यह परीक्षा लघु उत्तरात्मक तथा वस्तुनिष्ट टाईप तथा अल्पावधि की थी [कार्यक्रम]

यह पूर्व जाँच परीक्षा तीन विषयों भाषा,गणित ,तथा पर्यावरण की हुई । हालांकि वर्ग । को Zero Level पर ~~xxxx~~ मानकर चलना ~~हैxxxx~~ हो गया ।

उपलब्ध स्तर के आधार पर बैंच मार्क डाटा तैयार किया जा सकेगा तथा उसी के आधार पर अधिगम के कठिन और कड़े बिन्दुओं की पहचान की जा सकेगी और उसी के आधार पर उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रम 1993 में प्रारंभ किया जा सकेगा ।

मूल संरचना अभिवृद्धि तथा शैक्षिक सामग्रियों की आपूर्ति:-

इन चयनित विद्यालयों के मूल संरचना स्तर में सुधार हेतु आवश्यक उपस्करों, नक्शों सामग्रियों, घंटी खेलकूद सामग्री की आपूर्ति अंतिम चरण में है तथा पुस्तकालय निर्माण हेतु पुस्तकों के क्रयकर आदेश दे दिया जा चुका है । छात्र/शिक्षक मूल्यांकन हेतु दैनिक प्रगति प्रतिवेदन तथा छात्रानुसार विषयवार उपलब्धि हेतु रजिस्टर तथा दक्षता आधारित पाठ्यक्रम का कैलेण्डर आपूर्ति भी अंतिम चरण में हैं ।

समावेषण चरण

यह चरण जनवरी 94 से लागू होगा , जब हम न्यूनतम अधिगम स्तर की धारणाओं के अनुरूप तैयार पठ योजना के आधार पर भाषा , गणित तथा पर्यावरण अध्ययन की पढ़ाई शुरू करेंगे । यह पढ़ाई एक निश्चयत समय सीमा के तहत होगी । तथा प्रगति हेतु शिक्षकों को उत्तरदायी, बनाना होगा ।

क्रियाकलाप-

हमारा उद्देश्य वर्ग । से 5 तक विद्यालयों के छात्रों में न्यूनतम अधिगम स्तर रणनीति का सहारा लेते हुए आवश्यक क्षमताएं विकसीत कर देना है । इसमें भाषा गणित तथा पर्यावरण अध्ययन में अधिगम स्तर में सुधार पर बल दिया जाएगा । इसके अन्तर्गत विद्यालयीय कार्यक्रम जो पहले से चल रहे थे उन्हें नये कार्यक्रम के अनुसार समायोजित किया जाएगा । जिससे नये पहुंच के अनुसार सभी बच्चों में न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकेगी । जिससे बच्चों की प्रगति संतोषप्रद रहे ।

मूल्यांकन-

बच्चों का अनवरत मूल्यांकन होता रहे इसके लिए शिक्षण के साथ- साथ मूल्यांकन की प्रक्रिया चलती रहेगी । तथा साप्ताहिक , मासिक, त्रैमासिक अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक मूल्यांकन होता रहेगा । परन्तु इस मूल्यांकनो की प्रश्नावली भारी भरकम न होकर अत्यन्त ही सरल होगी । यह वस्तुनिष्ठ प्रश्नों एवं क्षमताओं पर आधारित रहेगी तथा शिक्षण के समय ही अन्तर विद्यार्थी विनिमय द्वारा मूल्यांकित कर ली जाएगी ।

एक साल बाद दिसम्बर 94 में वार्षिक परीक्षा ली जायेगी जिसे हम पोस्ट टेस्टिंग कहेंगे । इसका परिणाम अगली कक्षा हेतु प्रिटेस्टिंग कहा जाएगा । अगली कक्षा में जिस कठिन बिन्दु कीपहचान होगी उसको पढ़ाई उपचारात्मक उद्देश्य से की जाएगी तथा मास्टरी स्तर प्राप्त करना सुनिश्चित किया जाएगा ।

छात्र प्रगति पत्र तथा जीवन वृत-

प्रत्येक छात्र को एक जीवन वृत्त पुस्तिका सह प्रगति पत्र विद्यालय में संधारित किया जाएगा । जिससे छात्र का विवरण, उसके माता- पिता की शैक्षणिक स्थिति तथा समय- समय पर किए गये मूल्यांकनों को दर्ज किया जाएगा । उनकी उपलब्धियों, को उनके माता- पिता तथा समिति के सदस्यों के सामने भी रखा जाएगा ।

प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण किया जाएगा । विषयवार बच्चों की उपलब्धि का विश्लेषण कर यह पता लगाया जाएगा कि उपलब्धि में क्या प्रगति है ।

प्रखंड तथा जिला स्तर पर दो मूल्यांकन समितियों का गठन किया जाएगा इसमें विशेषज्ञ तथा अन्य कार्यकारी रहेंगे ।

अनुश्रवण- [Monitoring]

न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु जिला स्तर पर अलग से एक दल बनाया जानाहै जो कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों का आयोजन करेगा, शिक्षकों का अभिविन्यास करेगा, न्यूनतम अधिगम स्तरों की पुस्तिकाएँ तथा शिक्षण सामग्री तैयार करेगा । परीक्षा सामग्री तथा उपचार अभ्यास का Pool तैयार करेगा।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-8265
Date 05-10-94

-50-

प्रखण्ड स्तर पर अनुश्रवण कार्य हेतु प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी की भूमिका को और मजबूत बनाया जाएगा और जिम्मेवारी सौंपी जाएगी । ग्राम शिक्षा समिति को विद्यालय स्तर पर एक अहम भूमिका निभानी होगी । तथा परिवीक्षण कार्य में भी भागीदार होना होगा । चूँकि उस विद्यालय का, प्रधान उस समिति का सचिव होगा । अतः अन्य सदस्यों के साथ अधिक समन्वित रूप से काम हो सकेगा ।

प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी तथा जिला शिक्षा अधीक्षक को एक निर्धारित अवधि में निरीक्षण/परिवीक्षण करने की जिम्मेवारी सौंपी जाएगी । उनसे अपेक्षा की जाएगी की वे रचनात्मक पर्यवेक्षण करें । एक गुप्त प्रधान दल को भी परिवीक्षण कार्य सौंपा जाएगा, जो उपलब्धियों को आँकेगा ।

जिला स्तर पर बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा सभी प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी तथा जिला शिक्षा अधीक्षक की मासिक बैठक बुलाकर प्रगति की समीक्षा करेगा । चयनित विद्यालयों के पर्यवेक्षण से संबंधित प्रतिवेदन लेगा । इस संबंधमें बिहार शिक्षा परियोजना कार्यालय एक Format विकसित करेगा ।

प्राथमिक शिक्षा की steering Committeeसे समय-समय पर उपलब्धि का विश्लेषण कराया जाएगा ।

वृहत समावेषण चरण (Wider Introductory Phase)

यह चरण जन"95 शुरू होगा जब हम इन 100 विद्यालयों से अर्जित अनुभव तथा उपलब्धि के आधार पर जिले के सभी विद्यालयों में न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु कार्य शुरू करेंगे । हालाँकि हम इस विस्तार कार्य की तैयारी जून-जुलाई 94 से ही शुरू कर देंगे ।

-5eA-

बिहार शिक्षा परियोजना, पश्चिम चम्पारण, बेतिया।

न्यूनतम अधिगम स्तर – समय क्रम

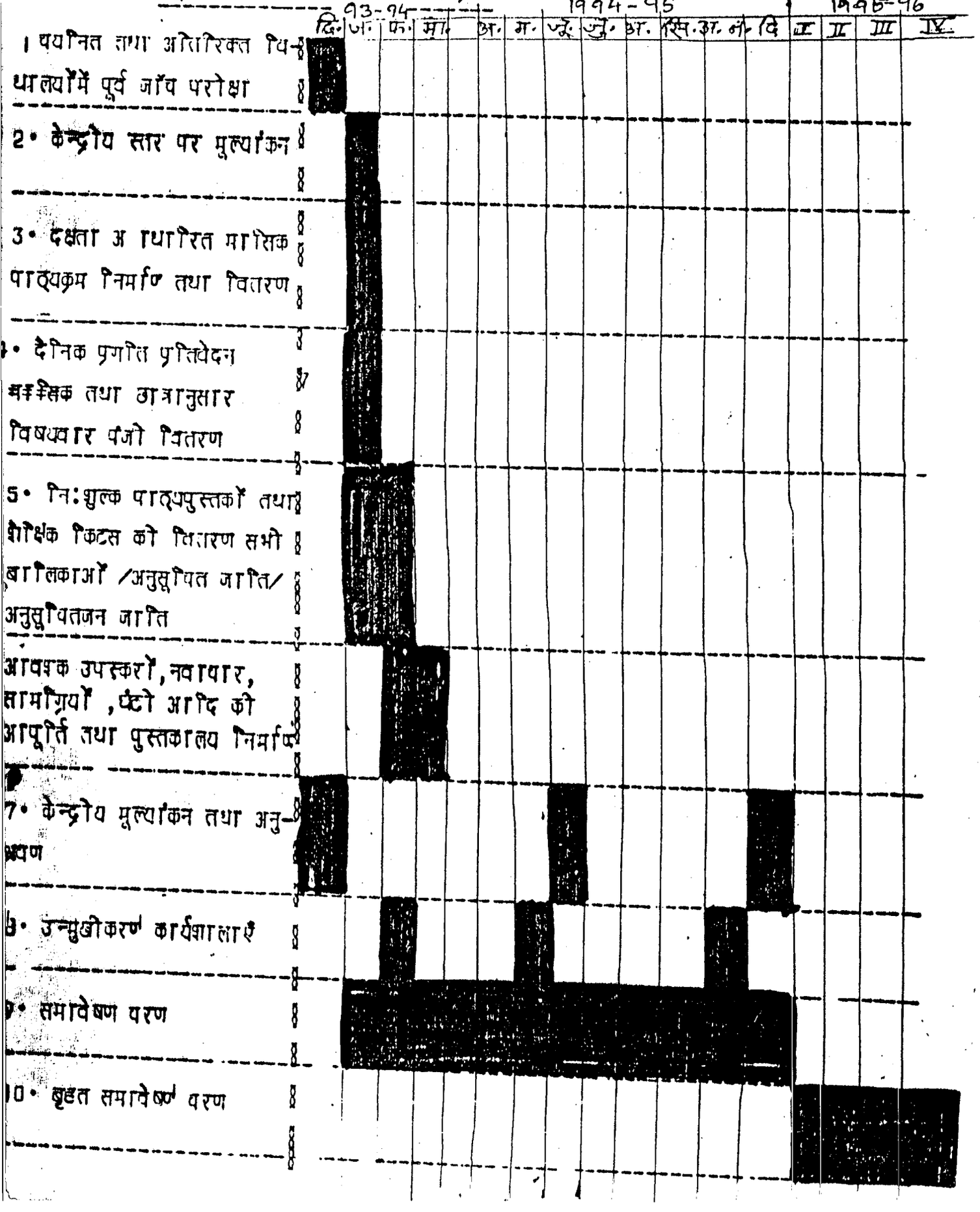

अनुलग्नक- I

न्यूनतम अधिगम स्तर के लिए चयनित विद्यालयों की सूची:-

क्रमांक	खण्ड का नाम	विद्यालय का नाम
1.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय ,केरई
2.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय ,बेरियाकला
3.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय बेरिया खुर्द
4.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय ,नरवल बरवल
5.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय ,बरवल
6.	बगहा-2	प्राथमिक वि,ालय ,धरौली
7.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,खाजुरिया
8.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,महोदेवा
9.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,हरनाटाँड
10.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,शेखा
11.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय, जीतपुर
12.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,विन्दौली
13.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,पटखौली ।
14.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,नरायणपुर गंडक कॉलनी
15.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,पटखौली कन्या
16.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय ,पटखौली मलकौली
17.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,सुखावन
18.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,मंगलपुर
19.	बगहा-2	प्राथमिक वि,ालय,औसानी
20.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय,रामपुर।
21.	बगहा-2	प्राथमिक विद्यालय, नयागाँव ।

22	बगहा-2	प्राथमिक विधालय,मरिहानी उर्दू ।
23.	बगहा-2	मध्य विधालय, बाल्मिकीनगर
24.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय ,टाटी ।
25.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय ,कोतरॉहा
26.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय,रमपुरवा
27.	बगहा-2	प्राथमिक विधालिय , लक्ष्मीपुर भेड़िहारी
28.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय, भेडिहारी कॉलोनी
29.	बगहा-2	मध्य विधालय ,नरायणपुर
30.	बगहा-2	बाल विकास विदया केन्द्र ,बाल्मिकीनगर
31.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय ,दरूआबारी
32.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय ,संतपुर
34.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय,सोहरिया
34.	बगहा-2	प्राथमिक विधालय ,सेमरा शरणार्थी
35.	चनपटिया	राजकीय प्राथमिक विधालय ,लखौरा ।
36.	कन्या चनपटिया	कन्या प्राथमिक विधालय ,लखौरा ।
37.	चनपटिया	राजकीय प्राथमिक विधालय,धरिदेउर
38.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय,महना ।
39.	चनपटिया	प्राथमिक विधालिय ,झखरा ।
40.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय ,तुनिया ।
41.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय . रमपुरवा ।
42.	चनपटिया	प्राथमिक विधा लय, हीरा गार्डन
43.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय ,हीरा गाढ़ा ।
44.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय ,धरिदेउर उर्दू ।
45.	चनपटिया	प्राथमिक विधालय , बड़हरवा कन्या ।
46.	चनपटिया	मध्य विधालय , जबदौल दुसाध पट्टी ।

47.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय टिकाछापार
48.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , लच्छुछापर
49.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , कौआहा
50.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , लाला टोला
		{ तुरहा पट्टी } मुस्माल
51.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , जिनवलिया
52.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , पोखरिया राय
53.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , टिकुलिया बालाक
54.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , बेतवनिया
55.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , खैरटिया
56.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , गुरवलिया संस्कृत
57.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय ,गुरवलिया हरिजन
58.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , पतरखा
59.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , बाबू टोला
60.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय, लपटही
61.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , भरवा टोला राय
62.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय, गरभुआ हरिजन टोली
63.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , लाल टोला तुरहापट्टी
64.	चनपटिया	मध्य विद्यालय ,बड़हरवा
65.	चनपटिया	मध्य विद्यालय ,जोगिया टोला
66.	चनपटिया	मध्य विद्यालय , गोभिना पुर
67.	चनपटिया	प्राथमिक विद्यालय , उग्रसेन टोला हरिजन
68.	नौतन	मध्य विद्यालय , कठैया
69.	नौतन	प्राथमिक विद्यालय महुअवा उर्दू
70.	नौतन	प्राथमिक विद्यालय , पकड़िया
71.	नौतन	प्राथमिक विद्यालय , जमुनिया
72.	नौतन	प्राथमिक विद्यालय , जमुनिया नवका टोला
73.	"	प्राथमिक विद्यालय,चरगाहों
74.	"	प्राथमिक विद्यालय,मझरिया किशुन
75.	"	प्राथमिक विद्यालय,मंगलपुर कला

76.	नौतन	प्राथमिक विद्यालय, बैकुंठवा डॅकरिया
77.	"	प्राथमिक विद्यालय, जयनगर
78.	"	प्राथमिक विद्यालय, डकराहाँ
79.	"	प्राथमिक विद्यालय, भागहाँ
80.	"	प्राथमिक विद्यालय, श्रीनगर धानुषाटोली
81.	"	प्राथमिक विद्यालय, सुन्दरपट्टी
82.	"	मध्य विद्यालय, धुमनगर
83.	"	प्राथमिक विद्यालय, महुअवा पुरबी
84.	"	मध्य विद्यालय, नौतन
85.	"	प्राथमिक विद्यालय, लक्ष्मीपुर कन्या (उर्दू)
86.	"	प्राथमिक विद्यालय, संतपुर (उर्दू) बालक
87.	"	प्राथमिक विद्यालय, मोइहरवा
88.	"	प्राथमिक विद्यालय, खैरवा टोला
89.	"	प्राथमिक विद्यालय, लक्ष्मीपुर दुबौलिया
90.	"	प्राथमिक विद्यालय, जगदीशपुर
91.	"	प्राथमिक विद्यालय, हलछोरवा
92.	"	प्राथमिक विद्यालय, छाइडा पतहरी
93.	"	प्राथमिक विद्यालय, पुरन्दरपुर
94.	"	प्राथमिक विद्यालय, बडोरिया
95.	"	मध्य विद्यालय, सम्सैरयां
96.	"	प्राथमिक विद्यालय, सोफवा टोला
97.	"	प्राथमिक विद्यालय, गहीरी
98.	"	प्राथमिक विद्यालय, पुरवारी टोला
99.	"	प्राथमिक विद्यालय, दिउलिया
100.	"	प्राथमिक विद्यालय, बहुअरवा ।

---0---

अनुलग्नक- 3

बिहार शिक्षा परियोजना ,प0 चम्पारण ,बेतिया ।
न्यूनतम अधिगम स्तर -पूर्व जाँच परीक्षा -1993 ।

दिनांक	बैठक	प्रथम वर्ग	द्वितीय वर्ग	तृतीय वर्ग	चतुर्थ वर्ग	पंचम वर्ग
15. 12. 93 बुधवार	प्रथम	मातृभाषा	गणित	×	×	×
	द्वितीय	×	×	मातृभाषा	गणित	पर्यावरण अध्ययन
16. 12. 93 गुरूवार	प्रथम	गणित	मातृभाषा	×	×	×
	द्वितीय	×	×	पर्यावरण अध्ययन	मातृभाषा	गणित
17. 12. 93 शुक्रवार	प्रथम	असंज्ञानात्मक शिक्षा	×	×	असंज्ञानात्मक शिक्षा	×
	द्वितीय	×	असंज्ञानात्मक शिक्षा	असंज्ञानात्मक शिक्षा	×	असंज्ञानात्मक शिक्षा
18. 12. 93 शनिवार	प्रथम	पर्यावरण अध्ययन	पर्यावरण अध्ययन	×	×	×
	द्वितीय	×	×	गणित	पर्यावरण अध्ययन	मातृभाषा

निदेश- 1. प्रथम बैठक 10. 30 बजे से 1. 00 बजे तक तथा द्वितीय बैठक 1. 30 बजे से 4. 00 बजे तक होगी ।

2. प्रश्न-पत्रों की गोपनीयता की सारी जवाबदेही प्रधानाध्यापकों की होगी ।

3. असंज्ञानात्मक शिक्षा के मौखिकी प्रश्नावलियाँ प्रधानाध्यापक अपने सह कर्मी शिक्षकों के सहयोग से तैयार कर परीक्षा लेंगे ।

4. उत्तर पुस्तिकाएँ प्रधानाध्यापक,प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी के पास 20. 12. 93 तक जमा कर देंगे।

(अनुलग्नक- 3)

अतिरिक्त विधालयों के नाम न्यूनतम अधिगम स्तर चयनित विधालयों से तुलनात्मक अध्ययन हेतु चयनित कर पूर्व जाँच परीक्षा ली गई ।

क्रमसंख्या	विधालय का नाम	प्रखण्ड
1.	प्राथमिक विधालय, बनकटवा-	नौतन
2.	प्राथमिक विधालय परसौनी -	नौतन
3.	प्राथमिक विधालय , विशम्भरपुर-	नौतन
4.	प्राथमिक विधालय, झखरा हरिजन	नौतन
5.	म.व विधालय झखरा -	नौतन
6.	प्राथमिक विधालय श्यामपुर-	नौतन
7.	प्राथमिक विधालय , फुलियाखाँड़	नौतन
8.	प्राथमिक विधालय , गहिरी, मुसहर टोली-	नौतन
9.	प्राथमिक विधालय, गहिरी	नौतन
10.	प्राथमिक विधालय, पूर्णाडीह -	नौतन
11.	प्राथमिक विधालय, बरवा टाप-	चनपटिया
12.	प्राथमिक विधालय, चनपटिया बाजार-	चनपटिया ।
13.	प्राथमिक विधालय , पुरैना कन्या-	चनपटिया ।
[illegible]	[illegible] विधालय , [illegible] बालक-	[illegible] ।
15.	प्राथमिक विधालय , [illegible]-	[illegible] ।
16.	प्रोन्नत मध्य विधालय, जैतिया-	[illegible]टिया ।
17.	प्राथमिक विधालय , शुक्ल टोला-	चनपटिया ।
18.	मध्य विधालय , चनपटिया बालक-	चनपटिया ।
19.	मध्य विधालय चनपटिया कन्या-	चनपटिया तुलनात्मक
20.	प्राथमिक विधालय, पकड़ीहार-	चनपटिया ।

-57-

क्रमसंख्या	विधालय का नाम	प्रखण्ड
21.	प्राथमिक विधालय ,गोईती	बगहा-2
22.	प्राथमिक विधालय,भेड़िहारी	बगहा-2
23.	प्राथमिक विधालय,भेमराबाजार	बगहा-2
24.	प्राथमिक विधालय ,नारायणपुरघाट-	बगहा-2
25.	प्राथमिक विधालय,बाँसगाँव	बगहा-2
26.	प्राथमिक विधालय नरईपुर	बगहा-2
27.	प्राथमिक विधालय बेलहवा-	बगहा-2
28.	प्राथमिक विधालय रंमपुरवा-	बगहा-2
29.	मध्य विधालय- मुसहर	बगहा-2
30.	प्राथमिक विधालय लक्ष्मीपुर -सोराहा-	बगहा-2

-----/x-------

(अनुलग्नक – 4)

बिहार शिक्षा परियोजना, प0 चम्पारण, बेतिया ।

प्रपत्र– ।

न्यूनतम अधिगम स्तर –क्षमता आधारित दैनिक प्रगति विवरण , विद्यालय का नाम–

दिनांक	(विकसित की जाने वाली क्षमता का क्रमांक एवं विवरण)	(बच्चों की संख्या एवं क्रमांक (जिन्होंने पूर्णरूपेण क्षमता विकसित हुइ)	(बच्चों की संख्या एवं क्रमांक जिनमें आंशिक रूप से क्षमता का विकास हुआ ।)	(बच्चों की संख्या क्रमांक जिनमें क्षमता विकसित नहीं हुई ।)	(अभ्युक्ति उपचारात्मक शिक्षण द्वारा पूर्णता स्तर संप्राप्ति के संबंध में)

~~454~~

अनुलग्नक - 5

प्रपत्र-11 बिहार शिक्षा परियोजना, पश्चिम चम्पारण, बेतिया ।

न्यूनतम अधिगम स्तर

सम्प्राप्ति स्तर जाँच प्रपत्र

वर्ग- विद्यालय-

विद्यार्थी का नाम एवं क्रमांक	प्राप्त स्तर											
	भाषा				गणित				पर्यावरण विज्ञान			
	पू	पूर्णस्तरीय अ	आंशिक ब	अप्राप्त स	अ	ब	स		अ	ब	स	
योग-												

(अनुलग्नक - 6A)

दक्षताएँ
सही उत्तर (प्रतिशत में)
शिक्षाक्षेत्र पूर्ण संख्याओं एवं संख्याकों का समझना ।
1.1.1
1.1.2
1.1.3
1.1.4
1.1.5
1.1.6
1.1.7
1.1.8
1.1.9
पूर्ण संख्याओं को जोड़ने घटाने गुणा व भाग करने की योग्यता ।
2.1.1
2.1.2
2.1.3
2.1.4
2.1.5
2.1.6
2.1.7
मुद्रा, लम्बाई, भार धारिता क्षेत्र एवं समय की इकाइयों को उपयोग करने व इनसे संबंधित दैनिक जीवन की साधारण समस्याओं को हल करने की योग्यता
3.1.1
3.1.2
3.1.3
3.1.4
3.1.5
ज्यामितीय आकारों एवं स्थानिक संबंधो को समझना
5.1.1
5.1.2
5.1.3
0
20
40
60
80
100
न्यूनतम अधिगम स्तर
कक्षा 1 के बच्चों का गणित में दक्षताओं की वर्तमान स्थिति

बिहार शिक्षा परियोजना (प0 चम्पारण)

न्यूनतम अधिगम स्तर का उद्देश्य

बच्चों में न्यूनतम अधिगम स्तर संबंधी दक्षताओं की

चित्र (अ) -वर्तमान स्थिति (ब) उद्देश्य (स) तात्कालिक लक्ष्य

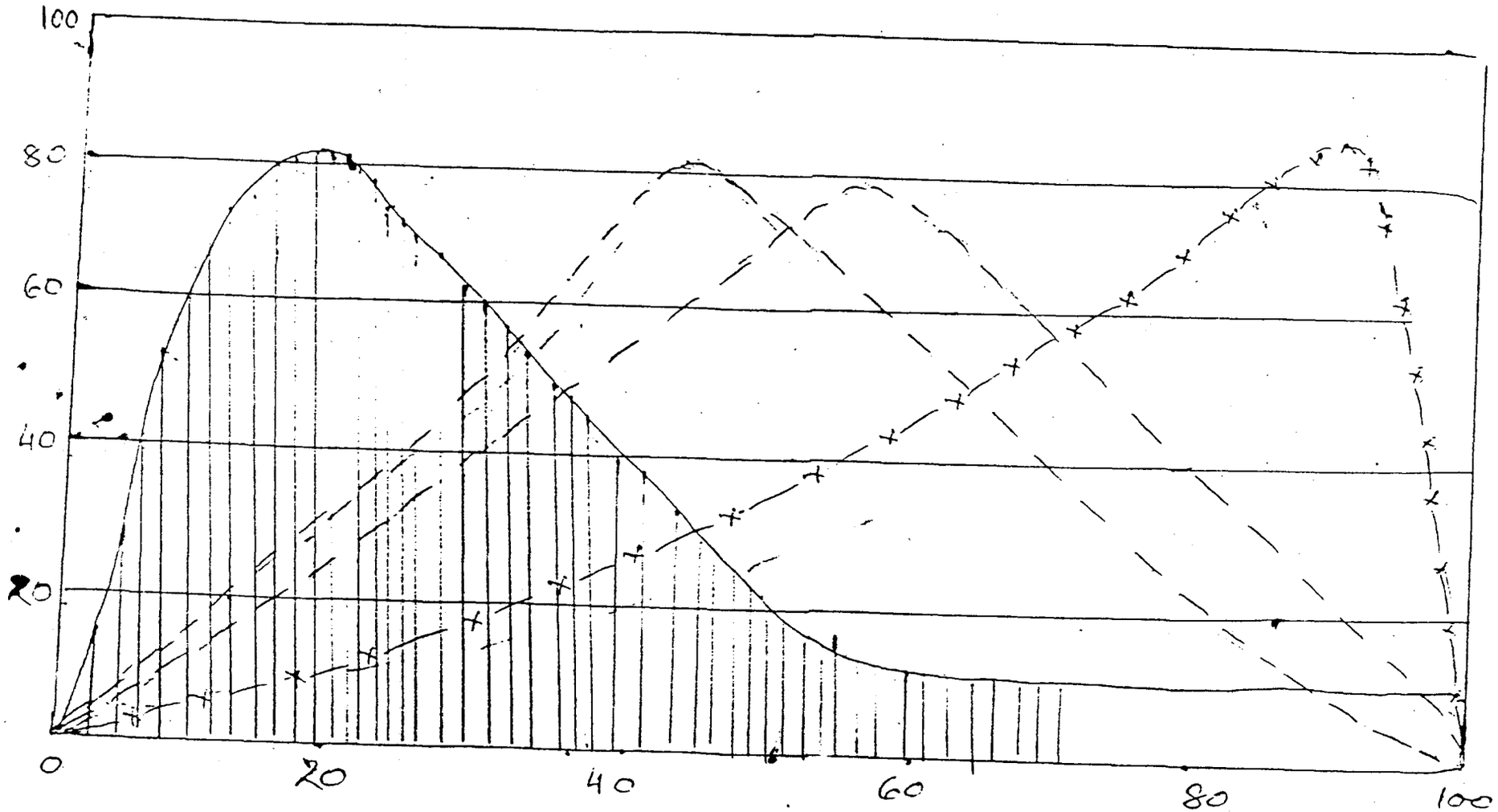

परिशिष्ट - 2

पुनर्वासितों की शिक्षा

पुनर्वासित शब्दावली उन लोगों के लिए प्रयुक्त की गयी है जो विभाजन के समय मातृ भूमि छोड़ने को विवश हुए तथा उन्हें विभिन्न स्थानों पर बसाया गया । प0 चम्पारण जिले में ऐसी 47 बस्तियाँ तथा करीब 65 हजार जन संख्या है, एक कॉलोनी वर्मा से आये विस्थापितों की है तथा शेष 46 में पूर्वी बंगाल से आये विस्थापित हैं । वर्मा से आये विस्थापित मूल रूप से भोजपुर क्षेत्र के ही हैं तथा उनके लिए अतिरिक्त भाषा अभिवृद्धि प्रयास आवश्यक नहीं । परन्तु पूर्वी बंगाल से आये विस्थापितों के लिए बंगला भाषा के बचाव के विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है । इनकी त्रासदी यह है कि इन्हें इनकी मिट्टी से उखाड़ लिया गया है तथा एक नई अनजानी मिट्टी में पनपने ई के लिए छोड़ दिया गया है, इस वातावरण में समंजन तथा सामंजस्य हेतु इन्हें पेट-पीठ एक करने पड़े, और अब जीना ही जेहाद हो जाय तो फिर शिक्षा और भाषा की स्थिति हाशिए पर चली जाती है । अब इनकी द्वितीय संतति जब बड़ी होने लायक हुई तो शिक्षा और भाषा के सवाल उठा रही है । लेकिन विडम्बना यह है कि दूसरी पिढ़ी अपने पूर्वजों के अक्षिक्ष अतीत को, संस्कृति को नहीं जानती । यह तो नहीं कहा जा सकता कि उनकी संस्कृति विलुप्त हो जाएगी। हाँ यह तो जरूर हो सकता है कि इन्हें स्थानीय वातावरण में बहुत आसानी से अपनाया भी नहीं जाएगा, परिणाम होगा मांसिक वेदना का-एक नई खिचड़ी संस्कृति के उदय का, और इन सबकों रोकने का एक उपाय है और वह है शिक्षा ।

समाजिक स्थिति

पूर्वी बंगाल में इन पुनर्वासितों की सामाजिक स्थिति कैसी भी रही हो, आज की स्थिति से बेहतर जरूर ही रही होगी । बरगद को भी अगर अपनी मिट्टी से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाई जाए तो वह नहीं पनपेगा ।ऐसा वातावरण बनाया जा सकता है कि जहाँ इनका सर्वांगीण विकास हो, वैसे साधन जरूर मुहैया कराये जा सकते हैं जो सामाजिक, मांसिक, शारीरिक विकास में सहयोगी हो । इन सभी विकासों से शिक्षा ही एक ऐसा विषय है, जिनसे अन्योन्याश्रित संबंध है । अगर शिक्षा है तो सर्वांगीण विकास सम्भव है और अगर सर्वांगीण विकास है तो जरूर वहाँ शिक्षा होगी।

वर्तमान परिवेश में इन पुनर्वासितों के समायोजन की समस्या के कारण इनकी सामाजिक स्थिति स्थिर नहीं है। व्यक्ति-व्यक्ति के अनुसार भिन्न है ।

सामान्यत: अभी भी इन्हें अकेला देखा जा सकता है । फलस्वरूप ये सांस्कृतिक अवरोध के शिकार हैं ।

पुनर्वासितों हेतु वर्तमान शिक्षा की स्थिति :-

सामान्यत: यह देखा गया है कि पुनर्वासित शिक्षा के मामले में औसत नागरिक से कहीं अधिक जागरूक हैं । महिलाओं की भागीदारी भी औसत महिला से कहीं अधिक है । इसी जागरूकता के कारण कई पुनर्वासित आज अच्छे-अच्छे सरकारी पदों पर हैं ।

प0 चम्पारण की सभी 47 बस्तियों में तो विद्यालय नहीं परन्तु कई बस्तियों में विद्यालय हैं । विद्यालयों की स्थिति-परिस्थिति जानने के लिए सर्वेक्षण दल का गठन किया जा सकता है जो निम्न बिन्दुओं की जानकारी हासिल करेगा -

1. सभी विद्यालयों का प्रथम दृष्टि में उनके स्थिति जानने हेतु अंकन किया जाएगा ;
2. मैप के अनुसार, यह भी दर्शाया जा सकता है कि गुच्छा का निर्माण कैसे और कहाँ करें अर्थात प्रा0 एवं मध्य विद्यालयों से उत्तीर्ण हुए बच्चे किस माध्यमिक विद्यालय में जाएंगे जो उनकी आवश्यकताओं के मुताबिक हो ।
3. किन-किन बस्तियों में विद्यालय है, किन में नहीं, इसका पता लगाया जाएगा ।
4. विद्यालय की स्थिति क्या है अर्थात उसकी अपनी जमीन है या नहीं, भवन है या नहीं, अगर भवन है तो उसके कमरे पर्याप्त हैं या नहीं, भवन पूर्ण है या क्षति ग्रस्त आदि । छात्रों की क्रीड़ा आदि के लिए पर्याप्त जमीन है या नहीं ?
5. इन विद्यालयों में शिक्षकों की स्थिति क्या है, शिक्षक हैं या नहीं, अगर हैं तो छात्र संख्या के अनुरूप है या नहीं ?
6. महिला शिक्षिकाओं का क्या अनुपात है ?
7. शिक्षक अगर हों तो, पदस्थापित हैं या प्रतिनियोजित, अगर प्रतिनियोजित हैं और शिक्षकों की कमी है तो उनकी नियुक्ति हेतु अनुशंसा ।

हालांकि गाँधी प्रतिष्ठान में इस मामले का सर्वेक्षण कराया है, इनकी मात्र कॉलोनी में शिक्षण कार्य चल रहे हैं । जहाँ प्रत्येक में 40 छात्राएँ हैं तथा एक क्षेत्रीय पुनर्वासित शिक्षा ।

बंगाली शिक्षकों की पदस्थापन के संबंध में विचार है कि प्रथमतः जबतक विधिवत् नियुक्ति नहीं होगी तबतक बंगाली शिक्षकों को हीं इन विद्यालय में पदस्थापित किया जाय, अन्यत्र नहीं ।

दूसरा विशेष रूप से पुनर्वासित विद्यालय हेतु ही बंगाली शिक्षकों की नियुक्ति कराई जाय जिससे शहर या सुविधा के लालच से वे दूसरे स्कूलों में पदस्थापन नहीं करायें ।

पुनर्वासितों के शिक्षा की समस्यायें :-

हालांकि वर्तमान शैक्षिक स्थिति में हमने समस्याओं को चिन्हित किया है फिर भी मूल समस्यायें निम्न हैं :-

1. सभी बस्तियों में विद्यालय का न होना ।
2. जहाँ विद्यालय हैं वे या तो क्षति ग्रस्त हैं या फिर कम कमरे ।
3. पर्याप्त जमीन की कमी ।
4. पर्याप्त शिक्षकों की कमी ।
5. शिक्षण सामग्रियों की कमी ।
6. पुस्तकालय आदि का अभाव ।

समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव तथा कार्यान्वयन :-

उक्त समस्याओं में छात्र संबंधी समस्याओं का जिक्र न करने का मतलब यह कदापि नहीं की पुनर्वासितों की कॉलोनी में सभी बच्चे स्कूल जाने के लिए तत्पर बैठे हैं । इन में भी वे समस्यायें हैं जो सामान्य रूप से पायी जा रहीं हैं, यथा-

1. नामांकन में दिक्कत:- चाहे वह आर्थिक स्थिति के कारण हो यह फिर अभिभावकों की लापरवाही या शिक्षकों के आनाकानी के कारण ।
2. स्थगन एवं छीजन की समस्या आदि :- उक्त सभी समस्याओं के निराकरण हेतु पूर्ण रूप से सरकार पर निर्भर न होकर वे प्रयास भी

किए जाने चाहिए जो जन सहयोग पर आधारित हो । जहाँ विद्यालय भवन क्षतिग्रस्त हैं , जन सहयोग पर बनवायेंक जा सकते हैं और इसके प0 चम्पारण में कई उदाहरण हैं ।

जन सहयोग हेतु प्रत्येक ग्राम में तीन या चार टोला समिति का गठन किया जा सकता है । यह सभी समितियाँ , ग्राम शिक्षा समिति के अतिरिक्त होंगी तथा उनके सामानान्तर चलेंगी तथा काउंटर चेक का काम करेंगी । इन समितियों में " सहयोगिनी "तथा "साथिन" की धारणा के अनुरूप महिला स्वयंसेविका भी होंगी । ये टोला समितियाँ भवन निर्माण हेतु चंदा उगाहने में जन सहयोग लेने के अतिरिक्त साधन सेवी तैयार करने , उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु मास्टर ट्रेनर तैयार करने तथा नामांकन आदि में भी सहयोग करेगी । नामांकन को एक अभियान के रूप में चलाया जाएगा । वर्त्तमान में बाल पंजी के रूप को परिवर्तन कर मास्टर रजिस्टर तथा कन्टैक्ट रजिस्टर के रूप में रखा जायेगा तथादोनों काउंटर चेक का काम करेंगें । मास्टर रजिस्टर टोला समितियों के पास होंगे तथा उनमें सभी बच्चों का नाम होगा जो बच्चे विद्यालय नहीं जाते उनको कन्टैक्ट रजिस्टर में दर्ज कर नामांकित करने हेतु किये प्रयासों को दर्ज किया जायेगा ।

पुनर्वासितों को हरिजन इत्यादि के समकक्ष रखकर उनके लिए भी अगर पठन- पाठन सामग्रियाँ , छात्रवृति , बालिकाओं के लिए पोशाक दोपहर का भोजन तथा अन्य सरकारी सुविधाएं मुहैया करायी जाय तो शैक्षिक स्थिति में सुधार हो सकता है ।

चूँकि पिछड़ापन और अशिक्षा गहरे रूप से गरीबी से जुड़े हैं , अतः पिछड़ापन को दूर करने का प्रोग्राम पुनर्वासितों हेतु विशेष रूप से चलाये जाने चाहिए ।

चूँकि महिलाओं की अशिक्षा से केवल उनका परिवार ही नहीं अगली पीढ़ि के भी शिक्षित होने की संभावना घट जा रही है । अतः पुनर्वासितों में महिलाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा । उनमें आत्म विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न करने हेतु उनकी सामूहिक शक्ति को संचारित करने हेतु उपाय किए जाएंगे । प्रत्येक टोले में ऐसी महिलाओं की खोज की जाएगी जो कुछ पढ़ी - लिखी हो , तथा उनमें नेतृत्व का गुण हो । ऐसी महिलाओं का संघ बनायी जाय जो महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु कार्य करें । ऐसी महिलाओं को

स्वास्थ्य संबंधी प्रेरणाएं तथा जानकारी देना भी उचित होगा ।

चूँकि पुनर्वासितों में संस्कृति के लुप्त होने का सबसे गंभीर खतरा है , अत: संस्कृति को संचारित कराने हेतु उपाय किए जाएंगें। शिक्षा के माध्यम से ही पृथक करण की भावना को राष्ट्रीयता में बदला जा सकता है । इसका एक माध्यम सांसकृतिक पहचान बनाये रखना भी है । शिक्षा और संस्कृति को जोड़ कर एक मध्यम स्थिति का निर्माण किया जाएगा ।

सांस्कृतिक परंपराओं तथा लोकाचार को जिन्दा रखने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम , पुस्तक कोष शुरू कराये जा सकते हैं ।

कार्यान्वयन :-
==========

पुनर्वासितों की शिक्षा हेतु कार्य योजना का निर्माण हो चुका है । इसके अनुरूप पुनर्वासितों का शैक्षिक सर्वेक्षण फरवरी 94 , टोला समिति का निर्माण (गठन) मार्च 94 , सांस्कृतिक कार्यक्रम , कॉलोनियों में विद्यालयों एवं शिक्षकों की स्थिति मार्च 94 तक निश्चित रूप से सुदृद कर ली जाएगी । कॉलोनी के विद्यालयो में शत-प्रतिशत नामांकन करने , रिटेंशन बढ़ाने तथा छीजन का स्थगन करने की कार्रवाई सघन रूप से की जा रही है। मार्च 94 तक 60 (साठ) अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चलने लगेंगे और सन् 94-95 में 40 केन्द्रों पुनर्वासितों की कॉलोनियों में चलाने का हमारा लक्ष्य है ।

-----------xxxxxxx-----------

परिशिष्ट-- 6

बुनियादी विद्यालयों का जीर्णोद्धार

दिनांक 26.11.93 को डी0 आर0 यू0 "रीड" बेतिया में बैठक के क्रम में बुनियादी विद्यालय के जीर्णोद्धार के संबंध में हुई चर्चा दिनांक 30.11.93 की कार्यशाला की कार्यवाही रिपोर्ट के सारांश के अनुरूप बुनियादी विद्यालय जीर्णोद्धार के लिए यह प्रस्ताव प्रस्तुत है -

कार्यशाला में बुनियादी विद्यालय के अतीत एवं वर्तमान दोनों ही बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा के उपरांत ये बातें सामने उभर कर आयी है कि सरकारी तंत्र की निष्क्रियता एवं जनता की उदासीनता के कारण ही बुनियादी विद्यालय की दिन- पर -दिन बिगड़ती गयी और इस हालत तक पहुँच गयी है कि इसकी पहचान ही समाप्त हो चुकी है, बहुत लोग इस संबंध में जानते तक नहीं हैं ।

पश्चिमचम्पारण में बिहार शिक्षा परियोजना कार्यरत है । यदि इसके जीर्णोद्धार की पहल, इसके अधीन करने का प्रयास किया गया तो संभव है , ये विद्यालय अपने पूर्व के नहीं तो वर्तमान के अन्य विद्यालयों की श्रेणीमें जरूर आ खड़े होंगे । इसके लिए पहल की जरूरत है ।

पश्चिम चम्पारण में 43 बुनियादी विद्यालय एक कम्पैक्ट क्षेत्र चनपटिया प्रखण्ड में 29 हैं । जिला स्तर पर बुनियादी विद्यालय का नियंत्रण जिला शिक्षा पदाधिकारी के अधीन है । इसके प्रधानाध्यापक अवर शिक्षा सेवा के पदाधिकारी होते हैं । इसके कोष की राशि का उपभोग जिला शिक्षा पदाधिकारी के निदेशानुसार होता है । वर्तमान परिवेश में विद्यालय की स्थिति जर्जर हो चुकी है । स्टाफ एक या दो , किसी विद्यालय में वह भी नहीं रह गये हैं ।

अतः परियोजना के अन्तर्गत इसके जीर्णोद्धार की दिशा में कदम उठाये जायं ।

सर्वप्रथम 29 बुनियादी विद्यालय जो कम्पैक्ट क्षेत्र में हैं उन्हें परियोजना के अन्तर्गत लिया जा सकता है ।

परियोजना के अन्तर्गतसक्षम , योग्य एवं अनुभवी चार स्वयं सेवी संस्थाओं के एक गुच्छ को , जिसका प्रधान डी0 आर0 यू0 , बेतिया होगा को जिला स्तर पर जिम्मेवारी सौंपी जा सकती है,जो बिहार शिक्षा परियोजना

कार्यालय के सहयोग से कम्पैक्ट क्षेत्र में स्थित बुनियादी विद्यालयों के जीर्णोद्धार के लिए कार्य करेगी ।

डी० आर० यू० रीड , बेतिया गुच्छ के स्वयंसेवी संस्थाओं को निदेशानुसार क्षमता के आधार पर कार्य क्षेत्र के अनुसार विद्यालय के जीर्णोद्धार की जिम्मेवारी सौंपेगे ।

परियोजना के अन्तर्गत भी० ई० सी० के माध्यम से ही सभी विकास संबंधी कार्य कराये जाने का निदेश है । इसलिए सर्वप्रथम डी०आर० यू० की देख-रेख में उस क्षेत्र की संस्था ग्राम स्तर पर भी० ई० सी० के गठन के लिए बी० ई० पी० के निर्धारित=म्म० प्रावधान के अन्तर्गत आम सभा बुलाई जाएगी एवं भी० ई० सी का गठन होगा ,जिसमें उसके कार्यकलाप एवं जवाबदेही से उसे अवगत कराया जाएगा । आम सभा बुलाने एवं व्यवस्था आदि में आने वाले व्यय मानक का निर्धारण एस० एल० ओ० के माध्यम से होगा । भी० ई० सी ० के सदस्यों का प्रशिक्षण डी० आर० यू० के माध्यम से स्थानीय स्तर पर ही कराई जाय । जिसके खर्च का वहन बी० ई० पी० बजट प्रावधान के अनुरूप करेगी ।

संस्था की जिम्मेवारी होगी कि भी० ई० सी० के सदस्यों के सहयोग से ऐसा वातावरण निर्माण करें, जिससे बुनियादी विद्यालय के जीर्णोद्धारा में जन सहयोग प्राप्त हो सके ।

स्वयंसेवी संस्था के निर्देशन में भी० ई० सी ० के माध्यम से ही बुनियादी विद्यालय के सभी कार्य कलापों का एवं बी० ई० पी० द्वारा उपलब्ध करायी जा रही सुविधाओं, भवन निर्माण एवं मरम्मति संबंधी कार्य, शिक्षकों का निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण संबंधी कार्य किये जाये ।

भी० ई० सी का दायित्व होगा कि वे डी० आर० यू० की देख-रेख में स्थानीय सेवानिवृत्त शिक्षक एवं ऐसे योग्य व्यक्ति जो शिक्षित हो ,एवं आयु सीमा पार करने के उपरान्त नौकरी नहीं प्राप्त कर पाये हों, साथ ही शिक्षा में रूचि रखते हो उन्हें बुनियादी विद्यालय में शिक्षण कार्य करने हेतु भी० ई० सी० के माध्यम से चयन किया जा सकता है । चयन प्रक्रिया का निर्धारण एस० एल० ओ० के माध्यम से किया जा सकता है । प्रत्येक विद्यालय के लिए पाँच व्यक्ति शिक्षण कार्य के लिए चयन किए जा सकते हैं, जिनको 500/= रूपये पारिश्रमिक के रूप में भुगतान किया जा सकता है ।

चयनित शिक्षकों का प्रशिक्षण डी0 आर0 यू0 के माध्यम से कराया जा सकता है, जिसके लिए बजट प्रावधान अनुदेशकों के प्रशिक्षण के समान किया जा सकता है। विद्यालयों के स्थायी शिक्षकों का प्रशिक्षण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समान बजट प्रावधान के अनुरूप में डायट में कराया जा सकता है।

प्राथमिक विद्यालय के भवन निर्माण एवं मरम्मती की प्रक्रिया को बुनियादी विद्यालय के मामले में भी अपनाया जा सकता है। यदि मान्य हो तो जहाँ भवन नहीं है, प्राथमिक विद्यालय के मॉडल का भवन निर्माण कराया जा सकता है। लोक भागीदारी एवं अन्य प्रावधान समान होंगे शौचालय एवं चापाकल की व्यवस्था भी प्राथमिक विद्यालय के समान वी0 सी0 के माध्यम से डी0 आर0 यू0 के देख-रेख में करायी जा सकती है।

परियोजना के द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के समान ही बुनियादी विद्यालय को पुस्तक, टेस्ट बुक, किट्स, उपस्कर आदि की आपूर्ति भी0 ई0 सी0 के माध्यम से स्वयंसेवी संस्था (डी0 आर0 यू0) की देख-रेख में की जा सकती है।

जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देशित किया जा सकता है कि बुनियादी विद्यालय में जमा कोष को विद्यालय हित में अर्थात निर्माण एवं मरम्मति कार्य हेतु भी0 ई0 सी0 को उपलब्ध करावें। इस संबंध में एस0 एल0 ओ0 मार्ग निर्देश निर्धारित कर सकते हैं। स्थायी शिक्षकों की नियुक्ति हेतु माध्यमिक शिक्षा कार्यालय को निर्देशित कर सकते है।

इन सभी कार्यों के लिए एस0 एल0 ओ0 कार्य योजना के साथ साथ बजट प्रावधान कर बी0 ई0 पी0 कार्यालय को उपलब्ध करा सकते हैं। यदि मान्य हो तो इसी वर्ष से कार्य का प्रारंभ कराया जा सकता है।

परिशिष्ट - 7

विद्यालय पुनर्जीवन कार्यक्रम

दोन क्षेत्र (रामनगर प्रखण्ड) के नौरंगिया और बनकटवा- दो पंचायतों के अन्तर्गत बंद पड़े 10 राजकीय प्राथमिक एवं 1 मध्य विद्यालय को पुनर्जीवित करने का कार्यक्रम ।

डाकुओं के आतंक से इस पीड़ित क्षेत्र के 11 विद्यालय पिछले कुछ वर्षों से बंद हैं । फलतः यहाँ के बच्चे प्राथमिक शिक्षा की सुविधा से वंचित हैं। पश्चिम चम्पारण में चलाये जा रहे सी0 बी0 सी0 एस0 कार्यक्रम (यूनिसेफ द्वारा पोषित) से रामनगर प्रखण्ड भी लाभांवित है । अतएव इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गठित की जा रही महिला समूहें इन बंद पड़े विद्यालयों में शिक्षाकर्मियों के सहयोग से नवजीवन का संचार करेंगी ।

कार्यक्रम की रूपरेखा :-

11 बंद पड़े विद्यालयों को पुनर्जीवित करने के केन्द्र में शिक्षाकर्मी होंगे । सी0 बी0 सी0 ए स0 के अन्तर्गत गठित महिला समूह अपने विद्यालय के लिए दो शिक्षाकर्मियों का चयन करेंगी । इस तरह इन 11 विद्यालयों के पड़ोस की महिला समूह दो-दो शिक्षाकर्मियों का चयन करेंगी । इन 22 चयनित शिक्षाकर्मियों को जिला संसाधन एकक रीड, बेतिया में 20 दिवसीय (10+10) आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

महिला समूह के सहयोग से शिक्षाकर्मी ग्रामीणों से सम्पर्क, प्रभात-फेरी, बैठकें आदि आयोजित कर शिक्षा का वातावरण बनायेंगे ताकि विद्यालय में बच्चों का नामांकन हो सके ।

महिला समूह के सहयोग एवं निगरानी में ये शिक्षाकर्मी कार्यरत रहेंगे ।

शिक्षाकर्मी पर होने वाले व्यय का विवरण-

शिक्षाकर्मी की कार्यावधि एक वर्ष की होगी ।

1. 20 दिवसीय प्रशिक्षण 30 रु प्रतिदिन प्रति व्यक्ति आवास सह भोजन -	
20 x30 x22 =	13200.00
2. प्रशिक्षण अवधि में 10 रु प्रतिदिन प्रति व्यक्ति को सहायता-	
20 x10 x22=	4400.00
3. प्रशिक्षण सामग्री एवं संदर्भ व्यक्ति का मानदेय प्रतिभागी प्रतिदिन 5 रु-	
20 x 5 x 22=	2200.00
4. शिक्षाकर्मी का मानदेय प्रति शिक्षाकर्मी- प्रतिमाह 500 रु	
22 x 12 x 500 =	132000.00
5. अन्यान्य खर्च-	5000.00
कुल योग-	156800.00

3.2. अनौपचारिक शिक्षा

3.2.1. पृष्ठ भूमि :-

ऐसे बालक-बालिकाएँ जो प्राथमिक विद्यालय का लाभ नहीं उठा पाये या जिन्होंने विद्यालय में भर्त्ती के बाद अपनी प्राथमिक शिक्षा बिना पूरा किए छोड़ दी ,जिनकी आयु सीमा 6-14 के हों और आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से पिछड़े हो उनके सर्वांगीण विकास हेतु बिहार शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य प्राथमिकता के आधार पर देना है । इस प्रकार के ग्रामों, बस्तियों, टोलों आदि की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है जहाँ विद्यालय उपलब्ध नहीं हो तथा विद्यालय खोलने का पर्याप्त औचित्य नहीं बनता हो,उन स्थानों में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र स्थापित कर शिक्षा देने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है ।

पश्चिम चम्पारण जिले में लगभग ढाई लाख ऐसे बच्चे-बच्चियाँ हैं जो औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह गए हैं अथवा छीजनग्रस्त हैं । शिक्षा परियोजना के तहत इस प्रकार के बच्चे-बच्चियों को खासकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, विकलांग, महिलाएँ, भीख माँगनेवाले तथा भटकने वालों के लिए भरपूर शैक्षिक विकास करना है जिससे ये साक्षर हो सके ।

3.2.2. अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य :-

बिहार शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत निम्न श्रेणी के सभी बालक-बालिकाओं के लिए उनकी सुविधा के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था करना है -

§क§ ऐसे कामकाजी बच्चे-बच्चियों को जो ईंट-भट्ठा में काम करते हैं, गाय, बकरी चराते हैं, बच्चा सम्भालते हैं अथवा खेत-खलिहान तथा पुस्तैनी कामों में माता-पिता का हाथ बंटाते हैं ।

§ख§ वे बालिकाएँ जो सामाजिक संकीर्णता अथवा पारिवारिक आवश्यकताओं के कारण घर में ही रहती हैं ।

§ग§ वे बालक-बालिकाएँ जो 9-14 वय वर्ग के हैं और प्राथमिक शाला में भर्त्ती के लिए उपर्युक्त हैं या जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले पाठशाला छोड़ दी ।

§घ§ सतत् शिक्षा जारी रखने में असमर्थ बच्चे-बच्चियों को अनौपचारिक शिक्षा द्वारा शिक्षा सुलभ कराना जिसमें वे आजीवन अच्छे नागरिक बने रहें ।

§ङ§ बच्चों के लिए इस वैकल्पिक शिक्षा के स्वास्थ्य हेतु समुदाय में जागरूकता पैदा करना ।

3.2.3. 31-12-94 तक अद्यतन स्थिति

§1§ 12 की-रिसोर्स पर्सन, 80 मास्टर ट्रेनर एवं 486 अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशकों का प्रशिक्षण सम्पन्न ।

§2§ 486 केन्द्र कार्यरत हैं जिनमें कुल 12,150 बालक/बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं ।

§3§ अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर पठन-पाठन सामग्रियों की आपूर्त्ति एवं अन्यान्य व्यय हेतु आवश्यक राशि सम्बद्ध स्वयं-सेवी संस्थाओं को उपलब्ध करा दी गयी है और उनके माध्यम से केन्द्रों पर पठन-पाठन सामग्रियाँ आदि बिहार शिक्षा परियोजना कार्यालय से उपलब्ध कराये गये व्यय मानक के अनुसार उपलब्ध करायी गयी हैं/करायी जा रही हैं ।

§4§ अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों से निरन्तर बालक/बालिकाओं को औपचारिक विद्यालयों में नामांकन कराया जा रही है ।

§5§ महिला समाख्या द्वारा संचालित 26 जगजगी केन्द्रों पर 650 बालक/बालिकाएँ अध्ययन कर रही हैं ।

§6§ पंचायत स्तर पर बाल दिवस एवं अन्य शुभ अवसरों पर बाल मेला कार्यक्रम के तहत अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के बालक/बालिकाएँ वाद-विवाद प्रतियोगिता, क्रीड़ा प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, निबन्ध प्रतियोगिता, लोक गीत एवं नृत्य, सामुदायिक सफाई आदि के कार्यों में उल्लासपूर्वक प्रदर्शन कर रहे हैं । ये कार्यक्रम स्वयंसेवी संस्थाएँ आयोजित करती हैं और बच्चों को पुरस्कृत भी करती हैं ।

§7§ बिहार शिक्षा परियोजना जिला कार्यालय के पदाधिकारी द्वारा जिला संसाधन एकक के प्रतिनिधि के साथ मिलकर केंद्रों का निरीक्षण एवं अनुश्रवण का कार्य सम्पन्न किया जा रहा है और प्रभावी सिद्ध हुआ है ।

3.2.4. लक्ष्य एवं उपलब्धि 1993-94

वर्ष 1993-94 के पूर्व प्रयोग के तौर पर स्वयंसेवी संस्थाओं तथा अन्य माध्यमों से लगभग 1100 केन्द्र संचालित किये गये । स्वयंसेवी संस्थाओं तथा लाभग्राही जन समुदाय में इसके प्रति काफी उत्साह देखा गया और एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ । इसी बीच बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् से निर्देश प्राप्त हुआ कि परियोजना के अन्तर्गत प्रशिक्षित अनुदेशकों के द्वारा केन्द्र संचालित होंगें । 1993-94 में एक हजार केन्द्र खोलने का लक्ष्य रखा गया । सम्प्रति 486 प्रशिक्षित अनुदेशकों के द्वारा केन्द्र संचालित हो रहे हैं । लक्ष्य तक पहुंचना अभी बाकी है । इस दिशा में प्रयास जारी है और लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होने का एक प्रमुख कारण है 1993-94 में प्रशिक्षण सामग्री (अनुदेशक संदर्शिका) का विलम्ब से प्राप्ति । वर्ष के अन्त तक 1000 लक्षित केन्द्रों के माध्यम से 25,000 बालक/बालिकायें लाभान्वित हो सकेगी ।

3.2.5. कार्यान्वयन 1993-94

1. स्वैच्छिक संस्थाओं की भागीदारी :- अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना के प्रथम चरण में मुख्य रूप से नौतन, चनपटिया और बगहा-2 प्रखंडों को गहन कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत और बेतिया, मझौलिया, बैरिया, मैनाटांड और गौनाहा प्रखण्डों में विश्वसनीय एवं सराहनीय कार्यों में संलग्न स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित की गयी । केन्द्रों के चयन करते समय मुख्य रूप से अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति बाहुल्य क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

2. प्रशिक्षण संरचना :- सर्वप्रथम की-रिसोर्स पर्सन को राज्य स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण वर्ग के माध्यम से प्रशिक्षित कराया गया । इनके द्वारा जिला स्तर पर मास्टर ट्रेनरों को प्रशिक्षण दिया गया । की-पर्सन एवं मास्टर ट्रेनरों ने मिलकर अनुदेशकों को प्रशिक्षित किया ।

3. अनुदेशक प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दु :-

(क) बच्चों को "हम भी पढ़ेंगे" और न्यूनतम अधिगम स्तर पर

आधारित पढ़े-बढ़े भाग-। के पाठों में निहित दक्षताओं एवं कुशलताओं की सम्प्राप्ति कराने हेतु अनुदेशकों में आवश्यक क्षमता का विकास ।

(ख) सहभागितापूर्ण प्रशिक्षण :- केन्द्र को रोचक बनाने हेतु विविध शैक्षिक गतिविधियाँ जैसे- भावगीत, साक्षरता गीत, नुक्कड़ नाटकों, शैक्षिक क्रीड़ा आदि के संचालन की क्षमता का विकास ।

(ग) स्थानीय सामग्रियों का निर्माण :- बच्चों को गिनती सिखाने के लिए मिट्टी की गोलियां बनाने आदि जैसी सहज शिक्षण उपादान के निर्माण की ओर अनुदेशकों का ध्यान खींचा गया ।

(घ) केन्द्र संचालन का व्यावहारिक प्रयोग एवं अन्यास:- सभी अनुदेशकों ने ग्रुपों में बारी-बारी से आधे घंटे का नमूना वर्ग प्रस्तुत किया ।

(ङ) लक्ष्य प्राप्ति के लिए मिशन भावना का संचार ।

4. कार्यक्रम का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन :- अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के कुशल संचालन हेतु विभिन्न स्तर पर अनुश्रवण एवं मूल्यांकन की व्यवस्था की गयी है ।

(क) बिहार शिक्षा परियोजना जिला कार्यालय द्वारा गठित

निम्नप्रकार के निरीक्षण दलों द्वारा केन्द्रों का निरीक्षण एवं मार्गदर्शन किया जाता है :-

(i) बिहार शिक्षा परियोजना के पदाधिकारियों द्वारा

(ii) जिला कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के द्वारा

(iii) जिला संसाधन एकक के प्रतिनिधियों के द्वारा

(ख) "की-पर्सन" एवं मास्टर ट्रेनर द्वारा अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों का निरीक्षण एवं मार्गदर्शन ।

(ग) पर्यवेक्षकों एवं सम्बद्ध स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा

(घ) महिला समाख्या प्रभाग के साधन सेवियों एवं सहयोगिनियों द्वारा

(ङ) निरीक्षणोपरान्त पाई गई कमियों को दूर किया गया है एवं केन्द्र संचालन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि हुई है ।

(च) अनुश्रवण को प्रभावी रूप देने हेतु विभिन्न प्रपत्रों के संधारण और अनुश्रवण प्रतिवेदन की प्रस्तुती के लिए आवश्यक प्रशिक्षण सम्बद्ध व्यक्तियों को दिए गए हैं ।

5. लोक भागीदारी :- प्रखण्ड एवं पंचायत स्तर पर लोक-भागीदारी हेतु एवं वांछित वातावरण तैयार करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जैसे-बाल मेला, साक्षरता दिवस

स्वतंत्रता दिवस, नुक्कड़, नाटक, क्रीड़ा प्रतियोगिता, लोक गीत एवं नृत्य, ग्रामीणों एवं अभिभावक सम्मेलन, ग्राम सभा का आयोजन आदि ।

6. मानदेय एवं पठन-पाठन सामग्री :- अनुदेशकों के मानदेय का भुगतान स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से नियमित रूप से हो रहा है । केन्द्रों पर आवश्यक पठन-पाठन सामग्रियों को उपलब्ध कराने हेतु जिला परियोजना कार्यालय के द्वारा निर्गत नमूने के व्यय-मानक के अनुसार उपलब्ध कराने हेतु धन राशि स्वयंसेवी संस्थाओं को उपलब्ध करा दिए गए हैं और उनके द्वारा केन्द्रों पर वे सामग्रियाँ पहुँचा दी गयी हैं अथवा पहुंचाने की व्यवस्था हो रही है ।

7. अनुदेशकों एवं पर्यवेक्षकों की बैठक :- अनौपचारिक शिक्षा अभियान की गुणवत्ता एवं गति बनाये रखने हेतु विभिन्न स्तर पर परियोजना कार्यालय एवं स्वयंसेवी संस्था के मुख्यालय में बैठकों का आयोजन नियमित रूप से होता है ।

3.2.6. कार्यक्रम संचालन के पूर्व की स्थिति

बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा संचालित अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था के पूर्व की स्थिति निम्नवत् थी :-

1. बहुसंख्यक लोगों में शिक्षा के प्रति रूझान की कमी ।
2. शिक्षा के प्रति चेतना एवं अपेक्षित विश्वास का अभाव ।
3. बच्चे एवं अभिभावक की उदासीनता ।
4. अन्धविश्वास एवं शिक्षा के लाभ-हानि के प्रति भ्रामक एवं गलत दृष्टिकोण ।
5. छीजन का अधिक दर ।
6. महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली वांछित सुविधाओं का अभाव ।

3.2.7. कार्यक्रम संचालनोपरान्त स्थिति

1. शिक्षा के प्रति रुझान :- बिहार शिक्षा परियोजना जिला कार्यालय द्वारा संचालित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों से पूर्व भी लगभग 1100 केन्द्रों का संचालन किया गया था लेकिन अनुदेशकों को मानदेय का भुगतान नहीं करने तथा पठन-पाठन सामग्रियों के अनियमित वितरण के कारण स्वयंसेवी संस्थाओं एवं उनके कार्यकर्त्ताओं में स्वभाविक रूप से शिथिलता और उदासीनता व्याप्त थी । बिहार शिक्षा परियोजना के द्वारा मानदेय एवं पठन-पाठन सामग्रियों की आपूर्त्ति से स्वयंसेवी संस्थाओं एवं उनके कार्यकर्त्ताओं में विश्वास का सृजन हुआ है । जन-समुदाय में भी नवीन चेतना का जागरण हुआ है, जिससे केन्द्रों पर समुचित संख्या में बालक-बालिकायें अध्ययन कर रही हैं ।

2. लोक भागीदारी :- अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति विशेषकर वंचित वर्ग में विश्वास दृढ़ हो जाने से अपार जन सहयोग मिल रहा है । ग्राम शिक्षा समितियों का गठन अधिकांश गांव में हो गयी हैं और उनके सदस्यों से सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है । ग्रामीणों, महिलाओं एवं अभिभावकों में अन्धविश्वासों से मुक्त होने की चेष्टायें जारी है और जगजगी केन्द्रों पर बालिकाओं की उपस्थिति से हम प्रोत्साहित हो रहे हैं ।

3. नामांकन में वृद्धि :- अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के सफल संचालन एवं उनके बच्चों के द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के फलस्वरूप स्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ है और औपचारिक विद्यालयों में भी नामांकन दर को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है ।

4. बाल केन्द्रित शिक्षण :- बिहार शिक्षा परियोजना की कार्य-योजना में बतायी गयी बाल केन्द्र शिक्षण विधि काफी सहयोगी सिद्ध हुयी है । इससे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र काफी रोचक ढंग से संचालित हो रहे हैं ।

5. जिले में क्षेत्रीय स्तर पर आगे बढ़ने की ललक :- स्वयंसेवी संस्थाओं तथा उनके कार्य-कर्त्ताओं में एक आश्चर्यजनक प्रतियोगिता भावना का उदय हुआ है । फलस्वरूप अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ शिक्षा के लिए कार्य करने हेतु प्रत्यासी हैं ।

6. महिलाओं एवं वंचित वर्ग के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति विशेष जागरूकता :-

महिला समाख्या के सफल प्रयासों के फलस्वरूप महिला अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का उदय और स्वयंसेवी

संस्थाओं के कार्यक्रमों से सभी वर्ग के अभिभावकों में विशेष जागरूकता देखने को मिल रही है ।

7. अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र के बच्चोंमें जाँगरूकता और शिक्षा प्रेम:-

बाल केन्द्र शिक्षण विभिन्न शिक्षण उपादान, खेल-कूद के माध्यम से शिक्षण एवं विभिन्न आयोजनों एवं प्रतियोगिताओं और पुरस्कार वितरण से बच्चों में एक जागृति पैदा हुयी है । शिक्षा के प्रति प्रेम बढ़ा है और आत्मविश्वास पैदा हुआ है । इससे अनुदेशक भी अति अल्प मानदेय पर भी उत्साहपूर्वक अपने दायित्वों के प्रति उत्साहित हैं ।

ACHIVEMENTS AT A GLANCE	
* Key Resource Persons Trained --	12
* Master Trainess Trained --	80
* Supervisors Trained --	63
* Instructors Trained --	486
* NFF Centres Functioning --	486

3.2.8. कार्य योजना, 1994-95

इस वर्ष 2000 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र संचालित करने का हमारा लक्ष्य है। इन केन्द्रों के माध्यम से 50,000 और बालक-बालिकाएँ प्राथमिक स्तरीय शिक्षा प्राप्तकर सकेंगें। प्रस्तावित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र संचालन हेतु स्थानीय एवं विश्वसनीय स्वयंसेवी संस्थाओं को जिम्मे केन्द्रों के संचालन की जिम्मेवारी सौंपी जाएगी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 2000 अनुदेशक और 200 पर्यवेक्षकों को वांछित गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण दिया जाएगा और प्रोत्साहन हेत अच्छे कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। शिक्षार्थियों के लिए पठन-पाठन सामग्रियां और अनुदेशकों के मानदेय नियमित रूप से उपलब्ध कराये जाएगें। कुशल अनुश्रवण प्रक्रिया के द्वारा अपेक्षित निरीक्षण एवं मार्गदर्शन की जाएगी।

भौतिक आच्छादन

वर्ष 1994-95 में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों को चार अतिरिक्त प्रखण्डों, (रामनगर, लौरिया, नरकटियागंज और बगहा-I) में प्रारम्भ किया जाएगा। इसके अतिरिक्त पूर्व से संचालित प्रखण्डों में भी सघन एवं पूर्ण आच्छादन हेतु केन्द्रों का विस्तार किया जाएगा।

प्रशिक्षण

इस वर्ष 2000 के नये केन्द्रों के लिए अनुदेशकों के 12+10+8 दिवसीय प्रशिक्षण चर्चायें आयोजित की जाएगी तथा 1993-94 के अनुदेशकों के लिए भी 10+ 8 दिवसीय प्रशिक्षण चर्चायें आयोजित की जाएगी । इन चर्चाओं हेतु आवश्यक की-पर्सन को राज्य स्तरीय प्रशिक्षण द्वारा और नये मास्टर ट्रेनरों को जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित करना होगा । पूर्व प्रशिक्षित की-पर्सन, मास्टर ट्रेनर एवं अनुदेशकों के लिए भी रिफ्रेसर कोर्स आयोजित किये जाएगें । सभी प्रशिक्षण आवासीय होगें और दक्ष तथा गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण व्यवस्था की जाएगी ।

पारितोषिक

अनुदेशकों तथा पर्यवेक्षकों के उत्साहवर्द्धन हेतु कौशल एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के आधार पर पुरस्कार की व्यवस्था की जाएगी । साथ में उन्हें प्रशस्ति-पत्र भी दिए जायेंगे ।

स्वास्थ्य कार्यक्रम

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था की जायेगी । उनमें स्वस्थ आदतों के विकास हेतु वांछित शिक्षा का प्रबन्ध किया जायेगा । प्राथमिक उपचार की विधियों से अवगत कराया जाएगा तथा टीकाकरण की भी व्यवस्था की जायेगी ।

कार्यशाला

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के सफल संचालन हेतु विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया जायेगा ।

3.2.9. रणनीति (1994-95)

शिक्षा के सार्वजनिकरण की दिशा में अनौपचारिक शिक्षा का स्थान आवश्यक ही नहीं अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इस पुनीत अभियान की सफलता हेतु वर्ष 1994-95 की कार्ययोजना को प्रभावी एवं सशक्त बनाने के लिए सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित क्रियान्वयन की आवश्यकता है और बिहार शिक्षा परियोजना पश्चिम चम्पारण इसके प्रति प्रतिबद्ध ही नहीं सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ दृढ़ संकल्प है । अतएव हमारी रणनीति भी उसी के अनुरूप निर्धारित की गयी है ।

1. लोक भागीदारी एवं वातावरण निर्माण :- लोक भागीदारी के अन्तर्गत ग्राम शिक्षा समिति को संगठित किया जाएगा । उनके सदस्यों को प्रशिक्षित किया जाएगा और ऐसा वातावरण का सृजन किया जाएगा जो बच्चों को केन्द्र पर आने के लिए केवल प्रेरित ही नहीं करें बल्कि उन्हें लाभान्वित भी करें । अभिभावकों को भी प्रेरित करने हेतु आवश्यक साधनों का समुचित उपयोग किया जाएगा ।

2. स्वयंसेवी संस्थाओं की सहभागिता :- कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रेरक क्रिया-कलापों के लिए उनकी दक्षता एवं गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए प्रयासों के साथ-

साथ नवीन कार्य कुशल स्वयंसेवी संस्थाओं की पहचान की जायेगी और उनका सहयोग सुनिश्चित किया जाएगा ।

3. कार्यक्षेत्र का विस्तार :- वर्त्तमान में कार्यरत 8 प्रखण्डों के अतिरिक्त 4 और प्रखण्डों में भी अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का विस्तार किया जाएगा ।

4. जगजगी केन्द्र :- महिला समाख्या के द्वारा वर्त्तमान में संचालित 30 जगजगी केन्द्रों के अतिरिक्त 70 और जगजगी केन्द्र संचालित किये जाएगें और अनुश्रवण की व्यवस्था की जाएगी ।

5. न्यूनतम अधिगम स्तर :- स्तरीय प्रशिक्षण के द्वारा सर्वव्यापी उपलब्धि हेतु न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति पर विशेष बल दिया जाएगा ।

6. अनुदेशकों एवं पर्यवेक्षकों का चयन :- अनुदेशकों एवं पर्यवेक्षकों का चयन काफी सावधानीपूर्वक करना होगा क्योंकि उनकी कार्यकुशलता पर ही इस अभियान की सफलता निर्भर करती है ।

7. अनौपचारिक शिक्षाकर्मियों का प्रशिक्षण :- अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े सभी प्रकार के कर्मियों के लिए कुशल और उत्तम कोटि के नियमित प्रशिक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी । नवाचार एवं अभिनव शैलियों के प्रयोग किये जाएगें ।

8. बालिकाओं को प्राथमिकता :- पश्चिम चम्पारण जिले में महिला साक्षरता का प्रतिशत् केवल 12% है । अत: अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से महिला शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी ।

9. मूल्यांकन :- अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियों के सतत् मूल्यांकन की समुचित व्यवस्था की जाएगी । जिससे उनमें प्राथमिक स्तरीय शिक्षा की वांछित उपलब्धि दो वर्ष की समय सीमा के अन्दर हो सके ।

ACTION PLAN 94- 95 AT A GLANCE	
* New NEE CENTRES	2,000
*Beneficiaries --	50,000
* Extension of Work in New Blocks --	04
* Training of Instructors --	2,000
* Training of Supervisors --	200
* Training of Master Trainer --	25
* Refresher Training of Master Trainer--	80
* Refresher Training of Instructors --	1,000
* Refresher Training of Supervisors --	100
* Awards to Instrutors --	100
* Awards for Supervisors --	30

परिशिष्ट-5

जिले में प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति (दिसंबर 94 तक)

क्रमांक	स्वयंसेवी संस्था	केन्द्र सं0	शिक्षुसंख्या	अभ्युक्ति
1.	"रीड" , बेतिया	105	2625	
2.	दलित शिक्षा एवं विकास संस्था, रतनपुरवा -	94	2350	
3.	महाकवि चन्दवरदायी स्मारक समिति , शिकारपुर ----	05	125	
4.	पटना नोट्रेडम सिस्टर्स सिस्टर्स सोसायटी, गहिरी ----------28		700	
5.	संत तेरेसा प्राथमिक शिक्षक प्रशि0 महा0 , बेतिया-	07	175	
6.	प्रखण्ड भारत सेवक समाज, चनपटिया । -------	05	125	
7.	आधार , बेतिया -	30	750	
8.	दीप, नवलपुर , योगापट्टी।---	19	475	
9.	अधिसूचित क्षेत्र शिक्षा विकास समिति, चनपटिया------	60	1500	
10.	सामाजिक शोध एवं विकास केन्द्र, सिसवा बसंतपुर। ----	30	750	

क्रमांक	स्वयंसेवी संस्था	केन्द्र सं0	शिशुधु सं0 अभ्युक्ति
11.	पूर्वी बंगला शरणार्थी समिति, बेतिया । -	48	1200
12.	महिला समाख्या, बिहार शिक्षा परियोजना , बेतिया-------	26	650
13.	प्रजापति शिक्षा विकास समृद्धि संस्थान, बेतिया । ------	29	725
	कुल ---	486	12,150

2.3. प्रशिक्षण

पृष्ठभूमि

बिहार शिक्षा परियोजना की धुरी शिक्षक है। ऐसी संकल्पना की गयी है । राष्ट्र निर्माता शिक्षकों की भूमिका केवल शैक्षिक विकास में ही नहीं बल्कि सर्वांगीण विकास करने में उनकी उल्लेखनीय योगदान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है । आज के पारिवारिक हाल में या सामाजिक विकृति में नैतिक शिक्षा का अभाव दिख रहा है । शिक्षक सेवा में आने के पूर्व जो प्रशिक्षित हैं । उन्हें बदलते हुए पाठ्यक्रम एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप प्रशिक्षित नहीं किया गया है । इसलिए ही शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वहण ठीक से नहीं कर रहे हैं । अतः 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण के द्वारा यह कोशिश की जा रही है कि शिक्षक अपने गुरुतर उत्तरदायित्वों को नजदीक से समझें और बच्चों में प्रारंभ से ही नैतिक मूल्यों को उनके मस्तिष्क में भरें ताकि राष्ट्र के चतुर्दिक विकास की गतिविधियों में उनकी सहभागिता सुनिश्चित की जा सके ।

3•3•2 - औपचारिक प्रशिक्षण

मार्च 94 तक इस जिले के 399 शिक्षक 10 दिवसीय और 913 शिक्षक (10+1) दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर लेंगे । विदित हो कि वर्ष 1992-93 में 615 शिक्षकों को 10 दिवसीय प्रशिक्षित कर दिया गया था । वर्ष 1994-95 में शेष पूर्व में 10 दिवसीय-प्रशिक्षित शिक्षकों को 11 दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी है । साथ ही 2000 (दो हजार) नये प्राथमिक शिक्षकों का 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण दिये जायेंगे । उक्त दोनों प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग तथा उसकी देखरेख में नये शिक्षण संस्थानों में प्रदान किये जायेंगे ।

प0 चम्पारण में 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण का भरपूर प्रभाव शिक्षकों पर पड़ा है । शिक्षक प्रशिक्षण से लौटकर अपने कार्य के प्रति केवल समर्पित ही नहीं हुए है बल्कि कक्षा प्रथम से पंचम तक के पाठ्यक्रमों एवं न्यूनतम अधिगम स्तर के 30/30 का अनुपात प्राप्त करने में अपनी सक्रिय भागीदारी दे रहे हैं नतीजा साफ-साफ झलकने लगा है । विद्यालयों में नामांकन का दर बढ़ा है । रिटेंशन का महत्व को दृष्टिगोचर होने लगा है । शिक्षा से अभी दलित वर्ग के व्यक्ति भी अपने बच्चे/बच्चियों को विद्यालय में भेजने लगे है । शेष प्राथमिक शिक्षकों को भी वर्ष 1995-96 में 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान कर दिये जायेंगे । सभी प्रशिक्षण आवासीय रूप से संचालित हो रहे है।

3·3·3 – वर्ष 1993-94 में 90 मध्य विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग में 5 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है। उक्त प्रशिक्षण के दौरान उन्हें संकुल प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के साथ समन्वयक जैसी भागीदारी, ग्राम शिक्षा-समिति के सदस्यों से तालमेल रखने, विद्यालय प्रबन्धन के साथ-साथ लेखा संबंधी भी जानकारी दी जाती है। वर्ष 1994-95 में शेष 141 मध्य विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को 5 दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है।

3·3·4- प0 चम्पारण के 21 शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों को 5 दिवसीय एवं 100 ग्राम शिक्षा समिति के अभिप्रेरकों को दो दिवसीय प्रशिक्षण वर्ष 1993-94 में दिया गया है। समय-समय पर कार्य की उपयोगिता को देखते हुए शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों का उन्मुखीकरण दिया जाता है। वर्ष 1994-95 में 490 ग्राम शिक्षा समिति के प्रशिक्षण की व्यवस्था जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग में की जायेगी।

इस प्रकार से प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का उद्देश्य यह है कि शिक्षकों का उन्मुखीकरण सही रूप में हो , शिक्षा के प्रति समर्पण की भावना का विकास हो , शिक्षा में गुणवत्ता आये । सामाजिक परिवेशों के अनुरूप शिक्षक शैक्षिक उपादानों का समुचित निर्माण करने के साथ-साथ ग्राम शिक्षा समिति के साथ भागीदारी करके विद्यालय को आकर्षण का केन्द्र बनायें । प्रशिक्षण का दिनचर्या अवलोकनीय है ।

प्रशिक्षण के दौरान प्रातःकालीन प्रार्थना व्यायाम ,एवं आसन, राष्ट्रगीत ,संविधान की प्रस्तावना ,समाचार पाठ ,शैक्षिक उपकरण का निर्माण ,बिहार शिक्षा परियोजना एवं प्रशिक्षण से संबंधित पत्र चित्र की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम ,स्वाध्याय एवं दैनिक प्रतिवेदनों का प्रस्तुतीकरण सामूहिक रूप से होता है ।

प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों /मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापकों/ शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों एवं ग्राम शिक्षा समिति के अभिप्रेरकों का दिनांक 7•2•94 तक के की संख्या - --

क्रमांक	वित्तीय वर्ष	प्रशिक्षण का प्रकार	पुरूष	महिला	योग
1•	92–93	10 दिवसीय	526	89	615
2•	93–94	10 दिवसीय	297	40	337
3•	93–94	11 दिवसीय	490	71	561
4•	93–94	म0 वि0 के प्र0 अ0 - 5 दिवसीय	86	04	90
5•	93–94	ग्राम शिक्षा समिति के अभिप्रेरक-- डेढ़ दिवसीय	47	02	49

10/11 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण का दिनचर्या

टिप्पणी :- प्रत्येक चर्या के रविवार को शैक्षिक भ्रमण होगा । संध्या 5·30 बजे से दृश्य-श्रव्य होगा ।

5·00 बजे -	जागरण
5·00 बजे से 6·30-	नित्य क्रम, सफाई, स्नानादि
	योगाभ्यास/ व्यायाम ।
6·30 से 8·15-	स्वाध्याय
8·15 से 9·00 -	नास्ता
9·00 से 9·30	प्रार्थना/संविधान का प्रस्तावना/समाचार
9·30 से 10·30-	प्रशिक्षण चर्या- (1)
10·30 से 11·00-	चाय
11·00 से 12·00	प्रशिक्षण चर्या-(2)
12·00 से 01·00 -	प्रशिक्षण चर्या-(3)
1·00 बजे से - 2·00 -	भोजन एवं अल्प विश्राम
2·00 बजे से - 3·30 -	प्रशिक्षण चर्या (4)
3·30 से 5·00 -	प्रशिक्षण चर्या (5)
5·00 बजे से 5·30-	शिक्षाप्रयोगी मनोरंजक खेल
5·30 बजे से 6·00-	नास्ता
6·00 बजे से -7·00 -	अवकाश
7·00 बजे से - 8·00 -	प्रतिवेदन
8·00 बजे से -9·00-	स्वाध्याय/दृश्य श्रव्य
9·00 बजे से 10·00 -	रात्रि भोजन
10·00 बजे से -	शयन ।

3·3·5 - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान :-

जिला स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एक महत्वपूर्ण संस्था है । इसकी स्थापना कुमारबाग में की गयी है। जिला स्तर पर औपचारिक , अनौपचारिक शिक्षा , वयस्क शिक्षा, पूर्व प्राथमिक शिक्षा , पूर्व बालपन की देख-रेख , लोक भागीदारी एवं सतत् शिक्षा क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है । डी० आई०ई०टी० के मुख्य कार्य निम्न लिखित हैं :-

1· जिला स्तर पर शैक्षिक कार्यों का नियोजन और समन्वय स्थापित करना ।

2· स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्रियों का विकास करना ।

3· सेवा पूर्व और सेवा कालीन प्रशिक्षण ।

4· उन्मुखीकरण एवं कार्यशिविर द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षित करना ।

5· मूल्यांकन , शोध तथा मोनिटरिंग शाखा ।

6· शैक्षिक तकनीकि शाखा ।

7· पूर्व बालपन की देख-रेख तथा प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना ।

8· महिला सबलता की शाखा ।

9· वातावरण निर्माण एवं लोकभागीदारी शाखा ।

10· जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एक आवासीय इकाई के रूप में कार्यरत है । सभी कार्यरत सेवापूर्व तथा सेवा कालीन प्रशिक्षुओं को आवास कैम्पस परिसर में रहेगा । आवासीय व्यवस्था के अन्तर्गत स्वावलम्बन, सहयोग तथा स्वाध्याय पर विशेष बल दिया जायगा । पुस्तकालय , वाचनालय , प्रयोगशालायें , कम्प्यूटर एवं कार्यशालायें प्रशिक्षुओं के लिए हमेशा उपलब्ध रहेगी तथा उनको स्वाध्याय में सुविधा मिले तथा अन्य क्रियाशीलनों एवं प्रयोगात्मक कार्यों में स्पष्ट प्रगति को संप्राप्ति हो सके ।

3·3·6·जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को अधिक कार्यात्मक बनाने हेतु प्रस्ताव:-

1· प्राचार्य एवं व्याख्याताओं की नियुक्ति शीघ्रातिशीघ्र की जाय ।

2· संस्थान को भौतिक रूप से समृद्ध करने के क्रम में उपस्कर एवं साज-सज्जाओं की आपूर्ति की जाय।

3· निम्नलिखित भागों एवं कमरों की मरम्मती करायी जाय , ताकि

ताकि प्रशिक्षण में सुविधा हो सके ।

1. प्रशासनिक भवन के कमरे-	8 (आठ)
2. प्राचार्य आवास -	1 (एक)
3. क्वार्टरस्-	3 (तीन)
4. ब्लॉक -	2 (दो)
5. शौचालय -	21 (इक्कीस)
6. चापाकल-	2 (दो)
7. डायट के लिए गाड़ी -	1 (एक)
8. दूरभाष की व्यवस्था *	
9. जेनरेटर की व्यवस्था *	

================xxxxxxxxxx================

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग, प0 चम्पारण

सेवा कालीन शिक्षक प्रशिक्षण – 10 दिवसीय , दैनिक कार्यक्रम ।

समय दिनांक	9.00 से 9.30	9.30 से 10.30		11.00 से 12.00	12.00 01.00		2.00 से 3.30	3.30 से 5.00	5.00से 5.30		7.00से 8.00	8.00से 9.00
क्र0 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
प्रथम दिवस		निबन्धन एवं परिचय			बि0शि0प0 एक परिचय		डायट एक परिचय और अध्यापन के दौरान उनके द्वारा अनुभूत कठिनाईयाँ	प्रशिक्षण चर्या प्रतिभागियों को अपेक्षाएँ	शैक्षिक खेल		प्रतिवेदन	स्वाध्याय
द्वितीय दिवस		बि0शि0प0 की धुरी शिक्षक		शिक्षक क्या, क्यों, कैसे,	सबके लिए शिक्षा		बाल केन्द्रित शिक्षा	जनसंख्या शिक्षा	•	•	•	•
तृतीय दिवस		बि0शि0प0 और वैज्ञानिक मनोदशा		बाल केन्द्रित शिक्षा प्रबंधन और शिक्षण के संदर्भ में क्या, क्यों, और कैसे,	न्यूनतम अधिगम स्तर सामान्य चर्या		एम0एल0एल0 पर्यावरण	भाषा, गणित विषयवार चर्या	•		•	•
चतुर्थ दिवस	–	बि0शि0प0 और बालिका शिक्षा	–	सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा	खेल-खेल में भाषा शिक्षण	–	अंत्याक्षरी कथा, कहानी गीत, अभिनय, चित्रकम चर्या	गिज भाई शैक्षिक नवाचार के कुछ दृष्टान्त चर्या	•		•	•

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
पंचम दिवस		बि0शि0प0 और स्वास्थ्य कार्यक्रम		मनोरंजक गणित	खेल-खेल में गणित शिक्षण	-	एम0एल0एल0 और गणित		एम0एल0एल0 भाषा	शैक्षिक खेल	प्रतिवेदन	स्वाध्याय
षष्टम दिवस		बि0शि0प0 और अनौप0 शिक्षा		खेल-खेल में विज्ञान के रोचक प्रयोग	वैज्ञानिक दृष्टिकोण		एम0एल0एल0 और पर्यावरण		पर्यावरण से संबंधित शिक्षण उपादान	शैक्षिक खेल		
सप्तम दिवस		सतत् व्यापक मूल्यांकन		बि0शि0प0 और लोक भागीदारी	विद्यालय की आकर्षणका केन्द्र केन्द्र कैसे बनायें		मूल्यांकन गणित		मूल्यांकन भाषा			
अष्टम दिवस		बि0शि0प0 और ग्राम शि0समिति		ग्राम शिक्षा समिति स्वास्थ्य और कार्य	कार्ययोजना की तैयारी		मूल्यांकन पर्यावरण		माईक्रो प्लानिंग एवं स्कूल मैपिंग क्या क्यों और कैसे			
नवम दिवस		मेरा दि0 बच्चे और मैं		विद्यालय और स्वास्थ्य	कार्यअनुभव		कार्यानुभव बहुवर्गीय			मूल्यांकन	सांस्कृतिक कार्यक्रम	
दशम दिवस		मूल्यांकन		चर्या का मूल्यांकन	समापन समारोह		-		-	-	-	

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग, पo चम्पारण, बेतिया ।
सेवा कालीन शिक्षक प्रशिक्षण- ।। दिवसीय , दैनिक कार्यक्रम

समय / दिनांक	9.00से 9.30	9.30से 10.30	11.00 से 12.00	12.00 से 1.00	2.00 से 3.30	3.30 से 5.00	5.00से 5.30	7.00से 8.00	8.00से 9.00
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प्रथम दिवस		निबंधन			बि0शि0प0 एक परिचय	डायट एक परिचय	अनुभूत कठि-नाईयों की प्रश्नावली	1. भाषा 2. गणित 3. पर्यावरण		प्रतिवेदन	स्वाध्याय	
द्वितीय दिवस		गणित शिक्षण		पर्यावरण शिक्षण	भाषा शिक्षण	शैक्षिक प्रौधौगिकी	न्यूनतम अधिगम स्तर गणित	शैक्षिक खेल	"	"	"	
तृतीय दिवस	प	पर्यावरण शिक्षण	गणित शिक्षण	भाषा शिक्षण	विज्ञान प्रयोगशाला	एम0एल0एस0 पर्यावरण प्रश्न बनाना	"	"	"	
चतुर्थ दिवस		भाषा शिक्षण	पर्यावरण शिक्षण	गणित शिक्षण	"	एम0एल0एस0 भाषा प्रश्न बनाना	"	"	"	
पंचम दिवस		प्राथमिक स्तर पर कार्यानुभव	योग शिक्षा	सतत् मूल्यांकन	बाल केन्द्रित	शैक्षिक प्रौधौगिकी बहुवर्गीय	"	"	"	
षष्ट दिवस		शारीरिक शिक्षा	भाषा शिक्षा	जनसंख्या शिक्षा	"	"	"	"	"	

1	2	3	4	5	6	7	8	8	10	11	12	13	14
सप्तम दिवस		सतत् मूल्यांकन		गणित शिक्षण	सामाजिक शिक्षा		विज्ञान प्रयोगशाला	दक्षता आधारित मूल्यांकन	"		"	"	–
अष्टम दिवस		अनुभव कठिनाईयां		पर्यावरण शिक्षण	एम0एल0एल0 गणित		बाल केन्द्रित शिक्षा	शैक्षिक प्रौद्योगिकी	शैक्षिक खेल		प्रतिवेदन	स्वाध्याय	
नवम दिवस		गणित शिक्षण		सततमूल्यांकन [illegible]	दक्षता आधारित मूल्यांकन		एम0एल0एल0 पर्यावरण	प्रेरक प्रसंग	"		"	"	
दशम दिवस		पर्यावरण शिक्षण		स्वास्थ्य शिक्षा	एम0एल0एल0 भाषा		मूल्यांकन	मूल्यांकन	मूल्यांकन		सांस्कृतिक कार्यक्रम		
एकादश दिवस		भाषा शिक्षण		समापन समारोह	–		–	–	–		–	–	

बिहार शिक्षा परियोजना, प० चम्पारण, बेतिया।

5 दिवसीय प्रशिक्षण : दैनिक कार्यक्रम)

(शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों का प्रशिक्षण)

दिन	समय	विषय वस्तु/विधि
19·7·93	10·00 बजे से 11·00 बजे तक	प्रतिभागियों का निबंधन एवं उद्घाटन /[illegible]
	11·00 बजे से 11·45 बजे तक	बि० शि० प० से संबंधित प्रश्नावली/ उत्तर तैयार करना
	11·45 बजे से 12·30 बजे तक	बि० शि० प० की भूमिका/व्याख्यान एवं वार्तालाप
	12·30 बजे से 01·30 बजे तक	नामांकन अभियान / ग्रुप चर्चा
	01·00 बजे से 02·00 बजे तक	भोजन अवकाश
	02·00 बजे से 03·30 बजे तक	प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण/नामांकन अभियान ग्रुपों के नायकों द्वारा
	03·30 बजे से	शिक्षा समन्वयक पदाधिकारी/ स्थानीय प्रतिवेदन एवं समेकित प्रतिवेदन

दिन	समय	विषय वस्तु/विधि
28•7•93	10•00 बजे से 12•00 बजे तक	ग्राम शिक्षा समिति का गठन एवं कार्य गुरुगोष्ठि में वि०शि०प० के कार्यक्रमों पर विचार/स्वाध्याय छोटे समूह में कार्य समेकित प्रतिवेदन एवं विमर्श
	12•00 बजे से	जन सहयोग की भूमिका 1• विद्यालय भवनों का निर्माण। 2• विद्यालयों के सौन्दर्यीकरण एवं सुदृढ़ीकरण। 3• नामांकन /ग्रुप चर्चा
	01•00 बजे से 02•00 बजे तक	लंच अवकाश
	2•00 बजे से	1• नामांकन-अनुश्रवण, सबके लिए शिक्षा 2• अधिक नवीन अल्पव्ययी शिक्षण उपादान निर्माण एवं उपयोग /ग्रुप चर्चा।
	03•30 बजे से	03 1• प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण /समेकित प्रतिवेदन तैयार करना। 2• सूक्ष्म स्तरीय योजना एवं विद्यालय मानचित्र

दिन	समय	विषय वस्तु/विधि
21 7•93	10•00 बजे से	वितरण प्रणाली एवं पदाधिकारी की भूमिका
	12•00 बजे तक	1• पाठ्यपुस्तकों का वितरण 2• पुस्तकालय का निर्माण 3• इनोवेटिव आइटम का वितरण/ शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु नवीन उपादान ।
	12•00 बजे से	प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं समेकित
	01•30 बजे तक	प्रतिवेदन तैयार करना । बाल केन्द्रित शिक्षा
	01•30 बजे से	
	2•00 बजे तक	लंच अवकाश ।
	02•00 बजे से	शिक्षा कौशल का विकास
	03•30 बजे तक	न्यूनतम अधिगम स्तर (भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन) व्याख्यान एवं बातचीत
	03•00 बजे से	प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण/गुंज चर्चा एवं
	05•00 बजे तक	प्रतिवेदन तैयार करना ।

शैक्षिक विकास में अभिभावक एवं समुदाय की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने हेतु शिक्षा पदाधिकारी का कर्त्तव्य ।

दिन	समय	विषय वस्तु/विधि
22•7•93	10•00 बजे से	निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण बि0 शि0 प0
	11•30 बजे तक	के कार्यालय में /व्याख्यान एवं विमर्श
	11•30 बजे से	छात्र शिक्षक इकाई विद्यालयीय
	01•30 बजे तक	स्वास्थ्य कार्यक्रम/ प्रतिवेदन तैयार
		करना ।
	01•30 बजे से	लंच अ वकाश
	02•00 बजे से	प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण तबके लिए
	03•30 बजे तक	शिक्षा/ तमेकित प्रतिवेदन तैयार करना ।
	3•30 बजे से	औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा
		में शिक्षा पदा0 का योगदान/व्याख्यान
		बातचीत एवं प्रतिवेदन तैयार करना ।
23•7•93	10•00 बजे से	महिला समाख्या की भूमिका
	11•00 बजे तक	व्याख्यान एवं बातचीत
	11•00 बजे से	1•जनतंत्रीय शिक्षा-
		2•वैज्ञानिक दृष्टिकोण/व्याख्यान
		एवं बातचीत गुण चर्चा प्रतिवेदन तैयार
		करना ।
	01•00 बजे से2•00-	लंच अवकाश
	02•00 से	काम बलाऊ उपकरण का निर्माण/
	03•00 बजे तक	व्याख्यान एवं बातचीत
	03•00 बजे से	विद्यालयीय प्रबंधक एवं मूल्यांकन/
	4•30 बजे तक	प्रतिवेदन तैयार करना ।
	4•30 बजे से	
	5•00 बजे तक-	समापन समारोह ।

BIHAR EDUCATION PROJECT

WEST CHAMPARRAN BETTIAH

HEAD MASTER TRAINING

TEACHING METHODS

1. Lactures
2. Group Discussion
3. Question & Answer session

1st session 10.00 A.M. - 1.00 P.M.

Registration

BEP - AN Introduction , Role in present Education scenario.

2nd Session :: 2.00 P.M. - 5.00 PM

Scientific attitude in making school campus attractice.

2nd Day 1st Session

- Role & Duties of an Administrator
- Departmental set up and inencial norms (procedures)
- Powers, Accounts Audit, Cash, Different funds, Sources)

2nd Session

Reward & Punishment

Micro planning for the progress of school

3rd day

1st Session

Academic Leadership
Creation of Academic atmosphere in school.
principles of assigning responsibilities to teachers (class Management)

2nd Session

- Child Education
- MLL - Course of action.
- Efforts to attain MLL
- Arrangement of Exam. & Evaluation

4th Day

1st Session

- Up keep of office Library
- Gram Shiksha Samiti getting
- co- operation from society & Guardians.

2nd session

- School Health programme
- Co- Curricular activities

(Non cognitive aspect of teaching)

5th Day

1st Session

- Records, Service books, File etc. - Maintenanece
- Stores - Upkeep, rules.

2nd Session

- Monitiring, returns
- Statistics - Timely Disposal
- Valedictory.

परिशिष्ठ-3

प्रशिक्षण कैलेण्डर

वर्ष- 1994-95

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डी०आई०ई०टी०) कुमारबाग ।

35-35 के दो समूहों में 11 दिवसीय प्राथमिक स्तरीय शिक्षक की प्रशिक्षण पर्यायें।

क्रम संख्या	अवधि संख्या	संख्या
1.	4.4.94 से 14.4.94	70
2.	16.4.94से 26.4.94	70
3.	28.4.94से 8.5.94	70
4.	10.5.94 से 20.5.94	70
5.	23.5.94 से 2.6.94	70
6.	4.7.94 से 14.7.94	70
7.	16.7.94 से 26.7.94	70
8.	28.7.94 से 7.8.94	70
9.	22.8.94 से 1.9.94	70
10.	15.8.94 से 25.9.94	70
11.	18.10.94 से 28.10.94	70
12.	14.11.94 से 24.11.94	70
13.	26.11.94 से 6.12.94	70
14.	17.1.95 से 27.1.95	70
15.	20.2.95 से 2.3.95	70
16.	4.3.95 से 14.3.95	70
		कुल-1,120

टिप्पणी:- 420 शिक्षक 1993-94 में 10 दिवसीय प्रशिक्षण पूरा कर चुके हैं । वर्ष 1993-94 में 700 नवीन प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों को 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण प्रशिक्षण पर्यायें आयोजित की जायेंगी । जिसका कार्यक्रम निम्नवत होगा ।

10 दिवसीय प्रशिक्षण

क्रम संख्या	अवधि	संख्या
1.	4.4.94 से 13.4.94	35
2.	16.4.94 से 25.4.94	35
3.	28.4.94 से 7.5.94	35
4.	10.5.94 से 19.5.94	35
5.	23.5.94 से 1.6.94	35
6.	4.7.94 से 13.7.94	35
7.	16.7.94 से 25.7.94	35
8.	28.7.94 से 6.8.94	35
9.	22.8.94 से 31.8.94	35
10.	3.9.94 से 12.9.94	35-35 का दो बैच ।
11.	15.9.94 से 24.9.94	35
12.	27.9.94 से6.10.94	35-35 का दो बैच ।
13	18.10.94से 27.10.94	35
14.	14.11.94 से 23.11.94	35
15.	26.11.94 से 5.12.94	35
16.	17.1.95 से 26.1.95	35
17.	20.2.95 से 1.3.95	35
18.	4.3.95 से 13.3.95	35
	योग -	700

मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापकों का प्रशिक्षण -5 दिवसीय ।

क्रम संख्या	अवधि	संख्या
1.	16.4.94 से 20.4.94	35
2.	10.5.94 से 14.5.94	35
3.	4.6.94 से 8.6.94	35
4.	4.7.94 से 8.7.94	36
	योग =	141

विदित हो कि वर्ष 1993-94 में 90 प्र0 अ0 को प्रशिक्षित किया गया है। प0 चम्पारण में कुल 231 म0 वि0 है। 231-90=141 प्र0 अ0 को प्रशिक्षित किया जाना है।

ग्राम शिक्षा समिति के अभिप्रेरकों का प्रशिक्षण - दो दिवसीय

क्रम संख्या	अवधि	संख्या
1.	2.4.94 से 3.4.94	35
2.	29.4.94 से 30.4.94	35
3.	24.5.94 से 25.5.94	35
4.	17.7.94 से 18.7.94	35
5.	29.7.94 से 30.7.94	35
6.	23.8.94 से 24.8.94	35
7.	4.9.94 से 5.9.94	35
8.	16.9.94. से 17.9.94	35
9.	28.9.94 से 29.9.94	35
10.	19.1094 से 20.10.94	35
11.	15.11.94 से 16.11.94	35
12.	27.11.94 से 28.11.94	35
13.	18.1.95 से 19.1.95	35
14.	21.2.95 से 22.2.95	35
	योग -	490

टिप्पणी :- वर्ष 1994-95 की चर्याओं के कार्य क्रम में मुख्य त्योहारों के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है ।

1462/2102 ·4 -70- /101

प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों को प्रशिक्षित कराने हेतु
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग में
कार्यरत साधन सेवियों की सूची:-

1. डॉ० शोभाकान्त झा, प्रशिक्षण प्रभारी, बिहार शिक्षा परियोजना, प० चम्पारण ।
सह-प्राचार्य निदेशक, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कुमारबाग ।
2. सुश्री शीला प्रसाद, प्राचार्या, डायट, कुमारबाग ।
3. श्रीमती प्रतिमा सहाय, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
4. श्रीमती चम्पा स्वतंत्र, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
5. श्रीमती कुमारी कस्तूरी, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
6. सन्ध्या होड़, व्याख्याता, डायट कुमारबाग ।
7. श्रीमती पूनम झा, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
8. श्रीमती उर्मिला सिन्हा, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग।
9. श्रीमती उषा रानी सिन्हा, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
10. श्रीमती गीता कुमारी, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
11. श्रीमती किरण सिन्हा, व्याख्याता, डायट, कुमारबाग ।
12. श्री विमलेन्दु नाथ, स० शि०, चम्पाकुँअर, उ०वि०, लौरिया ।
13. श्री शम्भू नाथ मिश्र, स० शि०, राज इन्टर महा० , बेतिया ।
14. श्री शंकर कुमार, स० शि०, राज इन्टर महा०, कुमारबाग ।
15. श्री नित्यानन्द त्रिपाठी, स० शि०, रा० प्रा० वि०, लखौरा ।
16. श्री सुभाष प्रसाद सिन्हा, स० शि० रा० प्रा० वि०, पखनाहाँ ।
17. श्री किशोरी प्रसाद जायसवाल, स०शि० रा० प्रा० वि०, परसण्डा, गौनाहा-2
18. श्री बलराम शुक्ल, स० शि०, रा० म० वि०, पखनाहाँ ।
19. श्रीमती पूर्णिमा बाला श्रीवास्तव, स०शि० रा० प्रा० वि०, नया टोला, हिन्दी ।

महिला समाख्या

पृष्ठभूमि-

बिहार शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत महिला समाख्या कार्यक्रम की शुरूआत मार्च 1992 से हुई जिसका मुख्यउ उद्देश्य महिलाओं की स्थिति में बुनियादी बदलाव की दृष्टि से एक निर्णायक पहल करना है । साथ ही ऐसी परिस्थिति पैदा करना है जिसमें महिलाएँ अपनी -स्थिति को बहे बेहतर तरीके से समझ सके ।

पश्चिम चम्पारण जिले में महिलाओं की स्थिति बिहार के अन्य जिलों की अपेक्षा काफी दयनीय है । यहाँ की अधिकांश महिलाएँ अंधविश्वास, कुपोषण, अशिक्षा , पर्दा प्रदा, असमानता जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों को शिकार हैं । स्थिति इतनी दयनीय है कि महिलाएँ परिवर्तन के स्वरूप से भी भयभीत हो जाती है ।

जिला में कुल 10,90,094 महिलाएँ हैं । जिनमें साक्षरता की दर 12 प्रतिशत ह मात्र है । प्राथमिक विधालयों में बालिकाओं का नामांकन दर तो और भी कम है । जिला में दलित बहुल क्षेत्रों एवं निम्न स्तरीय समुदायों में महिलाओं की स्थिति और भी खराब है। फलतः विभिन्न प्रकार के शोषण का शिकार महिलाओं को होना पड़ता है ।

उद्देश्य:-

बिहार शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत महिला समाख्या के

उद्देश्य:-

§1§ महिलाओं में आत्म विश्वास जगाना तथा उनके आत्म विकास में आवश्यक परिवर्तन लाना ताकि वे अपनी समझ के आधार पर अपनी स्थिति एवं परिस्थितियों को बदलने के लिए खुद निर्णय ले सके और शिक्षा की उपयोगिता को समझ सके । वे खुद सशक्त बनकर अपने एवं समाज के विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सके । ऐसा वातावरण बनाना जिसमें महिलाएँ खुद नई-नई जानकारियों एवं सूचनाओं की माँग कर सकें ।

§2§ नये कार्यक्रमों को महिलाओं तक पहुँचाना तथा प्रत्येक गाँव में संपर्क , जुझारू एवं साक्षर महिलाओं का समूह बनाना जिसमें से कुछ सक्रिय महिलाएँ शिक्षा समिति की सदस्या बन महिलाओं के विकास के प्रति उत्तरदायी बन सकें।

§3§ घरेलू आवश्यकताओं एवं कृषि के परिवर्तनशील मौसम के जीवन के साथ तालमेल रखते हुए औपचारिक शिक्षा एवं अनौपचारिक शिक्षा के वैकल्पिक ढाँचा खड़ा करना तथा लड़कियों की प्रारंभिक शिक्षा पर विशेष ध्यान देना । इसके लिए आवश्यकतानुसार पूर्व प्राथमिक स्तर के बालक- बालिकाओं के लिए केन्द्र खोलना,माता अभिभावकों के साथ सम्पर्क कर यह निश्चित करना कि लड़कियाँ प्राथमिक विद्यालय में जाएँ तथा इस स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के नाम लिखवायें ताकि नियमित रूप से पढ़ने जा सके तथा प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली कठिनाईयों को दूर कर सकें ।

§4§ बिहार शिक्षा परियोजना से जुड़े कर्मियों तथा स्थानीय स्तर पर महिला कर्मियों में महिलाओं एवं गरीबी की समस्या पर सक्षम एवं संवेदन शील बनाने के लिए सतत् प्रशिक्षण की व्यवस्था करना ।

10.4

कार्यक्षेत्र :-

==========

प० चम्पारण में महिला समाख्या कार्यक्रम दो प्रखण्डों चनपटिया एवं मैनाटॉड में चल रहा हैं । मैनाटॉड में 92 गाँव है एवं चनपटिया में 72 गाँव है । इन गाँवों को 16 संकुलों में बाँटा गया है तथा प्रत्येक संकुलोंमें बाँटा गया है । तथा प्रत्येक संकुल में 8 से 12 तक गाँव है । गाँवों का विचार दूरी के आधार पर किया गया है ।

94-95 की कार्ययोजना के अनुसार एक दूसरे प्रखण्ड लेने का विचार है ।

वर्ष- 1993-94

वर्ष 1993-94 में महिला समाख्या कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने हेतु कुछ लक्ष्य निर्धारित किए । उसके अनुसार निम्न- उपलब्धियों हुई ।

- 16 सहयोगिनियों का 10 दिवसीय एवं 7 दिवसीय प्रशिक्षण
- 142 महिला समूह का गठन
- 310 सखियों का प्रशिक्षण
- 30 जगजगी केन्द्र का संचालन
- जगजगी गाँव का से सर्वेक्षण ।
- विद्यालय सर्वेक्षण ।
- शिक्षिका कार्यशाला ।
- ए. एन. एम. के साथ कार्यशाला ।
- प्रखण्ड स्तरीय पदाधिकारी एवं कर्मचारियों के साथ बैठक

× लड़ाई एवं सफलता

- राशन संबंधी
- घुस लेने वाले के विरुद्ध कार्यवाही
- विद्यालय में शिक्षक की नियमितता निश्चित
- टीकाकरण
- 825 बच्चों का नामांकन
- सहयोगिनी को परेशान करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही
- पति द्वारा पीटे जाने का विरोध
- कुँआ निर्माण
- सड़क निर्माण
- जवाहर रोजगार में महिलाओं की भागीदारी
- महिलाओं द्वारा पढ़ाई की माँग
- महिला कुटिर हेतु जमीन अधिग्रहण ।

1994-95 की कार्ययोजना

महिला समाख्या कार्यक्रम के अन्तर्गत 1994-95 में चनपटिया, मैनाटाँड के अलावे एक अन्य प्रखण्ड सिकटा जो मैनाटाँड से सटे हैं लेने पर विचार किया गया है। सिकटा प्रखण्ड में कुल गाँव की संख्या 61 है, जहाँ स्त्रियों की कुल संख्या 52363 है तथा पुरूषों की 58687 हैं। यहाँ पुरूषों की साक्षरता दर 21% है वहाँ महिलाओं की मात्र 10% है। चनपटिया, मैनाटाँड में पूर्ववत् ही कार्य होते रहेंगे चुकि महिलाएँ अभी अपने अधिकारों के क्षेत्र में उतनी सशक्त नहीं हो पाई हैं।

लक्ष्य -

1- चयनित प्रखण्ड को 10 क्लस्टर के रूप में बाँटना है। फिर सहयोगिनी, सखी एवं सहेलियों का चयन कर तथा उनके सहयोग से नुक्कड़ नाटक एवं जागरण गीत के माध्यम से जनसम्पर्क इत्यादि एक उन्नत एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना है।

सहयोगिनी चुनाव में इतना ध्यान रखा जाना है कि वे गाँव द्वारा मान्य हो, सशक्त हो, टूट दराज से एवं पढ़ी लिखि हो तथा 10 गाँव की जिम्मेवारी उठाने में सक्षम हो सके।

2- महिला समूह का गठन -

महिलाओं की सशक्ति करण हेतु पहला चरण समूह गठन है। अतः नये चयनित प्रखण्ड में समूह गठन का प्रयास किया जायेगा तथा काम चल रहे पुराने प्रखण्डों की समूह को और भी मजबूत करने का प्रयास किया जाना है।

अतः इस वर्ष महिला समाख्या के तहत लिए गये सभी गाँवों में महिला समूह गठित करने का लक्ष्य रखा गया है। गठित महिला समूह द्वारा सखियों एवं सहेलियों का चयन होगा।

3- जगजगी केन्द्र-

इन प्रखण्डों में महिलाओं की साक्षरता दर को कम देखते हुए 100 जगजगी केन्द्र खोलने का तय है । साथ ही जनसंख्या के अनुपात एवं जनसमुदाय के मॉग को देखते हुए केन्द्रों की संख्या बढ़ाने का मॉग की जा सकती है साथ ही प्रयोग के रूप में कहीं-कहीं तकनीकि पढ़ाई की व्यवस्था की जाएगी । जगजगी - ८ शैक्षिक गतिविधि हैं । अतः महिला समाख्या की बालिकाओं , किशोरियों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण में f शक्षा को ही सर्वोदय प्राथमिकता प्रदान करती है ।

4- महिला कुटिर

वर्ष 1994-95 में महिला समाख्या के अन्तर्गत कम से कम 16 महिला कुटिर बनाने का लक्ष्य हैं । प्रत्येक क्लस्टर में कम से कम एक महिला कुटिर बनाए जाएगें । कुटिर को निर्माण में समूह की महिलाएँ काम करेंगी ।

महिलाएँ अपनी पहचान बनाने हेतु खुल कर चर्चा कर सके एवं अपनी वह कार्ययोजना तैयार कर सके । इसको ध्यान में रखते हुए महिला समाख या के अन्तर्गत एक ऐसा स्थान उपलब्ध कराने का प्रावधान रखा गया है , जह f महिलाएँ नियमित रूप से अपनी बैठकें कर सके ।

5- ग्राम शिक्षा समिति का गठन

जिन प्रखण्डों में महिला समाख्या कार्यक्रम चल रहे है वहाँ ग्राम शिक्षा समिति का गठन महिला समाख्या के सहयोग से किया जाएगा । ताकि ग्राम शिक्षा समिति में महिलाओं की सदस्यता संख्या सुनिश्चित की जा सके ।

6- महिला शिक्षण केन्द्र

महिला समाख्या ,महिला शिक्षण केन्द्र हेतु महिलाओं का चयन करेगी । जिसमें महिलाएँ अपनी कौशल को प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित कर सके । साथ ही कम से कम समय में प्राथमिक शिक्षा भी प्रदान की जाएगी । महिला समाख्या सम्भाग के अन्तर्गत ही बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना के माध्यम से इस जिले के अन्तर्गत फकीराना में महिला शिक्षण केन्द्र खोले गये हैं ।

इस वर्ष भी एक और महिला शिक्षण केन्द्र खोले जाने का प्रस्ताव है ।

(क) सखी ,सहेली मिलन

महिला समाख्या के कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु तीन माह में एक बार सभी प्रशिक्षित सहयोगिनियों के साथ यूनिट स्तर पर मिलना होगा । जिसमें सखियों द्वारा कार्यानुभवों एवं विचारो का आदान -प्रदान होगा ।

(ख) - 6 माह में एक बार सभी सखी ,सहेली का आपस में बैठक जिला स्तर पर होगा जो किसी खास अवसर पर जैसे - महिला दिवस ,साक्षरता दिवस इत्यादि ।

(ग) सहेली चयन-

जगजगी केन्द्र की अनुदेशिका सहेली के नाम से जानी जाती है। सहेली का चुनाव कोरटीम ,सहयोगिनी ,सखी तथा महिला समूह के सहयोग से होगा । सहेली के रूप में अनुसूचित जाति/जनजाति की महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी तथा वैसी महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी जो इन वर्गों के बीच पढ़ा सके ।

§8§ क्षेत्र भ्रमण-

सखी, सहयोगिनी, सहेली, कोरटीम हेतु क्षेत्र भ्रमण का आयोजन कियाजाएगा जिसके अन्तर्गत अन्य जगहों पर चल रहे महिला समाख्या की गतिविधियों को देख कुछ सीख सकें तथा महिला समाख्या के कार्यक्रमों को और भी सुचारू ढ़ग से चला सके ।

§9§ जगजगी -अभियान/नामांकन अभियान

वर्ष 1994-95 के अन्तिम तीन माह में जगजगी अभियान चलाए जाएगें । जिसमें, बाल मेला, बालिका मेला, माँ बेटी मेला लगाए जायेगें । तथा शिक्षा के प्रति रूझान पैदा हो । इसके लिए नुक्कड़ नाटक, साक्षरता गीत तथा संचार माध्यम का सहयोग किये जायेगे ।

§10§- वातावरण निर्माण-

महिला समाख्या कार्यक्रम की शुरूआत एक चुनौती है। अतः इसके लिए वातावरण निर्माण अति आवश्यक है। इसके

× गॉव -गॉव में भ्रमण महिलाओं से सम्पर्क किया जाएगा ।
× खास जगहों पर विभिन्न एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रभात फेरी का आयोजन किया जाएगा ।
× दिवाल लेखन कार्यक्रम चलाया जाएगा ।
× सम्मेलन बैठक आदि का आयोजन किया जाएगा ।
× महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु समूह चर्चा विभिन्न विषयों पर आयोजित किए जायेगे।

(11) आदर्श गाँव -

प्रत्येक क्लस्टर से एक ऐसा गाँव जहाँ महिला समूह सबसे अधिक सशक्त है। बचत कोष के रूप में कुछ पूँजी जमा है उसे आदर्श गाँव के रूप में लिया जाएगा ।

आदर्श गाँव से हमारा तात्पर्य यह है कि इस गाँव में प्रत्येक बच्चे विधालय जाएगें । विधालय न जा सकने लायक ~~किशोर~~ स्त्री ,पुरुष जगजगी केन्द्र में आवेंगे । सभी शिशुओं एवं माताओं को समय पर टीका करण हो । वहाँ का विधालय,शिक्षक आदर्शता ~~टीकाकरण हो~~ । ~~ब~~ की मिशाल कायम करे । पर्यावरण का संरक्षण किया जाएगा । 0-3 वर्ष तक के बालक -बालिकाओं की देखरेख हेतु व्यवस्था की जाएगी । गाँव के झगड़ों के निपटारा गाँव में ही किया जाएगा । नशीले पदार्थों के इस्तेमाल पर रोक लगायी जाएगी । इस वर्ष एक गाँव को पूर्ण साक्षर घोषित करने की योजना है । गाँव का चयन कोरटीम एवं सहयोगिनी द्वारा किया जाएगा ।

(12) बचत कोष-

जिन गाँवों में बचत कोष की शुरुआत नहीं हुई उसमें शुरुआत करायी जाएगी । ताकि महिला समूह आवश्यकता पड़ने पर समूह की स्वीकृति पर अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर सके ।

(13) प्रेसन -प्रकाशन-

उम्मीद पत्रिका का प्रकाशन पूर्ववत होता रहेगा । सखी,सहयोगिनियों,सहेलियों द्वारा बनाए गीतों,सच्ची घटनाओं का संकलन किये जाएगें । विभिन्न गतिविधियों के दृश्य,श्रव्य कैसेट्स तथा श्रव्य कैसट्स तैयार किए जायेंगे । आवश्यकतानुसार ,पम्पलेट ,फोल्डर तैयार किए जायेंगे ।

§14§ विभिन्न प्रतियोगिताएँ :-

जगजगी केन्द्र के शिक्षुओं कके का पढ़ाई के प्रति उत्साह बना रहे इसके लिए समय-समय पर चित्रांकन प्रतियोगिता बाद-विवाद प्रतियोगिता खेल-कुद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा ।

§15§ महिला दिवस :-

महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़े एवं वो अपने हक अधिकार के प्रति सजग हों और अपने सभी अधिकारों के साथ एक सहज जिन्दगी जिएँ इसके इसके लिए प्रेरित करने हेतु महिला अपना दिवस 8 मार्च के रूप में मनाएंगी, जो क्लस्टर, प्रखंड एवं जिला स्तरीय होगा ।

§16§ कार्यशाला:-

विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन:-

समय-समय पर स्वास्थ्य, स्वच्छ जल, सफाई स्वास्थ्य, जमीन कानून, पर्यावरण, ए0 एन0 एम0, शिक्षिकाओं के साथ बैठक, विधि व्यवस्था विभाग, एवं पंचायती राज तथा अन्य के साथ विभिन्न क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहायता से कार्यशाला आयोजित की जाएगी ।

§17§ प्रशिक्षण

क- सहयोगिनी प्रशिक्षण :-

चयनित सहयोगिनियों का प्रथम चरण में 10 दिवसीय प्रशिक्षण देकर कार्यक्षेत्र में छोड़ा जाएगा तथा वे तीन माह तक प्रोबेशन की अवधि पर रहेंगी । इनके कार्य के आधार पर 7 दिवसीय द्वितीय चरण का प्रशिक्षण होगा ।

ख- सखी प्रशिक्षण:-

महिला समूह द्वारा प्रत्येक गांव में 2 सखियों का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण होगा। सखी अपने गाँव के महिला समूह की नेता होंगी, जो समय-समय पर समूह के सहयोग से गाँव में देने वाले क्रिया कलापों की निगरानी करेगी ।

ग- भाषा सुधार प्रशिक्षण :-

चम्पारण की साक्षरता दर बहुत ही कम है अत: यहाँ की कुछ सहयोगिनियाँ एवं सहेलियाँ पढ़ी लिखी हैं जिसके कारण समस्या के समाधान एवं विचारों के आदान-प्रदान में व्यवधान उत्पन्न होता है ।

घ- सहेली प्रशिक्षण :-

सहेली प्रशिक्षण चयनोपरांत महिला समाख्या के बारे में पूर्ण जानकारी हेतु 3 दिवसीय सहेली ओरिएन्टेशन महिला समाख्या प्रभाग द्वारा दिया जाएगा ।

अनौपचारिक प्रभाग, डी0 आर0 यू0 द्वारा 30 दिवसीय प्रशिक्षण तीन वर्षों में दिया जाएगा ।

ङ- कठपुतली प्रशिक्षण :-

साधारण ग्रामिणों को शिक्षा देने का एक उत्तम माध्यम नुक्कड़ नाटक एवं कठपुतली का प्रदर्शणी है, अत: अलग-अलग प्रखंडों में अलग-अलग टीम तैयार की जाएगी ।

च- पापाकल मरम्मति एवं राजमिस्त्री:-

महिलाएँ अपनी दीन ग्रंथि को त्याग कर समाज की मुख्य धारा में अपने को जोड़ सके इसके लिए कुछ महिलाओं को कल मरम्मति एवं राजमिस्त्री का प्रशिक्षण दिया जाए ।

§13§ सहयोगिनी रिफ्लेक्शन मीटिंग :-

प्रत्येक माह कोर टीम के साथ सहयोगिनी रिफ्लेक्शन की मीटिंग होगी जिसमें पिछले माह किए गए कार्यों का तथा अनुभवों का आदान-प्रदान, तथा अगले माह का कार्य योजना तैयार करना तथा लिखित प्रगति प्रतिवेदन

मूल्यांकन :-

कार्यक्रमों के सफल संचालन एवं भूल सुधार हेतु मासिक, वार्षिक मूल्यांकन होगा इसके लिए वार्षिक मूल्यांकन हेतु एक जिले की कोर टीम दूसरे जिला में जाएगी ।

अपने जिला में विभिन्न प्रभागों एवं संबंधित लोगों का सहयोग लिया जाएगा जो खुले रूप से हमारे कार्य उपलब्ध पर टिप्पणी करेंगी ।

एक क्लस्टर की सहयोगिनी दूसरे क्लस्टर का मूल्यांकन करेंगी ।

जिले में महिला समाख्या के अतिरिक्त महिलाओं के विकास में संलग्न अन्य कार्यक्रमों के साथ समन्वय:-

पश्चिम चम्पारण जिलान्तर्गत महिला समाख्या, बि0 शि0 प0 के अतिरिक्त महिलाओं में चेतना जागृति तथा उनके स्तरोन्नयन के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम चल रहे हैं--

1-समेकित बाल विकास सेवाएँ
(Integrated Child Development Services)
2- ग्रामीण महिला शिशु विकास कार्यक्रम
(Development Of Women and Children in Rural Areas)
3- सामुदायिक अभिसरक सेवाएँ
(Convergent Based Community Serviees)

महिला समाख्या सम्प्रति चनपटिया एवं मैनाटाँड प्रखण्डों में कार्यरत हैं और अगले वर्ष बगहा-2 प्रखण्ड में भी क्षेत्र विस्तार की योजना है। संयोगवश इन प्रखण्डों की ग्रामीण महिलाओं के लिए उक्त तीनों कार्यक्रम कार्यान्वित हो रहे हैं। अगले वर्ष योजना है कि निम्नलिखित क्षेत्रों में उनका अधिक से अधिक सहयोग लिया जाये-

1- टीकाकरण एवं प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ
2- ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक उन्नयन
3- ग्रामीण विकास ।

जिले में C.B.C.S; D.W.C.R.A और I.C.D.S. कार्यक्रमों की एक झलक

1. I.C.D.S	
Blocks Covered	03 (Ramnagar & Gaunaha) & Majhaulia
11- D.W.C.R.A	
* Blocks Covered	05 (Bagaha-2, Chanpatia, Nawtan, Bettiah & Lauriya)
*Women groups_	51
* Women group Organisertrained in Voc.Trg _	43
*production of Agarbatti Started in blocks through Women groups	01 Block (Bettiah)
111- C.B.C.S .	
*Block covered	04(Bagaha-2, Ramnagar , Gaunaha &Mainatand)
* Credit & Thrift Societies in the from of Women groups of 20-40 members	83
* Nodal N. G .O.	01 (READ , Bettiah)

महिला समाख्या महिला के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत है और सरकार के उपरोक्त कार्यक्रम भी महिलाओं तथा शिशुओं के स्वास्थ्य शिक्षा एवं आर्थिक उत्थान के लिए हैं । अत: एक दूसरे के सम्पूरक हैं ।ऐसी स्थिति में महिला समाख्या ऊपर वर्णित कार्यों के लिए इन कार्यक्रमों से समन्वय एवं सहयोग की अपेक्षा रखती है और तेजी से महिला के जीवन को बदलने के लिए सचेष्ट है । प्रत्येक कार्यों से सम्बद्ध अपेक्षाएँ निम्नवत् हैं:-

1- टीकाकरण एवं प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ :-

माँ और बच्चे के विकास में अन्योनाश्रय सम्बन्ध है। माँ बच्चे के स्वास्थ्य के लिए ग्राम चिकित्सा ,एवं दवा करा एवं आई॰सी॰डी॰एस॰ से समन्वय स्थापित करना अनिवार्य है जिससे महिला समाख्या के कार्यक्षेत्र की महिलाओं को इन कार्यक्रमों से अधिक से अधिक लाभ मिल सके ।

2- ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक उन्नयन:-

किसी भी क्षेत्र में पुरुष एवं महिलाओं दोनों के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं होंगे उनका आर्थिक उन्नयन संभव नहीं होगा । परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में महिलाएँ हरसंभव सहयोग करने की क्षमता रखती है । महिलाएँ दुग्ध उत्पादन सहयोग समितियाँ गठित कर अच्छी आय कर सकती हैं । विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर द्वारा महिला की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहायक सिद्ध हो सकती है ।

3- ग्रामीण विकास

पर्यावरण की शुद्धि एवं आर्थिक उत्थान के लिए पौधशाला एवं सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों के द्वारा ग्राम विधिका का सहयोग अपेक्षित होगा । शौचालयों का निर्माण तथा जवाहर रोजगार योजना के माध्यम से प्रशिक्षण -सह-उत्पादन केन्द्र बनाकर वहाँ आई•सी.डी.एस•,सी•वी.सी•एस• और डी डब्लू .सी•आर•ए के प्रयत्नों से पंचायत स्तर पर महिलाओं के लिए शिक्षा ,व्यावसायिक प्रशिक्षण ,प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं आदि उपलब्ध हो सकती है ।

3.5.-शिक्षा , संस्कृति और संचार

शिक्षा मानव को सुसंस्कृत बनाती है ।

प्रत्येक स्थान विशेष की अपनी संस्कृति होती है । पश्चिम चम्पारण की संस्कृति भी भारतीय संस्कृति की भाँति अनेकता में एकता लिए हुए है । यहाँ के लोगों में विभिन्न प्रकार की बोलियाँ , रहन-सहन , वेश-भूषा , पूजा-अराधना की पद्धति दिखायी पड़ती है इन भिन्नताओं की स्पष्ट उपस्थिति के बाद भी आपसी सद्भावना , सहयोग और भातृत्व की अंतः सलीला समस्त क्षेत्र को एक धारा में बाँधे रखती है ।

शिक्षा मानव को संस्कृत करने का अति उत्तम माध्यम है । सम्पूर्ण राष्ट्र को एक धारा में आबद्ध रखने के लिए शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ना आवश्यक है ।

3.5.1.- भाषा:-

पश्चिम चम्पारण की संस्कृति की प्राचीनता भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के समान है । यहाँ मुख्य रूप से भोजपुरी ,वज्जिका,मैथिली, थारू और धांगड़ भाषा का प्रयोग हिन्दी के समानान्तर होता है । इस जिले की भाषा भारत ही नहीं वरन् विदेशों में भी व्यवहृत होती है । इन भाषाओं में विपुल साहित्य वर्तमान है । उनका संग्रह और प्रकाशन करने का कार्य किया जाना है । इनमें लोकभाषाओं के काव्य और लोककथाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं ।

3.5.2- लोक कला :-

(क) लोकगीत :- यहाँ लोक गीतों की लम्बी विस्तृत और पुरानी परम्परा है । भोजपुरी ,वज्जिका,थारू आदि बोलियों में लोकगीत गाए जाते हैं। आल्हा-उदल ,सोरठ वृजभार ,लोकायन आदि लोकगाथाओं के साथ विभिन्न संस्कार अवसरों के लोकगीत प्रचलित हैं । जाँता चलाने से लेकर धान रोपने तक ग्रामीण क्षेत्रों में स्वर लहरियाँ तरंगायित होती रहती हैं । सावन में कजरी ,गर्मी में चैता,और बसंत हो ... रस पूर्ण तान सर्वत्र सुनायी पड़ती है । इनके संकलन, विकास और अक्षुण्ण बनाये रखने का कार्य किया जाना है ।

(ख) लोक-संगीत नृत्य :- यह जिला शास्त्रीय संगीत के बेतिया राज घराने के कारण संगीत में जितना प्रसिद्ध है, उतना ही अपने सरस लोक संगीत के कारण यहाँ के विभिन्न नृत्य भी अपनी विशिष्टता और जीवंतता के लिये अति प्रसिद्ध हैं। जिनमें मुख्य झुर्का, भालु नृत्य, पखावज नृत्य, लड़की नृत्य, बिहुला नृत्य है।

वादन में झेरी वादन, ढपली वादन, पखावज आदि अधिक प्रचलित हैं।

शिक्षा परियोजना के द्वारा इनके संग्रह के लिए प्रोत्साहित -विस्तार के सार्थक प्रयास किए जायेंगे।

(ग) अन्य- यहाँ शिल्प कला, चर्म कला, मिट्टी के बर्तन बाँस की वस्तुएँ, बेंत की वस्तुएँ आदि के क्षेत्र में भी काफी संभावनाएँ हैं। इनकी खोज प्रशिक्षण और उत्पादन के लिए आवश्यक बाजार आदि की व्यवस्था होने से इस क्षेत्र की आर्थिक समृद्धि में सहयोग होसकता है। परियोजना इस कालावधि में उपरोक्त बिन्दुओं पर कार्य करेगी।

3.5.3. सांस्कृतिक कर्मी और उससे संबद्ध लोगों का सहयोग लेकर विभिन्न कला शैलियों के माध्यम से स्थानीय साहित्यकारों, कलाकारों, शिल्पियों और मिडिया के लोगों को संगठित कर छात्रों और जनमानस के बीच प्रदर्शन करने से शिक्षा का विकास तो होगा ही साथ ही सांस्कृतिक उत्थान में भारी सहयोग हासिल किया जा सकता है।

3.5.4. बच्चों को जिले के विभिन्न सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक और शैक्षिक स्थानों का परिदर्शन कराने से सांस्कृतिक सुदृढ़ता में वृद्धि होगी। इनमें अशोक स्तंभ, लौरिया, चानकीगढ़, नरकटियागंज, भीतिहरवा आश्रम वृन्दावन, सहोदरा, गोनाहा, बाल्मीकिनगर, कालीधाम बेतिया [illegible] बेतिया और शहीद पार्क बेतिया आदि स्थान महत्वपूर्ण हैं।

3.5.5. यहाँ के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों पर साहित्य रचना, नाटक, फिल्म आदि के द्वारा इनके जीवन दर्शन को दिखाकर जिले में राष्ट्र-प्रेम, सहिष्णुता, सद्भावना और साम्प्रदायिक एकता के साथ राजनैतिक समझ विकसित की जाएगी। इनमें प्रमुख हैं- सर्व श्री राजकुमार शुक्ल, शीतल राय, शेख गुलाब, प्रजापति मिश्र, केदार मणि शुक्ल, नन्हक सिंह, कपिलदेव राय, गुलाब चन्द गुप्त "गुलाली", कमल नाथ तिवारी, विपिन बिहारी वर्मा, गणेश राय आदि।

सारतः इस परियोजना के वर्तमान काल अवधि में उपरोक्त बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित किया जायेगा। जन शिक्षा निलयमों की स्थापना की जाएगी। संकुल पुस्तकालयों के द्वारा सांस्कृतिक एकता, सांप्रदायिक सद्भाव एवं अनुवर्ती शिक्षण कार्य किया जाएगा।

--- x -----

७. परियोजना परिदृश्य सह निष्कर्ष ।

४• परियोजना परिदृश्य एवं निष्कर्ष

४•१ पश्चिम चम्पारण जिला में शिक्षा परियोजना के कार्यक्रमों को एक आन्दोलन एवं परिवर्तन के रूप में लिया गया है । इसके तहत समाज की तमाम कुरीतियाँ ,बुराईयों ,रूढ़िवादिता,अन्धविश्वास आदि कारकों को खत्म करके एक उज्ज्वल समाज के नव निर्माण की कामना की गई है । इस जिले की सभी जनता ,सभी राजनीतिक दल ,स्वयंसेवी संस्थाएँ ,बुद्धिजीवियों ,शिक्षकों ,अभिभावकों ,नाट्य कला एवं रंगमंच में शामिल तमाम कलाकारों ,शिक्षा शास्त्रियों समाज सेवियों आदि ने पुरजोर संकल्प के साथ इस परियोजना में सहयोग करने का वचन दिया है। यदि जिले के सभी लोगों एवं संस्थाओं का भरपुर सहयोग मिला तो वह दिन दूर नहीं की हमलक्ष्य तक पहुँच कर पूर्ण साक्षरता के लिए पश्चिम चम्पारण अपनी पुरानी संस्कृति को प्राप्त करता हुआ पूरे देश में गौरवान्वित होगा।

४•२- इस जिले में तीन अनुमण्डल और 16 विकास प्रखण्ड हैं, जिसमें पूर्व से तीन प्रखण्डों को शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत सघन शिक्षा अभियान के रूप में चयन किया गया है जैसे- लौरिया, चनपटिया और बेतिया अनुमंडल में और बगहा-२ बगहा अनुमंडल में । इस वर्ष बेतिया अनुमंडल से बेतिया प्रखण्ड को भी सम्मिलित किया गया है ।

४•३- शिक्षा परियोजना में जन शिक्षण निलयम के तहत पुस्तकालयों को समृद्ध बनाना है । इस क्रम में महाराजा हरेन्द्र किशोर जिला केन्द्रीय पुस्तकालय ,बेतिया को शिक्षा परियोजना के तहत केन्द्र,ग्राम एवं अन्य पुस्तकालयों के विकास हेतु संबद्ध करने की जिम्मेवारी दी गई है (परिशिष्ट - में वृहद योजना का खाका प्रस्तुत है)

४•४• इस शिक्षा परियोजना के तहत जैसे ही विकास की किरणें स्फुटित होने लगेगी वैसे ही इसका,प्रभाव एवं परिणाम सामने आने लगेंगे । इसी क्रम में प्राथमिक शिक्षा की प्रगति का अभियान ,भागीदारी तथा साथ-साथ उपलब्धि के संदर्भ में मुल्यांकित किया जाएगा ।

इसी प्रकार से अनौपचारिक शिक्षा

इसी क्रम प्रकार से अनौपचारिक शिक्षा की प्रगति का भी मूल्यांकन किया जाएगा ।

1.5. अन्त में उपलब्ध आंकड़ों से मूल्यांकन की बातें अनुसंधान एवं अध्ययन के आधार पर वार्षिक समीक्षा की जाएगी । सभी संबद्ध दलों बिहार सरकार, भारत सरकार, शिक्षक संगठन, मूल्यांकन संगठन तथा यूनीसेफ के कार्यक्रम इसके साथ जुड़े होंगे । 1994 के वर्ष में गत ? अवधि का मूल्यांकन भी किया जायेगा । इसमें प्रगति का मूल्यांकन परियोजना की सापेक्ष संशोधन करने के लिए परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार की बातों की पूर्ण समीक्षा करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा जायेगा कि सर्वप्रथम कार्य किस दल ने पूरा किया । सर्वप्रथम कार्य करने या गहन शिक्षा का लक्ष्य पूरा करने वाले दल को पद या पुरस्कार देने की भी व्यवस्था पश्चिम चम्पारण शिक्षा परियोजना के तहत की जायेगी ।

---x-----

/25

5. TENTATIVE BUDGET ESTIMATE

FOR THE YEAR -1994-95

BIHAR EDUCATION PROJECT, WEST CHAMPARAN, BETTIAH.

TENTATIVE BUDGET ESTIMATE FOR THE YEAR 1994-95.

1	2	3	4	5	6
A.	PROJECT MANAGEMENT ***********************				
1.	SALARIES/HONORARIUM/ALLOW FOR TECHNICAL/MANA -GERIAL, SUPPORT & CLASS IV STAFF & DRIVERS	9.00	3,22,527.75	7.00	
2.	MANAGEMENT INFORMATION & MONITORING SYSTEM RECURRING EXPENDITURE ON MIS.(FLOPPIES, MAINT, PRINTING OF FORMATS etc.)	0.50	12,884.00	0.50	
3.	RENT, TAXES etc FOR OFFICE	1.20	2,526.50	0.10	
4.	OFFICE EXPENDITURE ON CONSUMABLES	0.75	55,90[illegible].00	0.75	
5.	OTHER ADMINISTRATIVE OFFICE EXPN. (TELEPHONE, TELEGRAM, TA, DA, etc.)	1.50	63,635.95	1.50	
6.	BASIC MOBILITY REQUIREMENTS FOR PROG. MANAGEMENT AND MONITORING RECURRING	2.00	81,070.90	2.00	
	NON RECURRING	0.00	-	-	
7.	ADVOCACY, OFFICE EXPENSES ON A/C OF MEETINGS OF PARTICIPATORY AGENCY CONNECTED WITH THE PROJECT OTHER STATES, DONORS AGENCIES, EXPERTS NGOs TO PROMOTE GREATER UNDERSTANDING OF BEP CONCEPTS, PROJ. FORMULATION & IMPLIMENTATIO.	0.25	5,398.00	0.25	
	Sub-Total :-	15.20	5,43,951.10	12.10	

1	2	3	4	5
B.	PRIMARY FORMAL EDUCATION **********			
1.	WORKSHOP ON UPE MICROPLANNING, SCHOOL MAPPING, VECs & MINIMUM LEVELS OF LEARNING TO INITIATE MICROPLANNING, RATIONALISATION OF TEACHER UNITS & AT Rs. 15000/- PER WORK-SHOP FOR 40 PARTICIPANTS.	1.20	55,000.00	1.20
2.	COMPREHENSIVE BENCHMARK SURVEY FOR UPE & EFA (THROUGH MOBILISATION OF COMMUNITY VOLUNTEERS TEACHERS) @ Rs. 3300/- PER BLOCK	0.43	43,000.00	0.50
3.	(a) CONFERENCES WITH TEACHERS ORGN. TO STRENGTHEN PARTNERSHIP FOR EDUCATION FOR ALL.	0.50	85,000.00	0.50
	(b) WORKSHOPS FOR ENROLMENT DRIVE AND ALLIED ACTIVITIES FOR UPE	0.45	45,000.00	0.50
	(c) REVITALISING THE EXISTING AND ESTABLISHING NEW VECS	-	-	-
4.	SUPPLY OF INNOVATIVE SCHOOL EQUIP AND INSTRUCTIONAL AIDS FOR QUALITATIVE IMPROVE-MENT OF EDUCATION @ Rs. 10000/-PER SCHOOL	32.00	32,00,000.00	50.00
5.	SPORTS MATERIAL @ Rs. 2000/- PER SCHOOL	6.40	6,40,000.00	10.00
6.	PROMOTING ACCESS/PARTICIPATION OF THE GIRL CHILD THROUGH SUPPORT FOR TEACHING/LEARNING MATERIALS(BOOKS, BAG, etc.) @ Rs.60/-per CHILD	31.75	31,75,000.00	50.00
	~~POWER~~			

1	2	3	4	5	6
7.	PROMOTING ACCESS/PARTICIPATION OF S.C.,S.T. BOYS AS ABOVE	19.90	19,90,000.00	30.00	FOR 50 THOUSAND
8.	PROMOTING ACCESS & PARTICIPATION OF IDENTI-FIED DISADVANTAGED GROUP THROUGH SURVEY SELECTION & UPGRADATION OF SELECTED ASHRAM -SHALAS IN BEP DISTRICTS (a)RECURRING-	0.00	-	-	
	(b) NON RECURRING-	0.00	-	-	
9.	WRITERS WORKSHOPS FOR LOCAL DIALECT DEVE-LOPMENT FOR LANGUAGE TEACHING AND CURRI-CULUM DEVELOPMENT INCLUDING FIELD TESTING @ Rs. 10000/- PER WORKSHOP	0.00	-	-	
10.	ORIENTATION OF TEACHERS FOR IMPROVED SCIENCE AND MATH TEACHING	0.60	60,000.00	1.00	
11.	ESTABLISHMENT OF SCHOOL LIBRARIES Rs. 3000/- PER SCHOOL	13.50	13,50,000.00	13.50	FOR 450 SCHOOLS
12.	PROV. OF INFRASTRUCTURE FOR UPE a. CONST. OF SCHOOL BUILDING	170.00	1,70,00,000.00	87.45	FOR 53 @ 1.65 LAKHS
	b. REPAIR OF SCHOOL BUILDING	48.00	48,00,000.00	[illegible]	FOR 200 @ 0.25 LAKH
	c. SCHOOL AMMENITIES i. LATRINE (@ 15000/- P.S.)	15.00	1,50,000.00	15.00	FOR 100 SCHOOLS
	ii. DRINKING WATER @ Rs. 5000/- 18000/Hp as per annexure	30.00	30,00,000.00	30.00	FOR 600 SCHOOLS
	d. SCHOOL FURN. @ Rs. 5000/- PS	22.50	22,50,000.00	22.50	FOR 450 SCHOOLS

1	2	3	4	5	6
13.	SCHOOL HEALTH PROGRAMME	1.00	1,00,000.00	1.00	
14.	SCHOOL BASED ACTIVITIES	1.00	-	1.00	
15.	BLACK BOARD TO ALL SCHOOLS @ 300/- P.S.	4.09	-	3.00	FOR 1000 U.P.SCHOOLS
16.	AWARD TO TEACHERS @ 500/- PER TEA.	0.13	13,000.00	0.25	
17-	ASSISTANCE TO BASIC SCHOOLS IN BEPDISTRICTS	-	-	-	BUDGET ESTIMAT WILL BE SUBMITTED SEPARATELY
18.	UPE-2000-PREPARATION OF PROJECT REPORT AND RELATED ACTIVITIES	-	-	-	
	Sub Total :-	398.45	3,78,96,000.00	377.40	
C.	TRAINING				
1.	IN-SERVICE TEACHER TRAINING(10-11 DAYS TWO PHASE OUTSIDE DIET)	5.60	5,60,[illegible].00	-	
2.	IN-SERVICE TEACHER TRAINING(11 DAYS 2nd COURSE OUTSIDE DIET)	6.93	1,93,000.00 ~~1.82~~	-	
3.	DISTRIBUTION OF TEACHING KITS	0.00	-	-	
4.	DIETS				
i.	STRENGTHENING & UPGRADATION	9.30	9,30,00[illegible].00	5.00	
ii.	MANAGEMENT EXPENSES [illegible] WHEN DI[illegible] WILL BEGIN TO FUNCTION AS [illegible] PROVISIONS.	3.60	3,60,000.00	5.0[illegible]	IT WILL [illegible] WILL BEGIN TO FUNCTION AS PER PR[illegible]
iii.	PROGRAMME ACTIVITIES (a) INSET TRAINING TRG.FOR 420 TEACHERS @ 1400/-and 700/-EFFECTIVE (~~XXXXXXXXXX~~XIXGx	3.00	-	38.94	10+11 DAYS TRG.FOR 1000 TEACHERS & ONLY [illegible] TRG.FOR 420 TEACHERS @ 1400/-and 700/-R[illegible]

1	2	3	4	5	6
	(b) H.M.'s TRAINING	0.00	-	0.35	
	(c) EDU. OFFICERS TRG.	0.00	-	0.12	
	(d) SEMINAR/WORKSHOP/VEC	0.00	-	1.00	
	iv. DISTRICT RESOURCE UNIT	0.00	-	-	
	v. TEACHER CONTACT PROGRAMME (a) MAGAZINE	0.60	-	0.60	
	(b) MEETINGS(GURU GOSTHI)	0.15	-	0.15	
5.	H.M.'s TRAINING OUTSIDE DIET	0.35	-	-	
6.	EDU. OFFICERS TRG. OUTSIDE DIET	0.12	-	-	
7.	Voc FUNCTIONARIES TRAINING	1.00	10,000.00	-	
8.	STUDY TOUR & TRG. OF TEACHERS TRAINERS OUTSIDE BIHAR	1.00	-	1.00	
9.	ROLLING FUND ASSIS. TO SCERT(TRG OF RES. PERSONS IN NON BEP DISTS)	0.00		-	
10.	BEP FUNCTIONARIES TRAINING	0.00	-	-	
11.	MIS TRAINING	0.00	-	-	
	Sub Total :-	31.65	20,53,000.00	45.16	

BIHAR EDUCATION PROJECT, WEST CHAMPARAN, BETTIAH

TENTATIVE BUDGET ESTIMATE FOR THE

YEAR - 1994-95

D. PRIMARY NON FORMAL EDUCATION:

AREA - 12 BLOCKS

LEARNERS - 25 PER CENTRE.

PROGRAMME	PHYSICAL TARGET	Estimate in Lacs
2	3	4
PRIMARY NON FORMAL EDN. CENTRE. FOR 1994-95		
(a) Recurring expenditure Rs. 6925 x 2,000	2000	138.50
(b) Non Recurring expenditure Rs. 1500 x 2,000	2000	30.00
(c) Trg. of Master trainer Rs. 30 x 25 x 12	25	0.09
(d) Refresher course for Master trainer Rs. 30 x 80 x 6	80	0.15
FOR 93-94 CENTRES		
(a) Recurring expenditure Rs. 6925 x 1000	1000	69.25
(b) Project Management Rs. 41,400 x 10	10	4.14
(c) Awards for Inst. 33/Supr. 10 Rs. 500 x 43	43	0.22
(d) Workshops Rs. 30 x 100 x 2 x 5 & T.A.	05 Workshops for 25 in each of 5 days duration	0.30
Project management (94-95) Rs. 41400 x 20	20	8.28
Awards for Inst. 67/Supr. 20 (94-95) Rs. 500 x 87	87	0.44
Workshops (94-95) Rs. 30 x 100 x 2 x5 including T.A.	05	0.30
Training of Supervisors Rs. 30 x 300 x 5	300	0.45
Field visits & study tour		0.10
	Sub-Total:-	252.22

E. MAHILA SAMAKHYA

1	2	3	4
01.	ESTABLISHMENT COST OF M.S. COMPONENT IN THE BEP OFFICE (HONORARIUM, SALARIES, TA/DA etc.	3.50	99,963.00
02.	RENT, HIRE CHARGES etc. ON A/C OF THE PROGRAMME	0.50	-
03.	TRAINING (ALL COSTS INCLUDED)		
	(a) M.S. DIST. CORE TEAM	0.00	-
	(b) SAHAYOGINIS	0.53	-
	(c) SAKHIS	0.75	20,000.00
04.	WORKSHOPS/MEETINGS/CONVENTIONS & OTHER M.S. RELATED ACTIVITIES	1.50	75,588.00

1	2	3	4	5	6
5.	STUDY TOUR etc.	0.25	5,000.00	0.25	
6.	ESTB. OF MAHILA SHIKSHAN KENDRA				
	(a) NON RECURRING				
	(i) CONSTRUCTION, REPAIR	6.00	-	6.00	
	(ii) EQUIPMENT/FURNITURE etc.	-		-	
	(b) RECURRING				
	(i) SALARY HONORARIUM	-	-	-	
	(ii) T.A./D.A./OTHER EXPENSES	-	-	-	
	(iii) OFFICE/PROG. CONTINGENCY	-	-	-	
	(iv) TRAINING EXPENSES	-	-	-	
	(v) STUDY TOUR etc.	-	-	-	
	(vi) LIBRARY	-	-	-	
7.	ESTB. OF M.S. RESOURCE CENTRE				
	(a) RECURRING	2.00	2,00,000.00	2.00	
	(b) NON RECURRING	-	-	-	
8.	PUBLICATIONS/DOCUMENTATIONS	1.00	52,000.00	1.00	
9.	ESTB. OF FIELD CENTRES				
	(a) RECURRING	10.00	-	10.00	
	(b) NON RECURRING	-	-	-	
10.	MAHILA SAMAKHYA HUTS	7.50	5,00,000.00	7.50	
11.	SUPPORT TO NGOs FOR M.S. RELATED ACTIVITIES	0.00	-	-	
12.	TRAINING KIT FOR M.S.	.00	-	-	
	Sub Total :-	33.53	9,53,000.00	34.00	

1	2	3	4	5	6
F.	EARLY CHILDHOOD CARE & EDUCATION				
1.	PRE PRIMARY CENTRES @ Rs. 13,680.00 (REC)	71.00	-	-	
	@ Rs. 7,320.00 (NR)	0.00	-	-	
2.	WORKSHOPS/MEETINGS	0.30	-	-	
3.	FIELD VISITS/STUDY TOURS	0.10	-	-	
4.	AWARD FOR BEST CENTRES	0.00	-	-	
5.	STRENGTHENING OF EXISTING ICDS PROG.(TRG. & NETWORKING EXPNS.)	0.15	-	-	
6.	SUPPORT FOR ESTABLISHING ECCE RESOURCE CENTRE	0.00	-	-	
	Sub Total :-	21.55	-	-	
G.	CULTURE,COMMUNICATION & CONTINUING EDUCATION				
1.	ENVIRONMENT BUILDING FOR EFA/BEP SCHOOL CENTRED MOBILISATION PACKAGE OF BALMELAS, PUPPET SHOWS,CULTURAL SHOWS,CELEBERATION OF IMPORTANT DAYS,COMPETITIONS(SPORTS/ CULTURAL PROGRAMMES etc.)	6.00	87,000.00	6.00	
2.	(a) IDENTIFICATION & TRAINING OF CULTURAL TROUPES/LOCAL ARTISTS	1.00	-	-	
	(b) UTILIZATION OF CULTURAL TROUPES THROUGH WORKSHOPS,PROD. CAMPS	-		-	
3.	PRODUCTION OF AV MATERIALS FOR MOTIVATION EDUCATION,TRAINING (a) VIDEO FILMS	0.00	-	0.25	
	(b) AUDIO TAPES	1.00	-	0.10	

1	2	3	4	5	6
3.	(c) POSTERS, STICKERS, BANNERS	0.00	-	0.10	
	(d) EXHIBITION KITS	0.00	-	0.10	
4.	ESTABLISHING COMMUNICATION CENTRE (PURCHASE OF BOOKS PERIODICALS, AUDIO TAPES, VEDIO FILMS etc.)	2.00	1,00,000.00	1.00	
5.	PUBLICATIONS HOUSE JOURNALS/NEWS LETTER PAMPHLETS BOOKLETS etc.	2.00	25,000.00	1.50	
6.	NETWORKING WITH OTHER COMMUNICATION MEDIA AGENCIES (a) PRESS (FOR UPE)	0.50	20,000.00	0.25	
	(b) AIR SERIALS ON UPE FOCUS	0.00	-	-	
	(c) DDK GIRLS/DIS.ADV.SEC.	0.00	-	-	
	(d) SONG & DRAMA DIVISION	0.00	-	-	
	(e OTHERS	0.00	-	-	
7.	MOBILISING MEDIA SUPPORT AT DIST.	0.00	-	-	
8.	ESTABLISHMENT OF J.S.N.	0.00	-	-	
9.	DOCUMENTATION OF IMPORTANT BEP ACTIVITIES (VIDEO/AUDIO/PRINT)	2.00	10,000.00	0.25	
10.	MONITORING & EVALUATION OF COMMINICATION ACTIVITIES	0.00	-	-	
11.	NGOs NETWORK & TRG. IEC SUPPORT	0.00	-	-	
12.	PREPARATION OF SOFTWARE FOR MOBILE VIDEO VAN	0.00	-	-	
	Sub Total :-	**14.50**	2,42,000.00	9.55	
H.	**SUPPORT TO NGOs & INDIVIDUAS**				
1.	FELLOWSHIPS ON SUBJECTS RELATED TO BEP OBJECTIVES	0.00	-	-	
2.	SUPPORT TO NGOs FOR INNOVATIVE MICRO PROJECTS	0.00	-	-	
3.	WORKSHOPS WITH NGOs TO PROMOTE NET WORK OF VOLUNTARY	0.00	-	-	
4.	MONITORING AND EVALUATION OF PROGRAMME COMPONENTS (INTERNAL)	1.00	-	1.00	

1	2	3	4	5	6
5.	MONITORING AND EVALUATION OF PROGRAMME COMPONENTS(EXTERNAL)	-	-	-	
6.	ASSISTANCE TO DRUs FOR SP.PROJS,FOR DRUS MEETINGS etc.	-	-	-	
	Sub Total :-	1.00	-	1.00	
I.	CONSULTANCIES AND STUDIES ***************************	-	-	-	
J.	STRENGTHENING OF STATE LEVEL INSTITUTIONS & ASSISTANCE TO DIRECTORATES/DEPT. ***				
	(i) DEPTARTMENT	-	-	-	
	(ii) PRIMARY EDN. DIRECTORATE	-	-	-	
	(iii) AE DIRECTORATE		-	-	
	(iv) SCERT	-	-	-	
	(v) SRC-[illegible]	-	-	-	
	(vi) [illegible]	-	-	-	
	Sub Total:-	-	-	-	
K.	NON RECURRING EXPENDITURE FOR PROGRAMME ACTIVITIES ***				
1.	SOFTWARE DEVELOPMENT & PROCUREMENT FOR PROGRAMME MONITORING & OFFICE MANAGEMENT	0.00	-	-	
2.	BASIC REQUIREMENTS FOR OFFICE FURNITURE & FIXTURES	2.00	93,309.72	1.00	
3.	BASIC REQUIREMENTS FOR OFFICE ~~EQUIPMENTS~~ (TYPEWRITERS etc.)	3.00	50,000.00	1.00	
4.	EXPENDITURE ON A/C OF SUPP. ~~ITEMS~~ FROM UNICEF OTHER THAN ABOVE	17.00	17,00,000.00		
	Sub Total :-	22.00	18,43,309.72	2.00	
	G R A N D T O T A L :-	732.19	5,01,27,617.82	732.43	

भविष्य की योजना

(1995-96 से 1996-97)

परियोजना के अन्तिम दो वर्षों का समय परियम सम्पारण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ष होगा । सर्व प्रथम 1994-95 तक के कार्यकलापों की सांगोपांग समीक्षा की जाएगी और उसके आधार पर सामर्थ्य एवं कमजोरियों की पहचान की जाएगी । सामर्थ्य हमें प्रोत्साहित करेंगे और कमजोरियां दिशा परिवर्तन के लिए प्रेरित करेगी । समीक्षा के विषय निम्नांकित होंगे :-

(1) प्राथमिक औपचारिक शिक्षा ।

(2) प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा ।

(3) महिला समाख्या की गतिविधियां ।

(4) संस्कृति, संचार एवं सतत शिक्षा ।

1- प्राथमिक औपचारिक शिक्षा :- इस क्षेत्र में हमारी प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित है :-

(i) न्यूनतम अधिगम स्तर की संप्राप्ति ,

(ii) विद्यालयों के बाह्य एवं आन्तरिक आकर्षण में अभिवृद्धि,

(iii) शिक्षकों के शैक्षिक कुशलता का विकास,

(iv) विद्यालयों में शिक्षक-शिष्य अनुपात एवं नामांकन की स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार ।

न्यूनतम अधिगम स्तर की संप्राप्ति हेतु मार्च 1997 तक की योजना अलग से परिशिष्ट-1 पर संलग्न है जिसमें सावधिक परीक्षा की व्यवस्था है । चयनित प्रखण्डों के चयनित 100 विद्यालयों में मूल्यांकन और दक्षता आधारित ईकाई मूल्यांकन के अतिरिक्त उक्त सावधिक परीक्षाएं हो रही हैं । इन परीक्षाओं से प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण

करके अपेक्षित फॉलो-अप की व्यवस्था है । यह कार्यक्रम जिले के सभी प्राथमिक विद्यालयों में सुनिश्चित किया जायेगा । न्यूनतम अधिगम स्तर से सम्बद्ध सभी पहलुओं का प्रशिक्षण शिक्षकों को "डायट" में हो रहा है । 1997 तक सभी शिक्षक को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है । उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हुआ है और नवाचारें तथा प्रभावी शिक्षण विधियाँ -छात्र केन्द्रित तथा खेल-खेल में शिक्षण अपनायी जा रही है । निरन्तर "फिड-बैक" एवं "फॉलो-अप" की प्रक्रियाएँ जारी है । शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु "डायट" की विशेषज्ञ सेवाएँ उपलब्ध रहेगी । "डायट" के सुदृढ़ीकरण के लिए बहुत कुछ करना है ।

बाह्य आकर्षण के लिए सभी विद्यालय को आवश्यकता के अनुकूल व्यवहार योग्य भवन, उपस्कर, शौचालय, पेयजल की व्यवस्था बागवानी, क्रीड़ा स्थल एवं सामग्रियाँ, पुस्तकालय, नवाचार सामग्रियाँ और प्राथमिक उपचार पेटिकाएँ उपलब्ध करायी जायेगी । आन्तरिक आकर्षण अभिवृद्धि कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षकों को कुशल अध्यापन के लिए प्रशिक्षित एवं प्रोत्साहित किया जाएगा । विद्यालयों में शिशुओं को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जायेंगे । उन्हें पठन-पाठन सामग्रियों के अतिरिक्त अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध करायी जायेगी । वंचित वर्ग के बालक -बालिकाओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा ।

शिक्षा विभाग के माध्यम से शिक्षक शिशु अनुपात (1:50) को ठीक किया जाएगा और होशियार की तरह बाल पंजी एवं सम्पर्क पंजी को अद्यतन करने तथा शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित की जाएगी । नामांकन अभियान में शिथिलता को तिलांजली देकर सबको विद्यालय में लाया जाएगा । सबके लिए शिक्षा और उनके सर्वांगीण विकास की व्यवस्था की जाएगी ।

2• प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा :- कहना नहीं होगा कि औपचारिक शिक्षा का विकल्प अनौपचारिक शिक्षा कभी नहीं हो सकता । यद्यपि सबको शिक्षा मुहैय्या कराने का एकमात्र साधन औपचारिक शालाएँ हैं लेकिन लाचारी में और वर्तमान की परिस्थितियों में अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम हमारी बाध्यता है । यह अस्थायी ईलाज है ।

प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम वंचित वर्ग के बालक/बालिकाओं शिक्षा ग्रहण के लिए उन्मुखीकरण का एक साधन मानकर हम चल रहे हैं । जैसे-जैसे बच्चों की अभिरुचि जागृत होगी वैसे-वैसे उन्हें प्रोत्साहित करके विद्यालयों में नामांकन कराने व्यवस्था की जाएगी और अन्ततोगत्वा अनौपचारिक शिक्षा से मुक्ति के प्रयास किये जायेंगे ।

3• महिला समाख्या की गतिविधियाँ :- जिले में महिलाओं की साक्षरता प्रतिशत (12%) चौंकानेवाली है जबकि उनकी संख्या पुरुषों के लगभग बराबर है । ऐसे में उनके साथ जो कुछ अत्याचार हो रहे हैं । वे स्वभाविक हैं । उनमें निहित शक्ति का लाभ समाज को नहीं मिल रहा है । जड़ता इतनी गहरी है कि बहुत मुश्किल से उन्हें मुक्त कराया जा सकेगा । हम निराश नहीं हैं । प्रयोग के लिए अभी दो प्रखण्डों में कार्य चल रहा है । इस वर्ष एक और प्रखंड लिया जाएगा । शनै: शनै: कार्यक्षेत्र बढ़ाये जायेंगे । आरंभिक क्रिया-कलापों के परिणाम उत्साहवर्द्धक हैं । महिलाओं में जागृति आयी है और वे शिक्षा ग्रहण करने से लेकर सामाजिक जागृति, आपसी सहयोग, अपने अधिकार एवं कर्तव्यों को पहले से बेहतर ढंग से समझ रही हैं । समाज के मुख्य धारा से उन्हें जोड़ने के प्रयास विफल नहीं हुए हैं । आर्थिक एवं सामाजिक सुधार के कार्यक्रम मनोवांछित गति से चल रहे हैं । और भविष्य में भी चलते रहेंगे । महिलाओं की दु:स्थिति का इतिहास सौ-दो सौ सालों का नहीं है । इसलिए दो चार वर्षों में उसका उन्मूलन भी

संभव नहीं है । प्रश्न है इच्छा शक्ति जगाने का । छोटे स्तर पर ही लेकिन हम अपने प्रयास में सफल हो रहे हैं और भविष्य के लिए आशान्वित हैं ।

9• संस्कृति, संचार एवं सतत शिक्षा :- किसी भी क्षेत्र कि संस्कृति उसके विशिष्ट पहचान को कायम रखने का साधन है । संस्कृति और शिक्षा का गहरा संबंध है ॥ अतः क्षेत्रीय तथा जिले की संस्कृति को कोने-कोने तक पहुँचाने तथा प्राप्त शिक्षा को कायम रखने हेतु सांस्कृतिक सम्मेलन, गोष्ठियाँ और आयोजनों की व्यवस्था की जा रही है । जिले के सभी पंचायतों में सार्वजनिक पुस्तकालय जहाँ पुस्तकों के स्वस्थ मनोरंजन तथा सतत शिक्षा के साधनों की व्यवस्था होगी । जगह-जगह सांस्कृतिक टोलियों का गठन किया जाएगा और आवश्यक साज-सज्जा उपलब्ध कराये जायेंगे । भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में विकास के उपाय किए जायेंगे । स्थानीय कलकारों लेखकों, शिल्पियों आदि को प्रोत्साहित किया जाएगा । लोक-भाषा लोक-गीत एवं लोक संस्कृति को सुरक्षित एवं विकसित करने के उपाय किए जायेंगे ।

इस प्रकार अन्तिम दो वर्ष हमारे गहन कार्यक्रम की अवधि होगी । पूर्ण साक्षरता के संकल्प को साकार किया जाएगा । और ऐसे उपाय किए जायेंगे जो आनेवालों को प्रेरित करता रहेगा ।

NIEPA DC

D08265

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No .... D - 8265
Date 05-10-94